Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2015 - 17

वीर निर्वाण संवत २५४३
माह- फरवरी २०१८
अङ्क -११ (१८०)
वर्ष -१२ (१७)

विरागवाणी

मासिक

प.पू. गणा. श्री विरागसागर जी महाराज का राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण वर्ष २०१७-१८

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.org

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

पल्लव

❖ **सम्पादकीय :**
- प्रभू वाणी से जीनव संवार : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणी आर्यि. विचक्षणाश्री माता ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- अपाय विचय धर्मध्यान : प.पू.श्री विरागसागर महामुनिराज ६
- संस्कार तथा मित्रता... : प.पू.श्री विरागसागरजी १०
- ईर्ष्या नहीं, पुण्य करो : आ.श्रीविशुद्धसागर १४
- आचार्य श्री विरागसागर चालीसा : श्रमणा. विशदसागर जी महामुनिराज १५
- सज्जनों की सज्जनता : आर्यि. विदूषीश्री माताजी १६
- गुरु-शिक्षा ... : आर्यिका वियुक्तश्री माता जी १६
- आत्मचिन्तन : आर्यि. विसोहीश्री माता जी १७
- निर्वाण का अर्थ है अव्याबध सुख की उपलब्धि : श्रमणा. विमर्शसागर जी १८
- धर्म से धन व सुख दोनों प्राप्त होते है : आ. विनम्रसागर जी १९
- रेशम में निहित हिंसा २०
- भगवान ऋषभदेव और... : डॉ. सोहनलाल जी २१
- शंका-समाधान : २३
- पंथवाद समाज तोड़ने... श्रमण मुनि विशेषसागर २४
- विनयांञ्जली २५
- शंका-समाधान : प.पू. श्री विरागसागर जी ३७
- विराग सेतु ... : डॉ. उदयचन्द्र जैन ४२

❖ **कविताएँ**
- आगम ज्ञान : आ.श्री विशुद्धसागर जी १९

❖ **स्वास्थ्य जगत :**
- केला एक गुणकारी फल :आर्यि.विवक्षाश्री माता ४०

❖ **समाचार** ४६

❖ **विराग वर्ग पहेली** ५०

संपादकीय

प्रभू वाणी से जीवन संवारे

इंजी. आनन्द कुमार जैन

अभी श्रावक, जन मन में एक आस्था लिये हुये श्रवणवेलगोल पहुँच रहे हैं। भगवान का अभिषेक करने। सबका यही प्रयास है कि भगवान की वाणी को अपने जीवन में उतारें। यह एक सार्थक प्रयास है। यदि मनुष्यों से पूंछा जाये कि तुम अपनी जिंदगी का स्रजन करना चाहते हो या नहीं तो हर आदमी के मुख से यही आवाज निकलेगी कि हाँ, लेकिन जब उसके जीवन की ओर नजर डालते हैं तो स्रजन की जगह, पतन दिखाई देता है। हम यदि एक जहाज ऊपर की ओर उड़ाते हैं तो हमें कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है, मन को एकदम एकाग्र करना पड़ता है और अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग करना पड़ता है लेकिन यदि उस जहाज को नीचे गिराना है तो शक्ति की कोई जरूरत नहीं, मन को एकाग्र करने की कोई जरूरत नहीं है, केवल निश्क्रिय हो जाना है लेकिन यह बिल्कुल सत्य है कि निष्क्रयता से जिंदगी खतरे में आ जाती है। जीवन में प्रभू वाणी पर आचरण करें। यदि हम कुछ भी त्याग करने को राजी न हो तो हमारा ज्ञान रंच मात्र भी विकसित नहीं होता जबकि हम महाज्ञानी हो सकते हैं। यदि हम कुछ त्याग करके जियें तो हमें कुछ ज्ञान होता है, ध्यान रहे त्याग ज्ञान के ऊपर की भूमिका है। क्योंकि जिनसे हम तृप्त हो जाते हैं उन्हीं को त्याग सकते हैं और तृप्त तभी होते हैं जब हमें वस्तु का वेदन व अनुभव हो जाता है। यदि हम बहुत कुछ त्याग करें और संत बनकर अध्यात्म की साधना करें तो हम ज्ञान को विकसित करते हुये बहुत कुछ पा लेते हैं। लेकिन जब हम कुछ त्याग करके जीवन जीते हैं तो हमें सर्वज्ञान यानि केवलज्ञान प्राप्त हो सकता है। वात्सल्य अंग सयग्दर्शन का अंग माना जाता है, वह किसी मनुष्य को केन्द्र रखकर नहीं कहा गया। वत्स यानी बछड़ा और बछड़े के साथ गाय का जो सहज रूप से संबंध होता है, उससे उसका वात्सल्य का निर्माण हुआ है। मतलब वात्सल्य का निर्माण करने वाली जननी गाय है। सम्यग्दर्शन के एक अंग को ही समाप्त किया जा रहा है फिर बाद में किसके साथ किसका क्या संबंध है वात्सल्य का अर्थ ही गायब हो जाये। समन्तभद्र स्वामी जी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में जितनी भी उपमा की है, वह पशुओं की उपमा दी है। अभयदान में सुअर की, भक्ति में मेढ़क की मनुष्य के लिये कुत्ता भी अच्छा कार्य करता है। इसलिये कहा गया है कि पशुओं में नेचुरल रूप से स्वाभाविक परिणित रहती है।

परम पूज्य १०८ गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने बताया कि एक टाईम में ६ घड़ी भगवान का उपदेश होता है। एक घड़ी चौबीस मिनिट की होती है और जब हम ६ घड़ी की गिनती गिनेगे तो लगभग सबा दो घण्टे हो जाते हैं। प्रत्येक बेला में तीर्थकर भगवान की सवा दो घंटे दिव्य देशना होती है। लेकिन आश्चर्य है कि ६५ दिन अर्थात् २ माह और पांच दिन व्यतीत हो गये। भगवान की दिव्य देशना नहीं खिरी। प्रतिदिन सभा लगती और धर्म श्रद्धालुगण भगवान के समवशरण में पहुँचते बारह सभाओं में अनेकों देव देवियाँ मनुष्य और तिर्यंच मुनि, आर्यिका, श्रावक-श्राविका विराजमान होते हैं। यहाँ तक ही नहीं पशु और पक्षी भी २२ सभाओं में विराजमान होते हैं ऐसा भगवान तीर्थंकर का बड़ा महत्व है बड़ी महिमा है। बन्धुओ अगर एक दिन प्रवचन न हो तो दूसरे दिन की उपस्थिति में अंतर आ जाता है और यदि दूसरे दिन भी न हो तो संभवत: आधी सभा रह जाती है। तीसरे दिन भी न हो तो फिर लोग दूसरों से पूछना प्रारंभ कर देते हैं। आज होगा कि नहीं।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार १५.८.१९८२)

।। ऊँ ह्रीं णमो लोएं सव्वसाहूणं।।

हे आत्मन्! संसारी भव्यप्राणी संसारार्णव से पार होने के लिये वीतराग प्रणीत षट् आवश्यक कर्म अवश्य पालने चाहिये। जो षट् आवश्यक साक्षात् पूर्ण ज्ञान में साधना रूप हैं। अशुभ आश्रव के नाशक एवं शुभाभव के साथ-साथ शुभभाव को प्राप्त कराने में सहायक हैं। जो जामन मरण का नाशकर अपराजितेश्वर सिद्धपरमेश्वर आनन्दधन निजानन्द परमानन्द सहजानन्द ज्ञानानन्द परमात्मा पद की प्राप्त जरूर होती है। और परमोत्कृष्ट संसारार्णव को नाशकर अजर अमर पद सिद्धि करते हैं।

अत: हे विमलात्मन्! तुम भी सर्वज्ञ हितोपदेशी परमब्रह्म बनने का सर्व कल्याण कारक षट्कर्म जो हैं इच्छाओं को रोककर परमशांत ज्ञानानन्द परमानन्द बनने के कारण है और परमशांत ज्ञानानन्द स्वरूप के लिये स्वाध्याय ध्यान ही एक कारण है जो साक्षात् ध्यान ध्यन द्वारा प्रगट होती है भव्यों के लिये जामन मरण के नाश करने के लिये तथा शाश्वत सुख की प्राप्ति में कारण है। प्रभु की भक्ति से महा संतोष की पूर्ण सिद्धि होती है इसे अपनाओ।

जिनोपदेश

संकलन- श्रमणी आर्यिका विचक्षणाश्री माताजी

इन्द्राणामपि सामर्थ्यं मीदृशं नाथ नेक्ष्यते।
यादृक तपः समृद्धानां मुनिनामल्पयत्नजम्।। १६३।। पद्मपुराण भा.१ सर्ग-९

तप से समृद्ध मुनियों की थोड़े ही प्रयत्न से उत्पन्न जैसी सामर्थ्य देखी जाती है वैसी सामर्थ्य इन्द्रों की भी नहीं देखी जाती है।

जिनेन्द्र वंदना तुल्यं कल्याणं नैव विद्यते।। २०२।। प.पु. भा-१, स. ९

जिनेन्द्र वंदना के समान और दूसरी वस्तु कल्याणकारी नहीं है।

ददाति परिनिर्वाण सुखं या समुपासिता।
जिननत्या तथा तुल्यं न भूतं न भविष्यति।। २०३।। प.पु. भा-१ स.९

जो जिन भक्ति अच्छी तरह उपासना करने पर निर्वाण सुख प्रदान करती है उस जिन भक्ति के समान दूसरी वस्तु न तो हुई है और न होगी।

असाध्यं जिनभक्तेर्यत्साधु तन्नैव विद्यते।। २०५।। प.पु. भा-१ स.९

जो वस्तु जिनभक्ति से असाध्य हो, वह है ही नहीं अर्थात् हर वस्तु जिन भक्ति से प्राप्त होती है।

त्वादृशा मादृशा ये च, वासवादौश्च सनिभाः।
संवर्यन्ते सुखाधारा, सर्वे ते जिनभक्तितः ।। २०६।। प.पु. भा-१ स.९

तुम्हारे समान और हमारे समान और इन्द्र आदि के समान जो भी सुख के आधार है वह सब जिन भक्ति से ही हुए है।

आस्तां तावदिदं स्वल्पं व्याद्यति भवजं सुखं।
मोक्षजं लभ्यते भक्त्या, जिनानामुत्तमं सुखं ।। २०७।। प.पु. भा-१ स.९

यह संसार का सुख तो अत्यंत अल्प तथा बाधा सहित है तथा इसे रहने दो जिन भक्ति से तो मोक्ष का भी उत्तम सुख प्राप्त हो जाता है।

अपाय विचय धर्मध्यान

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज

ऊँ नमः सिद्धेभ्य-३, णमो अरहंताणं .... चत्तारि मंगलं .....

आज हमारे ध्यान करने के पवित्र विचार हुए। निर्मल मन ध्यान की ओर आकर्षित कर रहा है कि मैं अवश्य इस सुप्रभात बेला में ध्यान करूँगा। प्रातः काल, मध्याह्न और संध्या काल की जो संधि बेला होती है वह ध्यान के लिए प्रशस्त मानी गई है। इस बेला में तीर्थंकर भगवान की छह-छह घड़ी अर्थात् २¼ घंटे दिव्य देशना खिरती है। दिव्य उपदेश होता है यही कारण है यह काल ध्यान के लिए प्रशस्त माना गया है। और अब हम ध्यान के लिए पवित्र भावना बना करके आगे बढ़े और बढ़ते-बढ़ते चले जा रहे है। दूर, शोरगुल से दूर, जगत की चर्चाओं से दूर संसार के विकल्पों से दूर और हम पहुंचे। किसी ऐसे शांत एकान्त में सरोवर के निकट। जहाँ पर निर्मल पानी भरा हुआ है। सरोवर में सुन्दर-सुन्दर कमल के फूल खिल रहे हैं। चारों तरफ से उस तालाब के तट बने हुए हैं। और ऐसा लग रहा हो मानो पाबापुर जी का वह वीर निर्वाण स्थल ही हो। विशाल तालाब कमलों से भरा हुआ है। हरे-हरे पत्ते जल में बिछे हुए है। गुलाबी कमल खिल रहे हैं। चारों तरफ तट पर सुन्दर सीढ़ियाँ लगी हुई है और उनके बाह्य मार्ग पर सुन्दर बड़े-बड़े वृक्ष लगे हुए हैं। वृक्षों के नीचे पत्थर की बड़ी बड़ी शिलाएँ भी रखी हुई है।

हम देख रहे है पावापुर जी का वह दृश्य वह मंदिर जहाँ से महावीर भगवान का मोक्ष हुआ था। भगवान के दर्शन के बाद हम एक वृक्ष के नीचे पत्थर की शिला पर बैठने को तैयार हुए हैं। दोनों हाथ पैर और मुख शुद्ध जल से धो लिये हैं। पाषाण पर आसीन हो दिग. वंदना करने के बाद आसन्न लगा कर बैठ गया हूँ। निराकुलता के साथ, प्रसन्नता के साथ, आनन्द के साथ हमने आवश्यक पाठ कर लिये है और पुनः धर्म ध्यान के दूसरे भेद जिसे अपाय विचय कहा है आज इच्छा है इस अपाय विचय को भी समझूँ/जानूँ और इसी ध्यान में तल्लीन रहूँ। अपाय विचय में साधक अपने परिणामों की पवित्र करने के लिए, निर्मल बनाने के लिए आशय लेता है और मोह, मिथ्यात्व, राग-द्वेष, काम, क्रोध, अभिमान, छल, लोभ इत्यादि विषयों में वह चिन्तन करता है सोचता है कि हे प्रभु हे भगवन् मेरी यह आत्मा अनादि काल से मिथ्यात्व के घनघोर अन्धेरे में रही। मुझे उस समय कुछ भी ज्ञान नहीं था- धर्म का, मोक्ष का, मोक्ष मार्ग का। ऐसे अनन्त भव व्यतीत हो गये। कोई बताने वाला भी नहीं मिला, कोई समझाने वाला भी नहीं मिला, कहीं ऐसे प्रसंग भी नहीं मिले कि मैं सन्मार्ग के विषय में, मोक्ष मार्ग के विषय में आत्मा के हित के विषय में कुछ सोच सकूँ, कुछ समझ सकूँ, मिथ्यात्व में तो अपने आपको ही व्यक्ति भूल जाता है। उसे अपने स्वरूप का भी ज्ञान नहीं होता। ऐसा समय अनेकोनेक भव में व्यतीत हुआ। हे प्रभु! जब कभी अध्यात्व हटा तो अज्ञान छा गया। अच्छा परिवार मिला, देव शास्त्र गुरु मिले, सुसंस्कार, कुटुम्ब मिला लेकिन फिर भी अशानता के कारण हमने उसका सदुपयोग नहीं किया और उनको पाना न पाना मेरा बराबर ही रहा। देव शास्त्र गुरु को पाकर भी हम उनके पद चिन्हों पर नहीं चले। हमने उनके उपदेश को नहीं सुना। उनसे कोई ज्ञान का अर्जन नहीं किया है तो जीवन ऐसा का ऐसा ही शून्य बना रहा और अज्ञानता का एक ऐसा असर, ऐसी दशा हमारी रही कि जो मन में आया वही सब कुछ करता रहा। धर्म से बिल्कुल विपरीत कदम रखते रहे। अभक्ष्य ही भक्षण करते रहे, अकर्तव्य को ही कर्तव्य मानते रहे। अनुचित को ही उचित मानते रहे, अकरणीय कार्यो को ही करते रहे। किसी भी अच्छी दिशा में हमारे विचार ही नहीं हुए। कोई ऐसा पुण्य भी नहीं जगा कि कोई मुझे इस दिशा में प्रेरित करता। सच्ची राह दिखाता। सुझाव देता। मार्ग दर्शन देता, ऐसा कभी अवसर ही नहीं मिले। यदाकदा अवसर भी मिले तो फिर हमारे भाव ही नहीं बने। परिणाम ही नहीं बने कि मैं अच्छी दिशा में आ जाऊँ। हे भगवन्! ऐसी मेरी हालत रही है कि मैं अच्दे मार्ग पर नहीं आ पाया। निरन्तर पंचेन्द्रियों के विषयों में ही अनुरक्त रहा। उनमें ही आनन्द माना। उसमें ही शान्ति मानी। दिन रात उसमें ही तल्लीन रहा। कभी किसी से लिए विवाद हुआ तब बैर विद्वेष, जुगुप्ता के भाव हुए। कटुता के भाव हुए किन्तु पहले घृणा मैंने उनसे की। ग्लानि की, शत्रुता के कारण उनका अनादर तिरस्कार मैंने किया और तो क्या कितनी बार बदला लेने के भाव भी हुए और तो क्या हमने

दूसरे का हित भी किया। आज सामायिक की इस पवित्र बेला में मन इन सारी बातों को देख रहा है और मुझे लग रहा है कि जो कुछ मैंने किया है, वह अच्छा नहीं किया। मुझे तो इस दुर्लभ जीवन को पाकर के अच्छा काम करना था हितकारी काम करना था यह मनुष्य जीवन हर व्यक्ति को प्राप्त नहीं होता। हर प्राणी को प्राप्त नहीं हो पाता। देव दुर्लभ यह मनुष्य जीवन माना जाता है लेकिन अज्ञानी मोही प्राणी केवल यूँ ही विप्रय-कषायों में इसे बराबर कर देता है। भगवान तीर्थकरों ने ही ऐसे जीवन को पाकर आत्म साधना में लगा दिया और जगत के लिए संदेश दिया। यह मनुष्य जीवन दुर्लभ है तो नर से नारायण बनने का प्रयास है। यह तो आत्मा से परमात्मा बनाने का एक साधन है।

जो प्राणी इसको प्राप्त करके भी यदि आत्मा का भला न कर सका तो फिर उसको संसार से पार होने का दुखों से बचने का कोई-कोई उपाय नहीं है। इत्यादि विचार के माध्यम से संसार, शरीर और भोगों का चिंतन किया जाता है। उसके अन्तिम परिणामों के विषय में सोचा जाता है। उससे ग्लानि भाव उत्पन्न होते हैं संसार भटकन से उदासता आती है और ये पवित्र विचार उत्पन्न होते हैं। मैंने क्यों इतनी उम्र को ऐसे ही गंवा दिया, कैसे मैंने अपना सारा समय व्यतीत किया। ऐसा ही सारा समय व्यतीत होता गया। ये दुर्भाग्य ही तो हैं। यह अज्ञानता ही तो रही लेकिन अब मुझे बोध मिला है। मैं बचे हुए समय की अच्छे कार्यों में व्यतित करूँगा। अच्छे संस्कारों को धारूँगा, अच्छे मार्ग पर चलूँगा, अच्छी राह पर चलूँगा इत्यादि विचार अपाय विचय धर्म ध्यान के रूप में किये जाते हैं। अपाय विचय धर्म ध्यान में इन सारे विचारों का चिन्तन किया जाता है अगर अच्छे हैं और बुरे है तो बुरे का चिंतन किया जाता है और उसका परिणाम कितना दुखदायी होता है उसे भी सोचा जाता है। हम बुरे मार्ग से, बुरे रास्ते से किस तरह से बच सकते हें उन उपायों को भी खोजा जाता है। हम ही उस सही रास्ते को खोज सकते हैं। उन उपायों को, तरीकों को हम अपना सकते हैं जिससे हमारी आत्मा का कल्याण होता है। दुखों से आत्मा बचती है। चतुर्गति के श्रमण से बचती है। अशुभ कर्म के आस्रव बंध से बचती है और अच्छे मार्ग पर चलते हुए सद्गति को, परम गति को प्राप्त करती है। साधक ऐसे विचारों में तो कई घंटे व्यतीत करता है। यह उसका अपाय विचय नाम का धर्म ध्यान होता है।

तीसरा भेद है 'विपाक विचय' विपाक विचय कर्मों के उदय आने पर जो शुभ अथवा अशुभ फल प्राप्त होता है उसे विपाक कहते हैं। कर्मों के उदय में सुख या दुख जो भी प्राप्त होता है उसे विपाक कहा जाता है। अच्छे या बुरे दिन आते हैं वे सब कर्म के विपाक ही कहे जाते हैं। कर्म का फल ही कह जाते है। साधक इन बातों पर विचार करता है कि अच्छे दिन आये हैं तो भी हमारे पहले के किये अच्छे कर्मो का ही फल है। और बुरे दिन हैं तो वह भी हमारे द्वारा किये हुए अशुभ कर्मों का, पाप कर्मों का फल है। यदि हमने अच्छे कर्म किये ही न किया हो कभी अच्छी बात ही न की हो न सुनी हो तो उनका अच्छा फल कैसे मिल सकता है। बबूल के बीज बोते रहे और आम का फल चाहे तो ये तीन काल में भी संभव नहीं है। यह हम स्वीकार करते हैं कि हम अपने जीवन में अच्छे काम कम और बुरे काम अधिक किये है। और उन्हीं का परिणाम दुख रूप से भोगना पड़ता है। आज उन अशुभ कर्मों के विषय में सोच रहे हैं कि जो कुछ भी (उदय) दुख आ रहा है हे भगवन्! हमारे ही किये हुए कर्म का फल है। हम व्यर्थ में ही दूसरों पर अंगुली उठाते हैं। दूसरों को दोष देते हैं। दूसरों को बुरा कहते है कि इन्होंने हमारा बुरा किया है, ये अच्छी बात नहीं है, ये हमारे शत्रु हैं। सत्य यह है अगर हमारा अशुभ कर्म का उदय नहीं तो हमारा बैरी कौन। बैर भाव भी अशुभ कर्म का परिणाम है। बैरी व्यक्ति भी अपने ही अशुभ कर्म के उदय से प्राप्त होते है। शत्रु भी हमारे ही अशुभ कर्म के उदय से प्राप्त होते हैं। अपने ही अशुभ कर्म से वे दुख देते है। कष्ट देते हैं, अपने विरुद्ध हो जाते हैं। विपाक विचय धर्म ध्यान में ये सब विचारा जाता है कि हम दूसरों को क्या दोष दे। अपने ही कर्मों का दोष है। यदि गरीबी है तो भी अपने ही कर्म का फल है। कभी किसी का धन छीना होगा, कभी किसी की रोजी रोटी में लात मारी होगी, कभी किसी की शांति को भंग किया होगा, कष्ट दिया होगा तो उसको परिणाम उदय में आज आ रहा है और हमें भोगना पड़ रहा है। जो भी हमने जब जैसे बीज बोए ये आखिर में उन्हीं का फल प्राप्त करना ही होगा। तो फिर क्यों संबलेशता करें। क्यों परिणामों को कलुषित करें। आज जो बीमारी है वह भी पुराने जन्म के कर्म का ही फल

है। हमने कभी औषधि दान दिया ही नहीं। दुखी जीवों को दुखों को कभी दूर किया ही नहीं है। हमने कभी किसी के घाव पर मलहम पट्टी की ही नहीं तो हम निरोगी कैसे होंगे। हमने तो अज्ञानता वश दूसरों के जले हुए में नमक ही छिड़का है और उनको दुख ही दिया है। यही परिणाम आज उदय में आ रहा है। कि रोग बीमारी, कष्ट, तकलीफ प्राप्त हो रही है। कभी किसी से ईर्ष्या की ओर ईर्ष्यावशात विद्वेषता से निर्दोष प्राणियों के लिए झूठे दोष लगा दिये। ऐसे कोई चर्चा करते हुए दिखा तो बड़ी रूचि रखी उसको सुनने में। कभी-कभी साथ सहयोग भी दिया और घनघोर कर्म बाँधते ही बाँधते रहे। साधर्मी लोगों पर भी हम गलत भावना बनाये रखे। यही कारण है कि कर्म को केवल हमने बांधा ही है। कभी हमारे ऐसे विचार उत्पन्न नहीं हुए कि हम दूसरों को प्रेम से समझाएँ, हम दूसरों को सही राह पर चलने के लिए प्रेरणा दें। अच्छे कर्तव्यों का पालन करने हेतु प्रोत्साहन दें। अच्छा काम तो किया न कभी ऐसी प्रेरणा दी। अपितु दूसरों के गलत कार्यों में ही हमने सहभागिता दी। साथ और सहयोग दिया। प्रोत्साहन दिया। उनके उन कार्यों में मदद की। प्रसन्नता प्रगट की। यही तो अज्ञानता थी। यही तो मोह था। संभवत: यही बातें मिथ्यात्व परक थीं। हे भगवान! आज मुझे यह ज्ञात हुआ है कि मैंने पूर्व जन्म में क्या-क्या बुरे कार्य किये। जो आज उदय में आ रहे हैं और अपना फल दे रहे हैं। लेकिन आज जो हम कर रहे हैं विश्वास है उसका फल भी भविष्य में वैसा ही प्राप्त होगा। यदि हम आज भी बुरा करें, गलत राह पर चलें, गलत कार्य करें, तोआज का ये सब गलत बीज ही बोये कहें जायेंगे। इसका भविष्य में उदय आऐगा। फल देगा। हमें अपना भविष्य किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं होती। भगवान महावीर स्वामी ने तो एक ऐसा बाँध दे दिया कि तुम्हारा भविष्य तुम ही देखो। तुम्हें अपना भविष्य दिख सकता है। सामायिक की इस पवित्र बेला में हर साधक अपना भविष्य भी देखता है अपना वर्तमान भी देखता और अपना भूत भी देखता है। अगर वर्तमान बुरा है तो नियम से भविष्य भी बुरा होगा। यदि वर्तमान संभला है तो भविष्य भी संभला हुआ होगा। उत्तम फल को प्रदान करने वाला होगा। साधक अपनी बुराईयों का पश्चाताप करता है, आत्म निन्दा करता है, खेद और पश्चाताप करता है और उन्हें न करने के विषय में प्रतिज्ञा करता है। गुरुओं के पास जाकर अपने एक -एक दोष निकाल निकाल कर प्रगट करता है। आलोचना करके हृदय को शुद्ध करता है। प्रायश्चित लेकर अपने भविष्य को उज्जवल बनाता है। अच्छे मार्ग पर चलने का संकल्प लेता है और अच्छे रास्ते पर चलता है। भगवान के दर्शन, अभिषेक, पूजन, स्वाध्याय, जाप, गुरुओं की सेना, उनके लिये दिया गया आहार और उनके उपदेश का श्रवण और उनके अनुसार अपने कदम रखना, उनके अनुसार चलना यही मानवता का सच्चा फल है। ऐसे प्राणियों का भविष्य नियम से उज्जवल होता है। जो पवित्र मन से सब कार्य करते हैं, व्रत-नियम संयम का पालन करते हैं, दिन दुखी प्राणियों पर करूणाभाव रखते हैं, उनके दुख दूर करने का हर प्रयत्न करते हैं, असहायों को सहायता देते हैं। किसी के दुखों को दूर न कर सके तो कम से कम सहानुभूति देते हैं। ऐसे प्राणी अपने जीवन को उज्जवल बना लेते हैं। उनका भविष्य उज्जवल/निर्मल होता है। इसी का नाम है विपाक विचय धर्म ध्यान। शुभाशुभ फलों का विचार करना विपाक विचय धर्म ध्यान है।

संस्थान विचय धर्म ध्यान यह चौथा धर्म ध्यान है। जिसमें साधक, सच्चे साधक चार प्रकार के ध्यानों का आश्रय लेते है। पहला पिण्डस्थ धर्म ध्यान है पिंडस्थ धर्म ध्यान में किसी न किसी प्रतिमा का आश्रय लिया जाता है। किसी न किसी मूर्ति का ध्यान किया जाता है। किसी न किसी गुरुओं का ध्यान किया जाता है। अथवा पंच परमेष्ठियों का ध्यान किया जाता है। ये सब पिण्डस्थ धर्म ध्यान कहा जाता है। जो नये साधक होते हैं, प्रारब्ध योगी होते हैं, जिनके लिए ध्यान का अधिक अभ्यास नहीं रहता वे प्रतिमा का ध्यान करते हैं, वे मूर्ति का ध्यान करते हैं। जो-जो भी मूर्तियाँ उसके दिल दिमाग पर प्रभाव डालती है उन्हीं प्रतिमाओं का वह बड़े उत्साह से, विनय से, भक्ति से, श्रद्धा से स्मरण करता है। और भगवान का स्मरण करते ही छोटे बालक की तरह अपनी सारी व्यथा कथा भगवान के चरणों में रखता है। भगवान से अच्छे मार्ग पर चलने की प्रार्थना करता है कि हम अच्छे मार्ग पर कैसे चलें। यह सब पिण्डस्थ ध्यान कहा जाता है।

पदस्थ ध्यान में मंत्राक्षरों का ध्यान किया जाता है। मंत्राक्षरों को बीजाक्षर भी कहा जाता है। पंचपरमेष्ठी वाचक

विभिन्न-विभिन्न मंत्रों का स्मरण करना पदस्थ धर्म ध्यान है। आचार्य श्री सिद्धातिदेव नेमिचन्द्र मुनिराज ने वृहद द्रव्य संग्रह में इस विषय में कहा है-

पणतीस सोल छप्पण, चदु दुगमेगं च जबह ज्झारह।
परमेट्ठि वाचयाणं, अण्णं च गुरुवएसेण।। ४३।।

साधको के लिए ३५ अक्षरी, पंच परमेष्ठी मंत्र बोलना चाहिए। प्रारम्भ साधना में जो साधक हैं वे ३५ अक्षर का जाप करते हैं। णमो अहिंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उजझायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। ये ३५ अक्षरी मंत्र कहा जाता है। णमोकार मंत्र कहा जाता है। सोल यानि सोलह अक्षरी मंत्र-अर्हत् सिद्धाचार्यो पाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः। इसमें १६ अक्षर हो गये। यह भी पंच परमेष्ठी वाचक १६ अक्षरी मंत्र कहा जाता है। छह अक्षरी 'णमो अरिहंताणं' यह अक्षरी मंत्र कहा जाता है अथवा 'ऊँ णमो सिद्धाणं' 'अक्षरी मंत्र' कहा जाता है। 'णमो आयरियाणं' अक्षरी मंत्र है। प का अर्थ होता पंचाक्षरी 'अ हि आ उ सा' का मंत्र पंचाक्षरी मंत्र कहा जाता है। 'ऊँ अर्हंताणं' पंचाक्षरी मंत्र है। 'णमो सिद्धाणं' पंचाक्षरी मंत्र है। 'आयरियाणं' पंचाक्षरी मंत्र है। 'उव्वझायाणं' यह भी पंचाक्षरी मंत्र है। 'चदु' का अर्थ होता है चार अक्षरी मंत्र। 'अरिहन्त' चार अक्षरी मंत्र है। 'णमो सिद्ध' २ अक्षरी मंत्र है। 'णमो मुनि' 'णमो साहु' ४ अक्षरी मंत्र है। २ अक्षरी- 'सिद्ध' 'साहु' ये दो अक्षरी मंत्र है। 'गुरु' 'जिन' दो अक्षरी मंत्र है। और 'ऊँ ' यह एकाक्षरी मंत्र है। इन मंत्र वाक्यों के लिए, पंच परमेष्ठी वाचक मंत्रों के लिए साधक जपता है लेकिन अन्य किसी मंत्रों की जाप करें तो आचार्य महाराज कहते हैं 'अण्णं च गुरुवासेण' गुरु के आदेश दें, स्वीकृति दे तभी अन्य मंत्रों का जाप करना चाहिए। ऐसी जिन आज्ञा है। जिनागम की आज्ञा है। स्वेच्छा से अन्य मंत्रों को न जपें। क्योंकि संभवतः जगत के लोग लोकेषणा के अभिमुख होते हैं और लौकिक कार्यों की महिमा परक मंत्रों को देख करके प्रभावित हो जाते हैं स्वेच्छा से जपने लगते हैं। लेकिन ये भूल जाते हैं कि इनके अधिष्ठाता भी होते हैं। यदि अन्य मंत्रों को जपा है और उसके देवों को आप संभाल नहीं सके। तो वे हानिकारक भी हो जाते हैं। अनेकोनेक साधक केवल अन्य किस्म के किये हुए मंत्रों के साधना में विचलित हुए। इसलिए बिना गुरु निर्देश के आज्ञा बिना अन्य मंत्रों की जाप स्वेच्छा से नहीं करना चाहिए। ऐसा भगवान का उपदेश है।

रूपस्थ धर्म ध्यान में हम रूपस्थ यानि साक्षात् विराजमान समोशरण में विराजमान अर्हन्त देव का स्मरण करते हैं। रूपातीत में सिद्ध भगवान का स्मरण करते हैं। इस प्रकार से हम पंच परमेष्ठी का ध्यान करते हैं।

संघ की फुहारें

१ **सेठ जी**- आ. श्री! हम माल रख-रख के भी कंगाल हैं।
आ.श्री - पर हम तो मालामाल हैं।
सेठ जी - कैसे?
आ.श्री - माला फेरते हैं, इसलिए।

२. **आ.श्री** - जो दो के बीच में बोलता है, वह कौन है?
बच्चा - मैं हूँ।
आ.श्री - मैं- मतलब।
बच्चा - आ.श्री! पूरी तारीफ कैसे करू कि वह मूर्ख मैं हूँ।

३. श्रावक साधना शिविर के दौरान परीक्षा में पूछे गये आपके अनुभव में एक भैया के अनुभव बाकी सब तो बहुत कुशल रहा पर अनुशासन गवर्नमेंट अनुशासन से बढ़कर था। कुछ भी हो हर वर्ष पूज्य गुरुवर के अनुशासन में शिविर में भाग लूँगा और संस्कारिता जीवन जियूँगा यही भावना है।

ब्र. राधा दीदी

संस्कार तथा मित्रता का महत्व

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज

बंधुओ! आज संडे है। आपने सप्ताह भर की इंतजारी की है। बहुत से लोग या छोटे-छोटे बच्चे संडे की इंतजारी में रहते हैं- संडे कब आए। संडे की बात सुनते ही मुझे बंबई वर्षायोग याद आ गया।

बंबई में प्रवेश होना था। मैंने पूछा- कब करना है? बोले- संडे ठीक रहेगा। वहाँ का सबसे बड़ा मुहुर्त संडे है। स्थापना की बात आई तो संडे, प्रवचन का विषय आया तो संडे। मैंने कहा- ठीक है और क्या कहना चाहते हो? कहीं ऐसा तो नहीं कि आप कहो- आहार भी संडे को हो। वे बोले- नहीं नहीं महाराज ऐसा नहीं है। मैंने कहा- ठीक है। बर्ना मुझे सोचना पड़ेगा- एक आचार्य हुए आदि सागर जी अंकलीकर जो संडे के संडे आहार लेते थे। लेकिन मैं समर्थ नहीं हूं।

आज स्कूल, विजनिस आदि-आदि सभी समस्याएँ हैं। भावना तो सबकी होती है कि रोज जाएँ। सम्यग्दृष्टि को धर्म की ऐसी प्यास होती है कि धर्मामृत जितना भी पीता जाए प्यास बुझती नहीं।

मेरा एक जगह विहार हुआ, धूमधाम से प्रवेश, प्रवचन सब हुआ। समाज ने प्रार्थना की- २-४ दिन रूक जाइए। इतना विशाल संघ हमारे गांव में पहली बार आया है, जैन क्या जैनेतर की भी श्रद्धा उमड़ी है। वह गांव था मनासा। वहाँ लोग मना रहे थे पर इंदौर के भी लोग थे जो कह रहे थे महाराज! महावीर जयंती तक कैसे पहुंचेगे। मैंने बोला- २ दिन रूक जाएँ तो इनकी भी प्यास कुछ शांत हो जायेगी। सत्य तो यह है- नीर वट है जो प्यास बुझाता है एक वह नीर है जिससे प्यास बढ़ती चली जाती है। धर्म व धर्मात्मा का ऐसा ही नीर है। चातुर्मास के बाद जब विहार होता है तो भी आप कहते है-

'रोको रे रोको कोई मुनि को विहार से'

भिंड में ५ चातुर्मास हुए। फिर भी विहार के समय लोग खड़े हो गए- नहीं जाने देगे। दो शब्द भी नहीं बोल पाए अैर आँसू वह निकले। केवल धर्म का नीर ऐसा है जिससे प्यास बुझती नहीं है। लेकिन श्रद्धा होना चाहिए। फिर धर्मामृत- जितना भी पीते जाओ प्यास उतनी-उतनी बढ़ती जाती है। ऐसा कि फिर न घर की याद रहती है न दुकान की, न भोजन पानी की। आप माताजी महाराज को देख रहे हैं- इनमें अधिकांशत: ऐसे हैं जिन्हें मम्मी-पापा ने जबदस्ती दर्शन के लिए भेजा था। मैं चाहता भी हूँ कि माताएँ ऐसी ही होना चाहिए।

शाहगढ़ में वहाँ के अध्यक्ष डेवड़िया जी ने जब छोटे-छोटे बच्चों को दर्शन करते देखा तो आँखों से आंसू वह निकले भाग्यशाली तो ये हैं। हम तो चातुर्मास के समय आस-पास के गांव जाते थे, आहार देने में तो आज तक हाथ थरथराते हैं। ये बच्चे आराम से आहार देते, वैयावृत्ति कर लेते हैं। एक बार धर्म का रस आ जाए तो सारे रस नीरस लगते हैं। आपको भी धर्म का रस आया होगा पर अंतर मन से नहीं। आप घर का भी रस ले लेते है पर इन्होंने ऐसा रसपान किया कि संसार नीरस लगने लगा- घर के लोग पकड़ने आ गए। लेकिन ये जाने तैयार नहीं हुए। बाहर से धर्म का रस नहीं आता कितने भी लोग लोभ प्रलोभन दे फिर भी बच्चे मंदिर जाने तैयार नहीं होते। आज लोगों को बड़ा अश्चर्य होता है कि जैन मंदिर में कोई भी प्रसाद नहीं करता पर लोग दौड़े चले आते है। मंगल प्रवेश स्वाध्याय प्रवचन वैय्यावृत्ति में लाईन लगी रहती है। क्या कारण है? धर्म के प्रति आस्था श्रद्धा और संस्कार। संस्कार-संस्कृति का निर्वाण, रक्षा वृद्धि, अन्नति करते हैं अच्छे माँ-पिता, भाई गुरु विद्वान पंडित कोई न कोई निमित्त होगा जिसने कहा होगा। मंदिर जाया करों।

शास्त्रों में दो उल्लेख आते है- स्वयंबोधित बोधित, बोधित। स्वयंबोधित तीर्थंकर होते हैं, दुनियाँ जिनके पास पढ़ने आए वे किससे पढ़ें? जिसे दूसरे पढ़ाते सिखाते प्रेरणा देते- प्रेरणा पाकर इस मार्ग पर आता है वह बोधित बुद्ध है। कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में किसी की प्रेरणा छिपी रहती है चाहे वह देव दर्शन के विषय में हो, चाहे रात्रि भोजन , आलू प्याज त्याग आदि के विषय में हो। मुझे ऐसे भी व्यक्ति की बात याद है जिसके बेटे कहते थे- पापा, जाओ प्रवचन सुनना, हम दुकान पर बैठे है। बेटा पिता को प्रेरणा दे रहा है। बेटे की प्रेरणा से चौका लगता है, कितने ऐसे शहरों से हम होकर आए

हैं, प्रेरणा तो किसी ने दी है कि चलना है। जिससे प्रभावित होकर हम तैयार होते है कि चलेंगे।

जिंदगी में श्रद्धा विश्वास बहुत बड़ी वस्तु कहीं जाती है जो अंदर से आकर्षित करती है। ऐसे संस्कार जिस परिवार में आते है उसका मूल्यांकन बढ़ जाता है। इतने बड़े-बड़े ट्यूब लाईट लगे है फिर क्यों दीप प्रज्वलन करते हो? कम दिख रहा है? नहीं दीपक प्रतीक है अंधकार से प्रकाश में आने का।

दीपक और लाईट में बहुत अंतर है। एक जगह टार्च सेआरती हो रही थी। किसी ने मुझसे पूछा- टार्च से आरती कारनी चाहिए कि दीपक से? मैंने कहा- श्रावकोचित कर्तव्य है, आप समझें। वो बोले- टार्च अच्छी है, जलने की समस्या नहीं जीव जंतु गिरने की समस्या नहीं। यह आज का युग है पहले टार्च का अविष्कार नहीं हुआ था, आज तो है। मैंने कहा- और सोचो। बोले- क्या मैने पूछा पुराण पढ़े है? हाँ, कौन से? पद्म पुराण आदिनाथ पुराण। समवशरण का वर्णन पढ़ा? हाँ बाहर दो-दो धूपघट होते हैं देव धूप है। धवला में ऐसा उल्लेख आया है। मैंने कहा- देवताओं के पास तो बड़े-बड़े चमत्कार होते हैं। आज से अधिक अविष्कार तो देव के पास हैं, उनमें विक्रिया रहती है पर उसका उपयोग नहीं किया। आप जितना सोचते हैं आचार्य और अधिक सोच लेते हैं। हमेशा ध्यान रखना- गुरु के ज्ञान में बहुत गहराई होती है इसलिए वे गुरु कहलाते हैं। पुराने समय में राजा महाराजा भी सलाह लेने गुरु के पास जाते थे। कितनी विडंबना है- रोज-रोज बादाम के हलुए का भोजन करने वाला राजा गुरु से पूछे। चक्रवर्ती का भोजन बनाने ३६० रसोईयों की आवश्यकता पड़ती है। इसका मतलब कितना बनाएँगे? कमरा तो भर ही जाएगा लेकिन इतना नहीं बनाते, केवल तीन लड्डू। अब सोचो, कैसे बनाते हैं, क्या-क्या डालते होंगे कि ३६० लोग बनाने में लगते हैं। इतना अच्छा भोजन करने के उपरांत भी दिमाग उतना सक्रिय नहीं हो पाता। जितना की नीरस भोजन करने वाले साधु-संतों का होता है। साधु कभी नीरस, कभी रस परित्याग, कभी उपवास आदि करते रहते है। सलाह साधु से ली जाती है। वे वीतरागी संत एक निर्णय, समाधान देते हैं। ऐसा करोगे तो आपत्ति-विपत्ति दूर हो जाएगी। शत्रु सेना शांत हो जाएगी। आखिर में इतना दिमाग चिंतन कैसे उत्पन्न होता है? लोग कहते है- बादाम पिस्ता खाने से दिमाग बढ़ता है। एक बच्चा पिस्ता ले आया। २-३ टाईम खाने लगा तो विद्या बढ़ेगी? ये भोला मन बोल रहा है। सत्य ये है- खाने मात्र से विद्या नहीं बढ़ती। निमित्त हो सकता है पर क्षयोपशम चाहिए। कैसे बढ़े विशुद्धि? आत्म परिणामों में निर्मलता चाहिए। जैसे- ज्ञान समान नहीं जगत में सुख को कारन। (छह.)

क्षयोपशम आत्म विशुद्धि व निर्मलता से उत्पन्न होता है। एक पुस्तक चार बार पढ़ लो और एक प्रवचन सुन लो तो पढ़ने से उतनी बात याद नहीं रहेगी जितनी सुनने से रहती है। आगम शास्त्रों का नाम श्रुत कहा गया है। श्रुत यानी सुनना। पर सुनने वाले को सुनाने वाला भी चाहिए। सुनाना फिर भी महत्वपूर्ण नहीं, सुनाना नहीं, सुनना कहा जाता है। शास्त्र का अपर नाम पढ़ना भी नहीं आया क्योंकि बहुत लोग पढ़ते जाते है पर उतनी जल्दी से बातें प्रवेश नहीं कर पाते। आज का कम्प्यूटर युग है लेकिन फिर भी पुस्तक ज्ञान विकास में सहयोगी नहीं बन पाती। टीचर होना चाहिए वो भी आमने-सामने साथ ही साथ विद्यार्थी में एकाग्रता होना चाहिए। पढ़ने सुनते समय ऐक्शन देखना चाहिए। बहुत से ऐक्शन सहज होते हैं। सहज ऐक्शन धारणा शक्ति में कारण बनते हैं।

कुछ दिन पहले किसी देश में सेमीनार हुआ- मूक-बधिर का परिणय-परिचय सम्मेलन था। उन्हें ऐक्शन से समझाया जा रहा था। ऐक्शन महत्वपूर्ण है पुस्तक से भी अधिक। सामने की अपेक्षा यदि पीछे बैठ जाएँ तो बात उतनी जल्दी अच्छे से समझ में नहीं आ पाती। तीसरी बात उपयोग की स्थिति भी गुरु के समक्ष होती है।

हम मात्र इतना कह रहे थे- संस्कार से ये अवस्थाएँ प्राप्त होती है। संस्कार कहाँ से आते हैं? पहले संस्कार पूर्वभव से आते हैं। जैनाचार्यों ने पूर्व भव के संस्कारों का समावेश किया। उसमें पहला हेतु दिया- खाने के संस्कार कहाँ से आए? चाहे गाय का बच्चा हो, चाहे मनुष्य का, खाने के लिए मुँह ही आगे करता है, कितना छोटा बालक हो, पेट को अंगूली दिखाकर कहता है इसे भूख लगी है पर भोजन तो मुख से ही करता है। इसका अर्थ संस्कार पूर्वभव के हैं। जन्म के समय आँखें बंद होती है पर बोल कैसे लेते हैं? आँखें खोलने के संस्कार हैं, खड़े होने के संस्कार हैं। कोई उल्टा क्यों नहीं खड़ा होता। मनुष्यों में तो माँ सिखाती है। पर पशुओं के बच्चे भी पैर से ही चलते है। इसका मतलब है पुनर्जन्म की पद्धति

शाश्वत है, शरीर का जन्म होता है आत्मा का नहीं। एक भव के नहीं अनेक भव के संस्कार साथ आते है। आप कह देते है कि- भरत चक्रवर्ती को दीक्षा लेते ही केवलज्ञान हो गया था पर देखो कितने भव की साधना तपस्या की है। बुरे संस्कार भी होते है। कमठ के बुरे संस्कार थे, पार्श्वनाथ के अच्छे। बच्चे के पूर्वभव के संस्कार के बाद होते हैं- जन्म के माँ द्वारा दिये संस्कार बड़ा होता है तो पिता के और बड़ा होता है तो परिवार के फिर होते हैं समाज के, मोहल्ले, गांव के संस्कार।

प्रांत के संस्कार होते हैं। देश के भी संस्कार होते हैं। हम कितना भी इंग्लिश बोलें पर बीच में हिन्दी आ ही जाती है, विदेशी पर्यटक भी भारत में आते हैं पर कुछ उनके संस्कार मातृ भाषा के रहते है। हम कटनी पढ़ने गये थे। हिन्दी, संस्कृत में सब बात करते थे। पर हमारी बुंदेली भाषा बीच में आ ही जाती थी। सब बदल जाएँ पर संस्कार इतनी जल्दी नहीं बदलते। बेटा माता-पिता की और माता-पिता बेटे की पहचान बनते हैं। बेटा अगर अच्छा निकल गया तो कहा जाता है अच्छा तो आप अमुक के माता-पिता हैं। कहीं माता-पिता से बेटे की पहचान होती है। आप अमुक के बेटे है ? हाँ, समझ में आता है आपको देखकर कि उन्हीं के संस्कार होंगे। उनके बेटे देखों महाराज आते है तो दौड़े-दौड़े आते है, उनके क्या संस्कार है कहीं देखा जाता है, बच्चे आते हैं माता-पिता नहीं आते। प्राय: कैसे संस्कार पड़ते है-

Like Father, Like Son, Like Mother, Like Daughter.

जैसे- पिता वैसे पुत्र और जैसी माता वैसी पुत्री होती है।

जाके जैसे बाप-मताई, ताके वैसे लड़का।

जाके जैसी नदियाँ-नाले, ताके वैसे भटका।।

बुंदेली कहावतें भी अपने आप में रहस्यपूर्ण हैं।

संस्कृत में कहते हैं- मुंडे-मुडे मतिभिन्ना

जितने प्रकार के व्यक्ति होते है सब अपनी सोच रखते हैं।

Many Men Many Minds.

जितने व्यक्ति उतने उनके मस्तिष्क होते हैं। छोटी नदी होती है तो छोटे गड्डे होते हैं। बड़ी नदी होती है तो बड़े। माता-पिता के संस्कार भी वैसे-वैसे चले आते हैं। कितनी बार कहते हैं- ऐसे लड़के है तो बाप मतारी कैसे होंगे अथवा बाप-मताई रात में खात ते, अष्टमी-चौदस भी ने गिनत ते, वे आलू प्याज खात ते आज उनके लड़का शराब पी रहे। कोई परवाह नहीं- कोउ का के है। काए खो जन्म लओ, न लेते अच्छा था। जैनधर्म को वदनाम कर दिया इसलिए कहा जाता है संस्कार देना और संस्कार की रक्षा करना दोनों महत्वपूर्ण हैं। एक धर्मशाला बनाने का प्रस्ताव आए, एक मुनि संघ को लाने का तो आप किसे पहले प्राथमिकता देंगे। संस्कार दिये बिना मंदिर की कीमत नहीं है। संस्कार देने वाले गुरु होते हैं, समाज में हरा-भरा पन है गुरु के बल पर। जहाँ-जहाँ चातुर्मास होते रहे है, पूछ लो- आनंद बरसता रहता है। कोई कहता है हमारा चौका लग रहा है, कोई कहता हम धर्म से जुड़ गए हैं। ध्यान रखें मंदिर, धर्म या मूर्ति से कीमती संस्कार है। संस्कार दिस है तो वो समाज अनेक मंदिर खड़े कर देगी और संस्कार नहीं है तो कितने मंदिर खड़े करो सब खण्डहर हो जाएगे। कितने ऐसे स्थान हैं- झगडे होते हैं- तुम पूजा कर लेना, तुम अभिषेक करना। जहाँ संस्कार है वहाँ भी लड़ाई होती है। पूजा भक्ति के लिए। छोटे-छोटे से बच्चे पूजन सीखते हैं। संस्कारों का मूल्यांकन है जो जीवन को कीमती बना देते हैं। संस्कार वान एक दीपक हो तो भी काफी है।

जाज्वल्यमान से ही जलते अनेकों।
सहसा हुए प्रकाशित, ऐ मित्र देखो।।
आचार्य दीप हैं जो तम को मिटाते।
आलोक धाम हमको सहसा दिलाते।।

हर घर में कम से कम एक जलता हुआ दीप होना चाहिए। एक व्यक्ति संस्कारित होगा तो सबको संस्कारित कर देता है और यदि एक कुसंस्कारित निकल जाए तो सारे परिवार को असम्मान झेलना पड़ता है। एक सुसंस्कारित सज्जन से सारे

परिवार का सम्मान बढ़ जाता है। बेटे महाराज बने हैं लेकिन सम्मान पिता का होता है। एक अच्छे व्यक्ति से परिवार क्या समाज, नगर का सम्मान बढ़ जाता है। हर व्यक्ति कहता है- हमारे गाँव के प्रांत प्रदेश की पूछ शुरु हो जाती है। विदेश चला जाए तो लोग कहते हैं- हमारे भारत का है। राष्ट्र प्रधान भी सम्मान करने आते हैं। भारत की शान है। विवेकानंद जी संत नहीं थे बस महापुरुष थे। भारत के कल्याण मुनि जिन्हें को लेख कहा जाता था, ज्ञान की शान बन गये। हमने कभी प्रचार नहीं किया, संकीर्ण बुद्धि रही, हम लड़ने में वीर है, आपस में बड़ी-बड़ी बाधा उठा लेते हैं। पर बाहर का शत्रु आ जाए तो पूंछ दवाकर बैठ जाते हैं। कभी विचार नहीं किया कि हमारा धर्म संस्कार कैसे बिगड़ते हैं- दूसरे ने हमारी संस्कृति का उतना विनाश नहीं किया हमने ही किया है।

कहने का तात्पर्य है- जैन हैं तो जैनत्व भी होना चाहिए। शराब, मांस, चोरी, वेश्यासेवन आदि दुर्व्यसन त्याग करने योग्य हैं। प्रवचन का यही उद्देश्य है। उस पार्टी को छोड़ दे जहाँ शराब, मांस की बात हो रही हो। हमारा धर्म तो ऐसा उच्च था यदि कोई दूसरा आमंत्रण-निमंत्रण देता तो लिखता था। जैन साहब, संध्या-भोजन की, आलू-प्याज रहित विशेष व्यवस्था है अवश्य पधारें। क्या गौरव था जैनत्व का मैं ताली पर कम, संकल्प पर अधिक विश्वास रखता हूँ। संकल्प लें- कभी घर में पंगत आदि में आलू-प्याज प्रयोग नहीं करेंगे। धीरे-धीरे भी प्रयत्न किया तो लगता है- आज सौ व्यक्ति तैयार हैं तो कल और तैयार हो जाएँगे।

इंदौर में ही एक जगह चर्चा चल रही थी- जैन शादी विवाह में पहले १० प्रतिशत रात्रि भोजन करते थे। ९० प्रतिशत संध्या में, अब पासा पलट गया १० प्रतिशत संध्या में, ९० प्रतिशत रात्रि में करते है।

बुंदेलखण्ड में अनेक स्थान हैं जहाँ के नियम हैं- हमारी धर्मशाला में आलू, प्याज, रात्रि भोजन, शराब का प्रयोग नहीं होगा। अन्यथा दण्ड केभागी होंगे। हमारी समाज लोभी नहीं है। मुम्बई में अनेक होटले ऐसी हैं- जहाँ जैन फ्रूड की व्यवस्था है। कोई न कोई जैन होगा जिसने ऐसी गरिमा रखी है। आपके फ्रूड को क्या कहें ? सुना है कई जगह प्लेन, ट्रेन, बस में व्यवस्था है आलू, प्याज रात्रि भोजन से रहित भोजन की। और आपकी पंगत में ?

संस्कार संस्कृति की रक्षा के लिए हम एक-दूसरे से मिलकर चलेगे, कंधे से कंधे मिलाकर चलेगें, प्रोत्साहित प्रेरित करेंगे, अन्य की परिस्थिति समझने का प्रयास करेंगे।

आज फ्रेंडशिप डे है। जिंदगी में मित्र होना चाहिए। जिसकी जिंदगी में मित्र नहीं होते उसकी जिंदगी अधूरी है। मित्र हो अच्छा व सच्चा भी, अच्छा ऐसा हो जैसे सुदामा के लिए श्री कृष्ण। जो अच्छे संस्कार व समय-समय पर प्रोत्साहन देने साहस दिलाने तैयार रहे। जीवन तक देने तैयार रहे हैं। शास्त्रों में उल्लेखित है। मित्र वह है जो जीवन को अच्छाई की दिशा में ले जाए तो फ्रेडशिप डे, सार्थक-सफल हो सकता है। मित्रता उठाती भी है गिराती भी है। गिराने वाली मित्रता दुर्व्यसन हैं। बीड़ी, सिगरेट, पाउच की आदत भी मित्र से आती है, ऐसा मित्र कभी नहीं होना चाहिए। जो जीवन बर्वाद करे, कुटुंब परिवार समाज को बदनाम करे। स्वयं दुखी रहे व परिवार के सम्मान को गिराकर उसे भी दुखी कर दे। मित्र इसलिए होते हैं ताकि अंदर की बात रखकर हम हल्के हो जाएं। सबसे कभी सलाह नहीं ले, उससे ले जिसकी सलाह का महत्व है। जीवन में मित्रता हो तो ऐसी हो तभी जीवन ऊंचाईयों पर पहुँच सकता है।

जय बोलिए महावीर भगवान की जय

प्रतिदिन चेनल पर देखिये-

१. **जिनवाणी चेनल - दोपहर १.००बजे प्रवचन**
२. **पारस चेनल - शंका समाधान (समय : दोप. १२.३० बजे)**
३. **V- Star News : Mobile Channal प्रवचन एवं शंका समाधान**
   प्रात : ७.३० बजे एवं सांय ७.३० बजे

ईर्ष्या नहीं, पुण्य करो

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

भो चैतन्य! तू कहीं भी कैसा भी हो, पर पंचपरमगुरु को मत भूल जाना। निर्ग्रन्थ मुद्रा तुझे जहाँ भी मिले तो प्रथम वन्दन/अभिनन्दन कर, उसके उपरान्त कोई अन्य चर्चा कर। किसी की उन्नति देखकर तू ईर्ष्या-भाव को प्राप्त मत होना। आज तक तूने परिणाम निर्मल रखे हैं, उसी का प्रभाव है कि तू आज इस रूप में है। यहीं संतुष्ट नहीं होना, अपितु त्रैलोक्यशिखर पर जाना है। सिद्धस्वरूप को प्राप्त करना, संसार-चित्रों में मत उलझ जाना। तेरा स्वरूप अरस, अरूप, अगन्ध, अस्पर्श है, संस्थान से रहित है, फिर तू पुद्गलरूप फोटो/ तस्वीरों में कैसा उलझा? इसका तात्पर्य है कि तुझे वर्तमान शरीर सिद्ध स्वरूप से ज्यादा अच्छा लग रहा है। तूने अपने असली रूप को नहीं समझा। क्या तू सिद्ध नहीं होना चाहिए? क्या संसार की पर्यायों में ही तुझे अच्छा लग रहा है? नि:श्रेयस सुख से उदास है, तभी तो वर्तमान की पर्याय में शान्ति महसूस कर रहा है। जिस शरीर में चेतन प्रभु विराजमान हैं, वह नष्ट होनावाला है, फिर उसके चित्र कैसे चिरस्थायी होंगे? कोड़ा-कोड़ी मुनीश्वर हो गए, वर्तमान युग में भी महाज्ञानी तपस्वी आचार्य कुन्द-कुन्द स्वामी, समंतभद्रस्वामी, अकलंकदेव, भद्रबाहु, धरसेन, पुष्पदन्त, भूतबली गौतम स्वामी, महावीर स्वामी, तीर्थंकरों तक के चित्र शाश्वत नहीं है, न किसी के बचे हैं। फिर है अज्ञ! तेरा चित्र कैसे बच पाएगा? जिनके चित्र लगाने हैं, वे लग नहीं पाए। जिन्हें हटाने हैं वे लग गए हैं। गृहस्थ स्वयं के चित्र लगाता है, लगवाता है। देश के नेता जब तक सत्ता में रहते हैं उनके चित्र समाचार पत्र पत्रिकाओं के मुखपृष्ठ पर छपते हैं। जैसे ही गद्दी गई, चित्र पेपरों में आना बन्द हो जाते हैं। जब अटलबिहारी वाजपेयी जी प्रधानमंत्री थे, इसलिए प्रत्येक पेपर में उनका चित्र आ रहा था। इन्दिरा गांधी व महात्मा गांधी का कयों नहीं। महात्मा गांधी ने तो देश को आजाद करवाया था। अरे भैया! जिसका, जिस समय तक पुण्य सत्ता में रहता है, तभी तक सब कुछ है। पुण्य गया, सब गया। ईर्ष्या नहीं करो, पुण्यकार्य करो। चाहे मुनि लघु हों चाहे गुरु, पर 'णमो लोए सव्व साहूणं' को ध्यान में रखकर किसी की अवहेलना न करना, न करवाना। किसी का यश फैल रहा है तो तू उसे कैसे बन्द करा सकता है? किसी की कीर्ति में बाधक बनना चाहते हो तो यह तेरी बिडम्बना मात्र है। कीर्ति की नहीं जाती, कितना ही आप चाहें, कि मेरी कीर्ति फैल जाए। जैन सिद्धांत पढ़ो। नामकर्म की प्रकृतियों में एक यश: कीर्ति नामकर्म है, दूसरा अयश:कीर्ति। जिसके जिसका उदय है, उसके लिए कोई रोकने वाला नहीं है। अनेक नारायण हुए बलभद्र भी हुए, पर राम, लक्ष्मण, कृष्ण, बलराम आदि का नाम अधिक क्यों? बारह चक्रियों में भरतेश्वर ही का नाम क्यों? क्या अन्य पदवीधारी नहीं थे? पर उनकी अपेक्षा इन लोगों की यश:कीर्ति ज्यादा थी। उसी प्रकार से अनेक आचार्य हैं व मुनिराज हैं, उनमें सभी का यश समान नहीं हैं। तपस्वी ज्यादा हो सकते हैं, पर जिन्होंने पूर्व में तपोनिधियों की स्तुति की है, उससे यश नामकर्म का प्रबल द्रव्य तैयार किया था, उसे अब भोग रहे हैं। इसलिए ज्ञानियों को किसी के बारे में उल्टा नहीं सोचना, अपध्यान नहीं करना चाहिए, अपितु वह कर्तव्य करना चाहिए। जिसके माध्यम से पूण्य की वृद्धि हो, पापकर्म का क्षय हो। यहाँ तक कि यश कीर्ति आदि पुण्य प्रकृतियों का भी क्षय हो, सिद्धत्व प्राप्त हो। जब तक सिद्धत्व प्राप्त नहीं हो रहा, तब तक जितना पुण्य फल है उसमें संतुष्ट होकर पापकर्म का क्षय करें। अन्यथा जिस अहं के कारण तू भटका है, आगे वैसे ही भटकता रहेगा, कुछ भी मिलने वाला नहीं है।

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अत: सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

'आचार्य श्री विरागसागर चालीसा'

श्रमणाचार्य विशद सागर जी महामुनिराज

दोहा- देव शास्त्र गुरु लोक में, भवदधि तारण हार।
विमल गुरु सन्मति चरण, वन्दन बारम्बार।।
विराग सिन्धु गुरुवर परम, हैं पावन शिव धाम।
चालीसा गाते-विशद, करके चरण प्रणाम।।

चौपाई- विराग सिन्धु गुरुदेव हमारे, भवि जीवों के तारण हारे।
परमेष्ठी आचार्य कहाते, जग जग को सन्मार्ग दिखाते।।
तीन लोक के मध्य में जानो, मध्य लोक इक राजू मानो।
मध्य में जम्बू द्वीप बताया, जिसमें भरत क्षेत्र शुभ गाया।।
भारत देश की महिमा न्यारी, मध्य प्रदेश रहा शुभकारी।
जिसमें जिला दमोह कहाए, (ग्राम) नगर पथरिया जिसमें आए।।
जिसमें प्रगटा लाल निराला, जगजन का मन हरने वाला।
कपूरचंद जी पिता कहाए, नगर में गौरवता शुभ पाए।।
माता श्यामा देवी जानो, श्रेष्ठ श्राविका जिनका मानो।
प्रथम पुत्र अरविंद कहाए, चार भाई दो बहिने पाए।।
नौमी सुदि वैशाख बताई, सम्वत बीस सौ बीस कहाई।
जन्मोत्सव पर बजी बधाई, माँ श्यामा ने लोरी गाई।।
कटनी वोर्डिंग पढ़ने आए, सन्मति गुरु के दर्शन पाए।
जिनका आप विहार कराए, नगर बुद्धार साथ में आए।।
फाल्गुन शुक्ल पंचमी गाई, क्षुल्लक दीक्षा तुमने पाई।
सन उन्नीस सौ अस्सी जानो, बीस फरवरी का दिन मानो।।
क्षुल्लक पूर्ण सागर कहलाए, सन्मति सागर जी गुरु पाए।
बीमारी में तुम्हें सताया, अपना सारा जोर लगाया।।
किन्तु आपने हार ना मानी, मुनि दीक्षा लेने की ढानी।
नगर औरंगाबाद कहाए, विमल सिन्धु के दर्शन पाए।।
मगसिर शुदि पाँचे शुभ जानो, सम्वत बीस सौ चालीस मानो।
जिनके कर कमलों से भाई, आपने मुनिवर दीक्षा पाई।।
विराग सिन्धु मुनिराज कहाए, लोग सभी जयकार लगाए।
यथानाम गुण तुमने पाए, नाम सार्थक आप बनाये।।
कर विहार द्रोणगिर आए, शिष्य आपने कई बनाए।
कई विद्वान चरण में आते, गुरु के ज्ञान की महिमा गाते।।
सन उन्नीस सौ वानवे भाई, कार्तिक शुक्ल तेरस गाई।
आठ नवम्बर शुभ दिन आयो, पद आचार्य आपने पाया।
साक्षी स्वयं रचयिता गाए, ब्रह्मचर्य व्रत उस दिन पाए।

ज्ञान ध्यान तप आप बढ़ाए, शिष्यों की गुरु बढ़ती पाए।
आठ आप आचार्य बनाएँ, मुनी शताधिक गुरु के गाए।
कई आर्यिकाएँ हैं भाई, जिनने गुरु से दीक्षा पाई।
राष्ट्र संत की पदवी पाए, शास्त्र आपने कई रचाए।
लिखे आप संस्कृत टीकाएँ, महिमा कैसे कह पाएँ।
प्राकृत भाषा में शुभकारी, रचीं भक्तियाँ मंगलकारी।
तीर्थों का उद्धार कराए, तीर्थोद्धारक आप कहाए।
भक्त आपसे आशिष पाए, विरागोदय शुभ तीर्थ बनाए।
जिन मंदिर निर्माण कराए, पंचकल्याणक श्रेष्ठ कराए।
व्यसन मुक्ति अभियान चलाया, कई लोगों को व्यसन छुड़ाया।
आप विशद महिमा के धारी, तुम चरणों में ढोक हमारी।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े जो गुरु के पास।
पूरी होगी कामना, धरें हृदय विश्वास।।

सज्जनों की सज्जनता

संकलन- आ. विदूषीश्री माता जी

एक बार अकबर के दरबार में राजसभा लगी हुई थी। अकबर ने बीरबल से कहा- बीरबल, मेरा एक प्रश्न है उसका उत्तर तुम्हें देना होगा। बीरबल ने कहा- हुजूर, प्रश्न क्या है ? अकबर ने कहा- यदि किसी व्यक्ति ने एक लाइन खींची है तो उसको बिना मिटायें कैसे छोटा किया जाये ? बीरबल ने कहा- पहले इस प्रश्न को सभा में उपस्थित लोगों से पूछे। सबसे पूछ लेने के पश्चात् बीरबल ने कहा, हजूर इस प्रश्न का उत्तर अब मैं दूँगा। यदि उस लाइन के नीचे बड़ा लाइन खींच दी जाय तो पहले खींची गई लाइन अपने आप छोटी हो जायेगी। सज्जन व्यक्ति इस ही प्रकार के होते है। वे किसी कि लाइन को मिटाते नहीं हैं बल्कि स्वयं, विनय आदि के द्वारा अपनी लाइन को बड़ी कर लेते हैं। ऐसी ही होती है सज्जनों की सज्जनता।

गुरु-शिक्षा (मूलाचार)

श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माता जी

- साधु मोक्षमार्ग के प्रतिकूल विधि नहीं बता सकते।
- धर्म, संघ, समाज या गुरु की हँसी हो, ऐसा कोई काम मत करो।
- स्वतंत्र होना सही है, स्वच्छंद होना गलत।
- चर्या, व्यवहार, सत्य निष्ठता, समालोचना, हृदय विशुद्धि से व्यक्ति उठता है।
- संघ (गुरुकुल) में व्यवस्थित रहने वाला बाहर भी व्यवस्थित रहता है।
- बड़े होने के लिए बड़प्पन भी चाहिए।
- चुगलखोर सुनाने वाला नहीं, सुनने वाला ज्यादा है। क्योंकि सुनो मत तो कौन सुनायेगा, कितने समय तक सुनायेगा। उसे बढ़ावा नहीं मिलेगा।
- जिनवाणी पढ़ो, शठों में शाठ्य नहीं, गधों में गधे नहीं, चोर में चोर नहीं बनो, वर्ना आप डूबे पाहुने ले डूबे जजवान।
- ऐसा व्यक्ति सुने, जो सामने वाले को दुर्गति का पात्र न बनाये, शिवपथगामी को एकेंदियपथगामी न बनाये, ऐसी पवित्र भावना से प्रयास करो।

आत्मचिन्तन

(प.पू. गणा. आ. श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज की शिष्या
समाधिस्थ श्रमणी आर्यिका विसोहीश्री माता जी की नित्य डायरी से आत्मचिन्तन

हे मन जैसे सूर्य को रोकना असम्भव है वैसे ही कर्मोदय को रोक देना असम्भव है। इसके उदय से पीड़ा, रोम, शोक, भय, जन्म-मरण आदि को भोगना ही पड़ेगा समता पूर्वक भोगने में ही सार है।

हे जीव, जो संक्लेश परिणाम तुम्हारी आत्मा का स्वभाव नहीं है, अतएव कर्मोदय से प्राप्त हुये है। वह कर्म भी पहले संक्लेश परिणामों से बंध को प्राप्त हुआ था अब भी नहीं सोचा तो फिर ये परिणाम नवीन कर्म बंध करवायेगा, इसलिये चेत जा।

हे अज्ञानी जीव! तूने जीवन में पहली बार एक प्रोबधोपवास किया। जरा सी शिथिलता आने से ही तू कमजोर पड़ गई। समय को पहचान, सावधानी पूर्वक समता को धारण कर और शांति पूर्वक संयम की रक्षा कर और आगे बढ़कर मन को स्थिर कर ले तभी तू आत्म कल्याण कर सकेगी।

हे भव्य! तू बारह भावना का निरतर चिंतन कर ये भावनाएँ वैराग्य की माता है। समस्त जीवों का हित करने वाली है, दु:खी जीवों की शरणभूत है। तत्वों का निश्चय कराने वाली है और अशुभ भावों को नष्ट करने वाली है।

हे जीव तू चिंतन कर कि मैं देह स्वरूप नहीं हूँ, ना मुझे कोई रोग है ना कोई पीड़ा है और न मेरा मरण है यह तो सब शरीर की अवस्थाएँ है, मैं तो शरीर से भिन्न एक शुद्ध आत्मा हूँ क्योंकि अपने पूर्व संचित कर्मों को दूर करने का यही उत्तम ध्यान है। पुरुषार्थ कर सफलता प्राप्त होगी।

नोट- शेष अगले अंक में देखें....

हँसो और हँसाया करों

१ **एक बच्चा**- पहलवान जी, दो दिन से खाना नहीं, कुछ दे दो।
पहलवान- आगे बढ़ लो, कुछ नहीं है।
बच्चा - जो हो वो दे दो।
पहलवान- दो मुक्के देकर- ठीक है।

२. **डॉक्टर** - आपको बहुत तेज बुखार है, घी मत खाना।
मरीज - जी, कब तक?
डॉक्टर - जब तक बुखार आये।
मरीज - (अगले दिन-बर्फ से नहाकर पहुँचा)- देखो डॉक्टर साहब, पूरा ठंडा हो गया अब घी खाऊँगा।

३. **अध्यापक** - एवरेस्ट पर सबसे पहले कौन पहुँचा था?
छात्र - सर मैं तो नहीं पहुँचा, अत: नहीं बता सकता।
अध्यापक - कल ही तो बताया था, गधे की औलाद
छात्र - जी, अब याद रखूँगा कि गंधे की औलाद सबसे पहले एवरेस्ट पर पहुँचा था।

४. **पति** - (पत्नी से) तुम्हे सबसे ज्यादा डर किससे लगता है?
पत्नी- किसी से भी नहीं। क्यों पूछते हो?
पति - यही तो मैं सोच रहा था कि दुनिया की सबसे भयानक चीज (पत्नी) को किससे डर लग सकता है।

कुमारी प्रियंका जैन

निर्वाण का अर्थ है अव्याबाध सुख की उपलब्धि

श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी

भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव की बेला है। निर्वाण का अर्थ है परम आनन्दमय हो जाना। अव्याबाध सुख को उपलब्ध होना ही निर्वाण है। हर आत्मा में निर्वाण प्राप्त करने की शक्ति विद्यमान है। अनन्त आनंद में निमग्न होने के लिये निर्वाण की उपलब्धि आवश्यक है। भगवान महावीर का निर्वाण इस बात का परिचायक है कि पतित से पतित आत्मा भी निर्वाण प्राप्त कर सकती है। परमात्मा बन सकती है। आवश्यकता है स्वयं को स्वयं की शक्ति को पहचानने की। महावीर का महानिर्वाण तो हमारे लिये मात्र एक संकेत एक इशारा हे। महावीर का महानिर्वाण तो हमारे लिये मात्र एक संकेत एक इशारा है। महावीर का निर्वाण तो हमारे लिये एक मील का पत्थर है। जैसे राहगीर को रास्ते में मील के पत्थर और उन पत्थरों पर लिखी संकेत की भाषा मंजिल तक पहुंचाने में कार्यकारी साबित होती है उसी प्रकार भगवान महावीर स्वामी का निर्वाणोत्सव तो एकमील का पत्थर है, जो हमारे लिये अपनी मंजिल प्राप्त करने का संकेत दे रहा है। किन्तु सारे लोग इसे कोरा आनन्द का उत्सव मानकर सुस्वाद भोजन और सुन्दर वस्त्रों को पहनकर पूर्णमान लेते हैं। तो कोई पूजन आराधना तक ही सीमित रहकर निर्वाणोत्सव की इतिश्री मान लेते हैं। किन्तु यह महावीर के निर्वाणोत्सव की सम्यक् सार्थकता नहीं मानी जा सकती। अंग्रेजों के जमाने के अनपढ़ गंवार लोग मील के पत्थरों को लाल-लाल सिंदूर से पुता देखकर अथवा पोतकर परमात्मा मान पूजने लगते थे। वे नहीं जानते थे कि मील का पत्थर हमें किस बात का बोध देनेवाला है। उसी प्रकार हम भी मात्र पूजन आराधना कर निर्वाणोत्सव को मनाकर कर्तव्यनिष्ठ बनने की सोच लेते हैं किन्तु वास्तव में हमें निर्वाणोत्सव के दिन परमात्मा महावीर के गुणानुवाद पूर्वक अपने निज कारण परमात्मा को निर्वाण उपलब्धि के नये पुरुषार्थ से संवारना चाहिये। एकांत में बैठकर आत्म चिंतन मनन कर निर्वाणोपलब्धि की उपादेयता से आत्मा को भिंगोना चाहिए। परमआनन्द की अनुभूति के लिये कुछ कदम बढ़ाना चाहिये।

भगवान महावीर स्वामी की आत्मा कर्मों के समस्त बंधनों को काटकर परमस्वतंत्रता को प्राप्त हो गई। निर्वाण जीवन में वही प्राप्त कर सकता है जिसने जीते-जी हर सांस में मौत को देखा हो। सांस जीवन नहीं मरण की सूनी मांग को भरती है। जिसको सांस में मृत्यु का अवलोकन हुआ। वह मानव, महामानव बनकर महावीर सम महानिर्वाण को प्राप्त हो जाता है। मौत तो आयेगी, आती है, प्रतिपल आ रही है। किन्तु मानव मौत को जीवन के कागज पर अंकित नहीं होने दे, इसके लिये निर्वाण की लेखनी चाहिये। निश्रेयस सुख की उपलब्धि ही मानव पर्याय की सार्थकता है। महावीर स्वामी को निर्वाण अमावश की काली रात में हुआ। किन्तु अमावशय की काली घनी रात पूर्णिमा के चाँद की ज्योत्सना के समान ज्योतिर्मय हो गयी। भगवान को निर्वाण होते ही सारी कालिमा विलीन हो गई। धरती आलोक से नहा उठी। जहाँ एक ओर महावीर को निर्वाण हुआ वही सांझ की बेला में महावीर के शिष्य गौतम गणधर को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। प्राणीमात्र को मोक्षमार्ग की मुक्ति मंजिल की शिक्षा देने वाला गुरु प्राप्त हुआ। गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ तो सांझ को केवलज्ञान लक्ष्मी की देवों ने आकर महा पूजा की। दीपकोत्सव मनाया। तभी से दीपावली मनाई जाने लगी।

ज्योतिर्मय दीप स्वयं को प्रकाशित करता है साथ अय वस्तुओं को भी आलोकित करता है। मृण्मय दीप अन्य दीपों को चूमकर ज्योतिर्मय कर देता है। फिर हम तो चिन्मय ज्योतिस्वरूप हैं। क्या मृण्मय दीप से भी गये बाते हैं। गौतम स्वामी की चिन्मय ज्योति को ज्योतिर्मय करने का उपाय करें। आत्मा के आलोक में स्वयं के परमात्मा से परिचय करें। भगवान महावीर स्वामी के अहिंसा संदेश को जीवन में साकार करें। संकल्पी हिंसा से पूर्णत: बचने का प्रयास करें। पटाखे आदि दीपावली की सच्ची आराधना नहीं अपितु महावीर के सिद्धान्तों से मुँह चुराना है। पटाखे चलाने से हिंसा होती है। इसलिये इन हिंसक कार्यों से बचकर अहिंसक दीपावली मनाकर आदर्श प्रस्तुत करें।

धर्म से धन व सुख दोनों प्राप्त होते हैं

आचार्य विनम्रसागर जी

हर आदमी उन ख्यालों में डूबा हुआ है जिससे धन और सुख की प्राप्ति होती है। ख्याल वह विचार है जिसे हर कोई बनाने में स्वतंत्र है मानव की एक मान्यता को तोड़ना टेढ़ी खीर है। यदि किसी के दिल पर यह मान्यता बैठ गई हो कि धन से धन व सुख दोनों की प्राप्ति होती है तो फिर उसकी सारी जिंदगी की दौड़ धन की लालसा में गुजर जाये तो कोई इसमें आश्चर्य की बात नहीं। धन से धन होता है यह हमेशा नहीं कहा जा सकता है। कभी-कभी धन से हार्ट अटैक, बी.पी. तेज, भय, टेंशन एवं कई रोग पैदा हो जाते हैं। यह बात भी साफ जाहिर है कि गरीब किसान या कोई मजदूर जो मेहनत करता है धनहीन है उसे कभी हार्ट अटैक, भय, बी.पी. तेज, टेशन जैसी बीमारियों नहीं होती और एक पैसे वाले के पास ये सभी दुख पैसे के साथ उपहार में मिलते हैं। धन से सुख हो यह जरूरी नहीं है लेकिन धर्म करने से धन व सुख दोनों प्राप्त होते हैं।

धन सभी अनर्थों की जड़ है आज दुनियाँ में जितने भी अनैतिक कार्य हो रहे हैं वो सभी धन के लिए हो रहे हैं। जितने भी जुल्म हो रहे हैं वो धनिकों के यहाँ ही हो रहे हैं। एक शेर फरमाया है 'जुल्म देखा तो शहंशाओं की हस्ती में देखा और खुदा देखा तो गरीबों की बस्ती में देखा' धर्म वह है जो व्यक्ति को अहम् से नहीं अर्हत् से जोड़ता है धर्म के अभाव में यहाँ पर कोई परमात्मा नहीं रह पाता और जहाँ परमात्मा का अभाव हो जाता है वहाँ अहंकार का अँधेरा अपने पाँव पसार लेता है। फिर उसका पतन अवश्य ही होगा। धर्म की नाव को पकड़कर जो समुद्र में कूद पड़ा है उसमें पानी हवाओं तथा तूफान के थपेड़े तो लग सकते हैं लेकिन वो कभी डूब नहीं सकता। धर्मके लिए जिसने अपना जीवन सौंप दिया है उसकी रक्षा फिर भगवान को या देवताओं को करनी ही पड़ती है।

धर्म के अलावा दुनियां में कोई ऐसी वस्तु नहीं जो व्यक्ति को सुख प्रदान कर सके क्योंकि पर वस्तु में सुख का लेश मात्र भी नहीं है यदि हम भोजन व्यंजनों से सुख मानते हैं तो अधिक भोजन करने पर दुख क्यों होता है ? यदि हम कूलर से सुख मानते है तो चार कूलरों की हवा से हम बीमार क्यों हो जाते हैं ? इससे ये बात सिद्ध है कि वस्तु से नहीं वास्तविका से सुख मिल सकता है ये हमारी भूल है कि बाह्य वस्तु से सुख समझते हैं। वास्तविकता यह है कि आनन्द का स्रोत भीतर से झरता है और निमित्त बाहर की वस्तु का होता है तब हमें बाहर की वस्तु दिखाई देती है लेकिन भीतर से हम अनभिज्ञ हैं तब हम बाहर की वस्तु से सुख होता है ऐसा समझ लेते हैं और आश्चर्य यह कि यह भूल इतनी गहरी अंत: करण में बैठ जाती है कि फिर पूरी जिंदगी भी इसी भूल में गुजर जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। अत: हम सभी धर्म को अंत: करण से करें तभी हम सुख शांति को पाकर समृद्ध होकर अपना जीवन सफल कर सकते हैं।

आगम ज्ञान

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

जिन्हें
आत्मरमणी सुहाती है,
वे पररमणी से
परे हो जाते हैं।
युगपत उपयोग
सम्भव नहीं दोनों का
परम्परा से
एक का रमण

स्वर्ग-मोक्ष
दूसरे का
नरक-त्रिर्यंच रूप।
अनन्त संसार,
दोनों का फल
यही है-
आगमानुसार

रेशम में निहित हिंसा

हिंसा आज धीरे-धीरे हमारी जिन्दगी का हिस्सा बनती जा रही है। हिंसा ने नई-नई शक्लें बना ली हैं। कभी वह हमारे भोजन में परिव्याप्त होती है तो कभी वह हमारे परिधान में। रेशमी वस्त्र पहनावा वर्तमान में बेहद फल-फूल रहा है। फैशन की दौड़ में सभी आगे निकल जाना चाहते हैं। पर यह जानने की कोशिश नहीं करते कि रेशम बनता कैसे है। रेशम एक हिंसक उत्पादन है। अनगिनत जीवों के प्राणों की बलि चढ़ाकर तैयार किया जाता है रेशम।

आइये जाने रेशम कैसे बना- आज से चार हजार वर्ष पूर्व चीन की रानी सीलिंग ककून की माला पहने थीं। ककून बहुत खूबसूरत और हल्के होते हैं जिनके बीच से धागा पिरोकर माला बनाई जाती हे। जब रानी उबलती चाय अपने प्याले में डाल रही थी तब उसकी माला के कुछ ककून उसमें डूब गये रानी ने देखा उनमें से स्निग्ध अटूट, खूबसूरत रेशा निकल रहा है, वह स्तब्ध रह गई उसने उसे गौर से देखा रेशा मजबूत कोमल था, सुन्दर था। उसने उसकी खेती शुरु कर दी। बाम्बिक्स मोरी जाति के लार्वा से रेशम बनता है। पहले इसके छोटे-छोटे रेशों को संचित किया जाता है फिर इन अण्डों को शहतूत के पत्तों पर रखा जाता है। अण्डों में से इल्लियाँ निकलती हैं ये इल्लियाँ ४५ दिन में बढ़ जाती हैं। भ्रूण! प्यूपा एक मोटे ककून में विकसित हो जाता हे। ककून को उबलते पानी में डाला जाता है। फिर ककून से निकले तागों को फिरकियों में लपेट दिया जाता है। भारत में जितना कोसा तैयार होता है उसका ५० प्रतिशत बस्तर में पैदा होता है। बस्तर के आदिवासी रेशम केन्द्रों को ककून उपलब्ध कराते हैं ककून फ्रेंन्चभाषा का शब्द है जिसका अर्थ है अण्डे का घोंघा या अच्छादन। इसे हम रेशमी पेटी भी कह सकते हैं। सूती वस्त्र आरामदेह व स्वास्थ्य प्रद होते हैं सस्ते भी होते हैं। पर फैशन की दौड़ में व्यक्ति क्रूर हिंसा में लिप्त हो गया है। स्त्रियां रेशमी साड़ियाँ पहिन सुसज्जित होती हैं पर यह नहीं विचारती कि कितनी मौतों को वह अपने शरीर पर ओढ़कर चल रही हैं।

शाकाहार से तात्पर्य केवल शुद्ध व सात्विक आहार ही नहीं है। हमारा रहन-सहन, आचार-विचार, आचरण में सातिवकता ही हमें पूर्ण शाकाहारी बना सकती है। रेशम की एक साड़ी का वजन औसतन ३४५ ग्राम होता है जिसमें लगभग ३,४६१,५३८४६७ रेशम कीटों की जाने बुन दी जाती है। रेशम जिस बेरहमी से तैयार होता है उसे देखना स्वयं एक हिम्मत का कार्य है। ककून के अंदर स्थित जीवित पतंगों को पानी में उबाल देना कितना दर्दनाक होता होगा। भगवान महावीर ने कहा है 'जियो और जीने दो' चींटी से इन्सान तक की आत्मा बराबर है। सबको जीने का अधिकार है। रेशम उत्पादन में होने वाली व्यापक हिंसा को ध्यान में रखते हुए रेशम के उपयोग को बन्द करना चाहिए। आत्म जागरण में ही सबकी उन्नति छुपी है रेशम पहनना कोई अनिवार्यता नहीं है। शौक व दिखाने के लिए इतनी हिंसा। हम सभी ये जानते हैं कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। हर मनुष्य को बड़ा बनना है। प्राणियों की प्राण रक्षा करना है। यही हमारा मानव धर्म है।

अहिंसा परमो धर्मः

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.org.**
2. **www.ganacharyaviragsagarwixsite.com/viragsagarji**
3. **Facebook : viragvani**
4. **Email : viragsagarji@gmail.com**
5. **youtube : upsargvijetaguru virag**
6. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

भगवान ऋषभदेव और वास्तु विद्या का उद्भव

डॉ. सोहनलाल देवोत

अपनी पुत्री ब्राह्मी को अक्षर विद्या तथा सुंदरी पुत्री को गणित विद्या का ज्ञान दिया। भगवान ने अपने बड़े पुत्र भरत के लिए अत्यंत विस्तृत बड़े-बड़े अध्यायों से स्पष्ट कर अर्थशास्त्र और संग्रह सहित नृत्य शास्त्र पढ़ाया था। पुत्र वृषभसेन के लिए जिसमें सौ से अधिक अध्याय हैं ऐसे गन्धर्व शास्त्र का व्याख्यान किया था। अनन्तविजय पुत्र के लिए नाना प्रकार के सैकड़ों अध्यायों से भरी हुई चित्रकला संबंधी विद्या का उपदेश दिया और लक्ष्मी या शोभा सहित समस्त कलाओं का निरूपण किया और इसी अनंतविजय पुत्र के लिए उन्होंने सूत्रधार की विद्या तथा मकान बनाने की विद्या का उपदेश दिया। इस विद्या के प्रतिपादक शास्त्रों में अनेक अध्यायों का विस्तार तथा उसके अनेक भेद थे। बाहुबली पुत्र के लिए उन्होंने कामनीति, स्त्री-पुरुषों के लक्षण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, घोड़ा हाथी आदि के लक्षण जानने के तंत्र और रत्न परीक्षा आदि के शास्त्र अनेक प्रकार के बड़े-बड़े अध्यायों के द्वारा सिखलायें। इस विषय में अधिक कहने से क्या प्रयोजन है? संक्षेप में इतना ही बस है कि लोक का उपकार करने वाले जो-जो शास्त्र थे भगवान आदिनाथ ने वे सब अपने पुत्रों को सिखलाये थे।

इस प्रकार आदि ब्रह्मा, विश्वकर्मा भगवान ऋषभदेव द्वारा उपदेशित विद्याओं में शिल्प के अंतर्गत वास्तु विद्या पर विषय के परिप्रेक्ष्य में विचार करना विषय के साथ अधिक न्यास संगत होगा। लोक कल्याणकारी भगवान ऋषभदेव वास्तु विद्या को जन सामान्य की भलाई के लिए उपदेशित किया था, परंतु वर्तमान समय में इसे विस्मृत कर दिया गया है। अज्ञानतावश मनुष्य ने मनमाने ढंग से अपने आवासों को निर्मित किया। फलस्वरूप आज अशांत और बाधाओं से भरा जीवन जी रहा है। यही क्या प्राचीन समय में वास्तु शास्त्र या शिल्प शास्त्र के अनुसार बने मंदिरों में मनमाने ढंग से परिवर्तन कर उसका मन माफिक आधुनिकीकरण करता जा रहा है। जिन मंदिरों में गलत निर्माण कर परिवर्तन किए गये हैं वहाँ की समाज, वहाँ के ट्रस्टी भले ही कहें या ना कहें पर अपने आपसे पूछ सकते हैं कि वे कितने मानसिक रूप से अशांत हैं।

आज भाई-भाई में पिता-पुत्र में, पति-पत्नि में, अड़ोसी-पड़ोसी में, एक समाज से दूसरे समाज में कभी बात को लेकर कभी धन को लेकर, कभी जमीन को लेकर, कभी धर्म को लेकर आये दिन लड़ाई-झगड़े आदि के ताण्डव बढ़ते ही जा रहे हैं और इसमें परिवार, समाज, गाँव और राष्ट्र आदि में अशांति और विघटन आदि हो रहे हैं। उसके मूल कारण की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। हमारी भावनाएँ इतनी अनैतिक क्यों होती जा रही है? इसके लिए कौन उत्तरदायी है? वर्षों के अध्ययन मनन और चिंतन से में इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि संपूर्ण विश्व का आधार स्त्रोत ऊर्जा है। उक्त ऊर्जा को हम पुद्गल और आत्मा या जीव में ही समाहित मानते हैं। पुद्गल और आत्मा को समझना पहले जरूरी होगा।

पुद्गल- इसकी दार्शनिक व्याख्या में न जाकर केवल मोटे तौर पर यह समझ लेना ही पर्याप्त है कि जिसे देखकर, छूकर, चखकर, सूंघकर, सुनकर जाना जाये वह पुद्गल है। पुद्गल की परिधि में हमारी पृथ्वी तथा उस पर स्थित समस्त जड़ एवं चेतन प्राणी शरीर सहित एवं सौरमण्डल आता है।

आत्मा- यह निराकार है। अनन्त शक्ति का स्वामी होने के बाद भी पुद्गल रूपी शरीर एवं अन्य पुद्गल के माध्यम से ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन करती है।

आत्म और पुद्गल के सामान्य अर्थ को समझने के अनन्तर हम देखते हैं कि मनुष्य जन्म के बाद पृथ्वी, सौर मण्डल एवं अपने पूर्व संचित कर्मों के साथ ही उचित-अनुचित पुरुषार्थ के प्रतिफल अपना विकास वा विनाश करते हुए अपने जीवन को आगे बढ़ाते अन्त में मृत्यु को प्राप्त होता है। मनुष्य एक न एक दिन मृत्यु को प्राप्त होता ही है, पर यहाँ महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि मृत्यु प्राप्त होने से पूर्व उसने कितना सुख शांति का अनुभव करते हुए अगले जन्म की उत्तम भूमिका का निर्वहन किया है।

अस्तु सुख शान्ति पूर्ण जीवन एवं अगले जन्म की उत्तम भूमिका के निर्माण का प्रथम आधार पृथ्वी है जिस पर हमारा आवास अर्थात् रहने का स्थान, मकान, महल आदि कर्मक्षेत्र अर्थात् ऑफिस, कार्यालय, दुकान, कारखाना आदि एवं तीसरा क्षेत्र है हमारे आराधना स्थल अर्थात् मंदिर, देवालय आदि। जिनकी जमीन की ऊँचाई, निचाई, ढलाना तथा इन पर हुए निर्माण से मनुष्य को ऊर्जा मिलती है। पृथ्वी में प्रवाहित हो रही ऊर्जा के संतुलन से विकास होता है और शान्ति मिलती है।

असंतुलन अर्थात् गलत निर्माण समस्याएँ, संघर्ष और विनाश का कारण बनते हैं। हम कह सकते हैं कि पुद्गल से उत्पन्न या ग्रहण की गई ऊर्जा से जीवों में संतुलन या असंतुलन तथा जीवों द्वारा उत्पन्न या ग्रहण की गई ऊर्जा से जीवों में असंतुलन या संतुलन ही वास्तु शास्त्र का मुख्य अध्ययन क्षेत्र है। अर्थात् वास्तु विद्या पुद्गल और आत्मा के संतुलन का विज्ञान है। वास्तु विद्या प्रकृति से प्रकृति का एवं प्रकृति से जीव के संतुलन का विज्ञान है।

इस प्रकार सौर मण्डल के ग्रह और हमारे आवासों, कर्मक्षेत्र व आराधना स्थलों के बची संतुलन की शिक्षा वास्तु विज्ञान देता है। यदि हम प्रकृति के संतुलन का ध्यान नहीं रखेंगे तो प्रकृति हमारा संतुलन बिगाड़ देगी। असंतुलित वास्तु की प्रकृति किस तरह हानि पहुँचाती है उस संबंध में प्रथम हम यहाँ कुछ बिंदुओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालेंगे।

वास्तु शास्त्र पर प्रथम एक झलक- १. उत्तर (नार्थ)- उत्तर की ऊँचाई गृह स्वामी को खाली हाथ कर देती है। उत्तर सीमा से जुड़कर तथ प्रथम मंजिल के दक्षिण में ढ़लाई बरामदा हो तो उस घर की स्त्रियाँ लकवे से पीड़ित होगी।

२. ईशान (नार्थ-ईस्ट)- इस दिशा में त्रुटि होने पर संतान विकलांग होगी। ईशान भाग ऊँचा होने पर धन हानि के साथ संतान हानि होगी। इस भाग में शौचालय या सेप्टिक टैंक होने पर मानहानि, धन हानि तथा संतान हानि होगी।

३. पूर्व (ईस्ट) पूर्व दिशा ऊँची हो तो गृह स्वामी दरिद्र हो जाएगा। संतान, अस्वस्थ तथा मंद बुद्धि होगी। पूर्व दिशा में निर्मित मुख्य द्वार या अन्य द्वार आग्नेयाभिमुखी हो तो दारिद्रय, अदालती विवाद, चोरी तथा अग्नि का भय बना रहेगा। पूर्वी भाग गर्भगृह की अपेक्षा ऊँचा हो तो अशान्ति आर्थिक व्यय और कर्ज बना रहेगा। पूर्वी भाग में कूड़ा कर्कट पत्थरों के टोले, मिट्टी के टीले आदि हो तो धन और संतान की हानि होगी।

४. आग्नेय (साउथ-ईस्ट) ईशान और वायव्य की अपेक्षा आग्नेय का नीचा होना अग्नि भय, शत्रुभय तथा स्वयं में दुष्ट प्रकृति का प्रादुर्भाव बढ़ाता है। आग्नेय में कुआँ, ट्यूबवेल, भूमिगत पानी टैंक, सेप्टि टैंक आदि होने पर गृहिणी और संतान अस्वस्थ रहेंगे। घर में विवाद होगा। पूर्व आग्नेय कोने पर सड़क की मार मकान मालिक के लिए अर्थ एवं स्वास्थ्य हानि करती है।

५. दक्षिण (साउथ) दक्षिण नीचा एवं उत्तर ऊँचा होने पर आर्थिक स्थिति बिगड़ती है। ऐसी स्थिति में बना मकान बिक जाता है। दक्षिण भाग में अधिक खाली जगह होने से आर्थिक हानि, झगड़े तथा स्त्रियाँ के लिए अशांति के कारण होते हैं।

६. नैऋत्य (साउथ-वेस्ट)- नैऋत्य का नीचा होना दुर्घटनाओं तथा मृत्यु का निमंत्रण देने के समान है। दक्षिण नैऋत्य आग बढ़ा हुआ हो तो स्त्री को अस्वस्थ और चरित्र हीनता का शिकार बना देता है पश्चिम नैऋत्य का आगे बढ़ा हुआ हो तो पुरुष दुश्चरित्र होकर असामयिक मृत्यु का शिकार बनता है। दक्षिण नैऋत्य तथा पश्चिम नैऋत्य के कोने पर सड़क की मार अर्थ हानि एवं संतान हानि का प्रतीक होती है। नैऋत्य में कुआँ, सेप्टिक टैंक, टयूबवेल आदि होने पर उस पर के व्यक्ति दीर्घ व्याधियों, अर्थ संकट एवं मानसिक अशान्ति से ग्रस्त रहते हैं।

७. पश्चिम (वेस्ट)- पश्चिम में विशाल खुला स्थान, पुरुषों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। पश्चिम में मुख्य द्वार हो, पूर्वी दिशा को हद बनाकर पश्चिम में ढलाऊ बरामदा होने पर एवं प्रथम मंजिल पर भी ढलाऊ बरामदा होने पर पुरुष लकवे का शिकार होंगे। पश्चिम भाग में स्थित द्वारा नेऋत्य दिशाभिमुखी हो तो दीर्घ व्याधियाँ अकाल मृत्यु एवं धन हानि होती है।

८. वायव्य (नार्थ-वेस्ट) चहार दीवारी का उत्तर वायव्य आंगे बढ़ा हो तथा उसे ढक दिया गया हो तो चोरी, अग्नि भय के साथ उसके निवासियों को स्थान भ्रष्ट करती है। वायव्य में कुआँ, या सेप्टिक टैंक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। वायव्य दिशा का ढलान होने पर संपन्न एवं धनाढ्य व्यक्ति भी अर्थ संकट का सामना करेगा।

इस प्रकार वास्तु विद्या का वास्तु विज्ञान में पृथ्वी पर स्थित मनुष्य उसके आवास, कार्य क्षेत्र तथा आराधना स्थल एवं सौर मण्डल में स्थित ग्रह इन तीनों के बची प्रकृति संतुलन के दिशा निर्देश द्वारा सुख का मार्ग बतलाया है। आदि ब्रह्मा, विश्वकर्मा भगवान, ऋषभदेव द्वारा उपदेशित इसे पूर्वाचार्यों ने पूर्ण प्रगतिगत नियमों पर आधारित पाया है। अतः यह राजमार्ग हम सबके लिए खुला पड़ा है। आओ, हम सब विषय वस्तु का विस्तृत अध्ययन कर उस पथ पर चल कर पूर्ण प्राण ऊर्जा से संपन्न बन भोग से योग पथ द्वारा अपनी आत्मा का कल्याण करें।

शंका-समाधान

(१)आचार्य शुकमाल नन्दी जी महाराज- आचार्य श्री दसवें गुणस्थान के बाद कषाय समाप्त हो जाती है तो क्या उन्हें कर्मबंध नहीं होता है?

पू. गणाचार्य गुरुवर- होता है लेकिन उसकी स्थिति मात्र एक समय की होती है और उस जधन्य स्थिति को गिनती में नहीं लिया गया। दो आदि समय में गिनती प्रारंभ की जाती है।

२. आचार्य सुकमाल नन्दी जी महाराज- सिद्धान्त वाचना में क्या श्रावक बैठ सकते हैं?

पू. गणाचार्य गुरुवर- प्रधानता साधुओं की रहती है लेकिन श्रावक बैठ जाये तो उसे उठाया नहीं जाता। जंगलों में कितने पशु-पक्षी, मक्खी मच्छर आकर बैठ जाते होंगे तो ये तो मनुष्य है। हमारे यहाँ धवला/पुस्तक की १६ जयधवला की ७ वाचानाएँ हो चुकी हैं सभी माता जी महाराज ने बड़े मनोयोग से पढ़ा और उसके चार्य आदि बनाकर विषय को याद भी किया।

३. **आचार्य सुकमाल नन्दी जी महाराज**- आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी क्या विदेह क्षेत्र गये थे?

पू. गणाचार्य गुरुवर- इस विषय में दो मत हैं। किन्ही विद्वानों की अपेक्षा वो विदेह क्षेत्र गये थे। रास्ते में उनकी पिच्छि गिर गई थी तब उन्होंने गृद्ध पक्षी के पंख लिये थे जिससे उनका नाम गृद्धच्छिाचार्य पड़ा और विदेह क्षेत्र में वहाँ के चक्रवर्ती ने उन्हें हाथ पर उठाया तब उनका नाम ऐलाचार्य (इलायची के जैसे) पड़ा था। आदि आदि बाते प्राप्त होती है। तो वहीं दूसरे विद्वानों की तर्क भी रहती है वे कहते है कुन्दकुन्दाचार्य विदेह क्षेत्र नहीं गये यह कथन भक्ति की भाषा का है क्योंकि इतने बड़े महान आचार्य जिन्होंने ८४ पाहुड़ लिखे प्राकृत भक्तियों लिखी हैं यदि वे विदेहक्षेत्र जाते तो निश्चित वे श्रीमंधर भगवान की भक्ति लिखते शास्त्रों में उनका नाम देते समवशरण में प्रत्यक्ष दिव्यध्वनि सुनने का कहीं न कहीं अवश्य उल्लेख करते लेकिन ऐसा उल्लेख कहीं नहीं किया गया अपितु समयसार के मंगलाचरण में उन्होंने श्रुतकेवली का कहा हुआ ऐसा कहा है। इसलिए यह विषय विचारणीय है अथवा जब तक कोई प्रमाणित प्रमाण नहीं मिलता तब तक दोनों कथन हमें मान्य है।

४. आचार्य सुकमालनंदी जी महाराज- आचार्य भगवन तेरह, बीस पंथ के विषय में आगम में क्या उल्लेख है साधुओं को क्या करना चाहिये?

पूज्य गणाचार्य गुरुवर- तेरह, बीस पंथ किसी ग्रंथ के शब्द नहीं हैं कोई भी प्राचीन आचार्यों ने ग्रंथों में इन पंथों का उल्लेख नहीं किया। ये तो आम लोग अथवा पंडितों का कथन है लेकिन हम आगम को देखें उसमें जो उल्लेख है वैसा ही करें। दूसरी बात जिस देश में जो पद्धति है वहाँ वैसा ही करना चाहिए क्योंकि एक कहात है 'यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं न कथनीयं न करणीयं' हमारे गुरुदेव आचार्य विमलसागर जी, सन्मति सागर जी कहीं भी हटाग्रह नहीं करते थे तो अपनी भी वैसी ही पद्धति चल रही है।

५. आचार्य सुकमाल नंदी जी- आपके संघ में आर्यिकाओं की पूजन होती है।

पू. गणाचार्य गुरुवर- हाँ यह हमारे गुरु संघ की परम्परा है प्राचीन आचार्यों ने संघों में भी यही परम्परा थी तथा आगम में भी इसका उल्लेख है इसलिए हमारे संघ में आर्यिकाओं की पूजन एवं ऐलक, क्षुल्लक के भी पाद-पृच्छल ओर अर्घ्य चढ़ता है ऐसा ना होने पर वे चौके से लौट आते हैं।

आचार्य सुकमाल नंदी जी महाराज- भगवान की मूर्ति गाड़ी में चलाने में दोष है।

पू. गणाचार्य गुरुवर- हाँ जब हम पैदल चलते हैं तो भगवान को भी पैदल लेकर चलना चाहिए।

आचार्य सुकमाल नन्दी जी- अरे! अपन सब ही चैत्यालय है पू. आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा है-

चेइयबधं मोक्खं दुक्खं सुक्खं च अप्पयं तस्स।
चेहहरे जिणमग्गे छक्कायहियंकरं भणियं।। ८।।

रत्नत्रय से सम्पन्न आत्मा चैत्य है और उनका शरीर चैत्यालय है।

आचार्य सुकमाल नन्दी जी महाराज- बिना दर्शन के साधु आहार के लिए उठ सकते है?

पू. आचार्य भगवन विरागसागर जी महाराज- साधु भाव सहित भगवान की स्तुति वंदना कर लेते हैं उनका ध्यान करते हैं फिर भी संभवत: आस-पास से प्रतिमा आ जाती अन्यथा कोई एक रस आदि को छोड़ देते हैं।

पूज्य गणाचार्य गुरुवर- हाँ लेकिन असमर्थता होने पर ही समर्थ होने पर वे पैदल ही चलते है विशेष परिस्थिति में गुरु आज्ञा की छूट होती है।

पंथवाद समाज तोड़ने का महामंत्र

श्रमण मुनि विशेषसागर

हिंगोली (महा) प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी गुरुदेव के धर्म प्रभावक सुशिष्य प.पू. श्रमण मुनि श्री विशेषसागर जी महाराज ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा भगवान महावीर स्वामी का धर्म भोग का न ही योग का है, चर्चा का नहीं चर्या का है, कथनी का नहीं करनी का, लड़ने-झगड़ने करने का नहीं अपितु खण्ड-खण्ड समाज को अखण्ड करने का है, खण्ड-खण्ड समाज को एक सूत्र में बांधने का है, रात को खाने और खिलाने का नहीं दिन में खाने और खिलाने का है।

पू. मुनिश्री ने आगे कहा एक समय वह थाजब मंदिरों में चंदन व केशर की खुशबू आती थी पर आज पंथवाद की बदबु आ रही है, राग-द्वेष की बदबु आ रही है। पंथवाद आतंकवाद है, पंथवाद अखण्ड समाज को खण्ड-खण्ड करने का अखण्ड समाज को तोड़ने का महामंत्र है। शास्त्रों में उल्लेख आता है कि दिग. संतों की साधना को प्रभाव से जन्म जात शत्रु भी बैर भाव भूल जाते है और आज देखा जा रहा है दिगम्बर संत भी कैंची का कार्य कर रहे। समाज को तोड़ने का उपदेश दे रहे। एक व्यक्ति मेरे पास आया मैंने उनसे पूछा आप मंदिर जाते हो, उन्होंने कहा नहीं! मैंने पुन: पुछा क्यों नहीं जाते उस व्यक्ति ने कहा गलती क्षमा करें। हम पहले प्रतिदिन मंदिर जाते थे अभिषेक करते थे, नगर में कोई भी साधु आते उनको लेने वह उनके साथ विहार में जाते थे। मैंने कहा अब क्या हो गया, व्यक्ति घबराते हुए कहा महाराज श्री मुझे समझ में नहीं आता आगम की बात माने कि पंथवाद साधुओं की बात माने। एक साधु कहते ऐसा करना चाहिए, एक कहते ऐसा नहीं करना चाहिए, एक कहते ऐसा करने से पुण्य होता, एक कहते पाप होता। भगवन् इसलिए हम कान पकड़ लिये अब मुझे मंदिर नहीं जाना। मैंने कहा भैया आप आगम की मानिये और जो साधु कहे ऐसा करने से पाप होता है आप उन्हें हाथ जोड़कर प्रार्थना करें भगवन् ऐसा कौन से शास्त्रों में लिखा है आप बतायें फिर हम आप की बात मानेंगे।

इस निर्ग्रंथ परम्परा में आचार्य भगवन् धरसेन, पुष्पदंत, भूतवली, कुन्दकुन्द स्वामी जैसे महानाचार्य हुए जिन्होंने अपनी साधना काल से समय निकाल कर ग्रंथो का लेखन किया, ग्रंथ लिखे पर अपना कोई पंथ नहीं बनाये, निग्रंथों का कोई पंथ नहीं होता वे तो मोक्षपथ के पथिक होते है। पू. गुरुदेव आचार्य भगवन विरागसागर जी गुरुदेव कहते हैं कि संत किसी पंथ और परम्परा से न बंधते है और न बांधते है। वे तो संसार से मुक्त होने के पथ पर चलते हैं और सबको चलाते हैं।

पू. मुनिश्री ने आगे कहा तीर्थंकरों ने भी अपना कोई पंथ नहीं बताया पर आज देखा जा रहा है उनके भक्त तीर्थंकरों में भी भेद डाल दिये यथा (जैसे) श्री १००८ आदिनाथ दिग.जैन वीसपंथी मंदिर श्री १००८ आदिनाथ दिग. जैन तेरह पंथी मंदिर। पंथवाद समाज को तोड़ता है और आगम वाद समाज को जोड़ता है। आज जितना नुकसान श्रावकों से नहीं उससे अधिक नुकसान श्रमणों से है।

विनयांञ्जली

वाणी में सर्व द्वादशांक का सार है

भव्य बन्धुओ हम सभी को चौरासी लाख योनियों में श्रमण करते हुए। अनंत काल बीत गये हमें देव शास्त्र गुरु का सान्निध्य नहीं मिल पाया। वर्तमान में भी यदि हम इन गुरु के उपदेश को आत्मसात् नहीं कर सके तो उसी प्रकार पुन: भ्रमण करना पड़ेगा। हमारे बीच तीर्थंकर नहीं हैं लेकिन जो आप और हमारे बीच विराजमान है ये तीर्थंकर से कम नहीं है। इनकी वाणी में सर्व द्वादशांग का सार है जो हमें कई शास्त्रों के स्वाध्याय से भी प्राप्त नहीं हो सकेगा। और ज्यादा क्या कहें हमारा और आप सिकंदरा वालों का निश्चित ही पुण्य का उदय है जो हमें गुरुदेव के दर्शन प्राप्त हुये। अंत में गुरुदेव के चरणों में नमोस्तु-३

श्रमण मुनि शुभम्कीर्ति जी महाराज

प्रेम करुणा का नीर भरा है

सी.एल. जैन कह रहे थे समय कम है लेकिन सोचो जब एक बच्चा अपने पिता से ६ माह बाद मिलता है तो उसे बेचेनी होती है कि मैं कब बात कर लूँ तो मैं तो अपने गुरु से ६ वर्ष बाद मिला हूँ मुझे ६ मिनिट में कैसे संतुष्ठी होगी।

राम के आंगन पधारने पर शबरी को जितनी खुशी हुई होगी। उससे भी अधिक खुशी आज मुझे और मालवीय नगर वासियों को पूज्य गुरुदेव के पधारने पर हो रही है।

यह वही धरा है जहाँ ६ साल पहले दुर्भाग्य से मुझे गुरु से विछड़ना पड़ा था। आज सौभाग्य से इसी जयपुर की धरती पर पुन: मिलन हो गया।

आपके सामने विराजे पूज्य गुरुदेव कोई सामान्य आचार्य नहीं है ये तो श्रमणसंस्कृति को अमूल्य धरोहर हैं। मैंने जयपुर वालों को और जहाँ भी जाता हूँ वहाँ डंके की चोट पर कहता हूँ कि यदि प्रेम वात्सल्य के धनी और शिष्यों से प्रेम करने वाले गुरु कोई हैं तो वे मम गुरु गणाचार्य श्री विरागसागर जी है। आपने हम जैसे छोटे शिष्यों की गल्तियों को माफ करके हृदय की विशालता का जो परिचय दिया है। उसका मैं हमेशा ऋणी रहूँगा। मेरी गुरुदेव से बार-बार प्रार्थना है कि सिद्धार्थ नगर को फल की आहार चर्या दें, वहाँ के पंचकल्याणक का मंगलाचरण आप एवं चतुर्विध संघ के श्री चरणों से हो क्योंकि इतनी बड़ी इबारत ऐसे ही खड़ी नहीं होते उसमें नींव का पत्थर जरूरी होता है फिर पथरिया वाले गुरुवर का आशीर्वाद मिल जाये तो बिगड़े कार्य भी समल जायेगे।

आप में प्रेम करूणा का अपार जल भरा है तभी तो इतना विहार करने पर भी चेहरे पर मुस्कान है हम जैसे साधु तो इतना विहार कर ही नहीं पाते हैं। आज मुझे गुरु दर्शन, गुरु मिलन की अपार खुशी तो हुई ही है साथ ही यह भी खुशी हुई कि आप सभी ने गुरु भक्ति का अनूंठा परिचय दिया है। वैसे ही जयपुर की धरा गुरुदेव के चरण रज से पवित्र है वहाँ का हर व्यक्ति गुरुदेव का परम भक्त है क्योंकि यति सम्मेलन युग प्रतिक्रमण जैसा महान ऐतिहासिक कार्य गुरुवर ने इस धरा पर किया था।

श्रमण मुनि विश्रांतसागर जी महाराज

युगों -युगों तक जीवंत रहेंगी

अनादि अनिधन तीर्थंकरों की पम्परा में वर्तमान धर्म प्रवर्तक भगवान ऋषभदेव से प्रभु महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थेश हुए तदुपरांत नक्षत्रों की भांति दिगम्बरत्व के आकाश को प्रकाशित करने वाले अनेकानेक आचार्यगण हुए। जिनमें अध्यात्म के धरातल पर विचरने वाले कुन्दकुन्द स्वामी ने जैनधर्म की ध्वजा को आकाश की क्षितिज तक पहुचाया था। ८४ पाहुडों की रचना कर जैनागम भण्डार को समृद्धशाली किया था। वर्तमान में उन ८४ रत्नों की माला में से कुछ ही रत्न उपलब्ध हैं उनमें से कुछ ऐसे भी रत्न रहे जिन्हें किसी जौहरी ने नहीं तराशा अर्थात् जिन ग्रंथों पर आज तक किन्हीं आचार्यों ने कलम नहीं चलाई वे थे वारसाणुपेक्खा, रयणसार, शीलपाहुड एवं लिंग पाहुड इन ग्रंथों पर अभी तक किसी दिगम्बराचार्य की टीका

उपलब्ध नहीं थी। जैनागम में यह कभी नग विहीन हार की तरह प्रदर्शित हो रही थी। तभी २१वीं सदी के ज्योतिपुंज, बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य, श्रमणश्रमणी संघाधिनायक, जैनागम के प्रकाण्ड विज्ञान साहित्य महोदधि परम पूज्य राष्ट्रसत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज की सुभौम्य दृष्टि इस ओर पहुंची।

पूज्य गुरुवर की नजर पहुंचना ही कार्य की सफलता है। श्रवणबेलगोला की ओर चलते हुए विहार में नागेवाडी २००४ से पूज्य श्री ने सर्वोदया संस्कृत टीका का शुभारंभ किया और अल्प दिनों में ही ११०० पृष्ठीय टीका लिखकर बुम्बई बोरीवली में पूर्ण। इसी प्रकार रत्नत्रय वर्धिनी संस्कृत टीका अंकलेश्वर पार्श्वनाथ क्षेत्र से शुभारंभ कर गांधीनगर गुजरात २००९ में महावीर निर्माण महोत्सव पर बड़े ही धूमधाम से १३०० पृष्ठीय टीका का लेखन पूर्ण किया। शील पाहुड पर भी संस्कृत टीका लेखन पूर्ण हो चुका है तथा लिंगापाहुड पर संस्कृत टीका लेखन में आपकी लेखनी निरंतर गतिमान हैं मुझे विश्वास है निकट समय में ही ये दोनों टीकायें भी इतिहास की साक्षी बनेगी।

श्रमणों के सरताज पूज्य गणाचार्य श्री भगवन् ने इन बृहद् संस्कृत टीकाओं का श्रृवन कर, जैन वाङमय में साहित्यों की भारी कमी को पूर्ण ही नहीं किया, अपितु आम जगत में जैनाचार्यों के गौरव को वृधिंगत किया है।

गणाचार्यश्री के द्वारा श्रृजित ये महान टीकाएँ इस धरातल पर इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित हो युगों-युगों तक जीवंत रहेगी। एक-एक शब्द से भव्यों की अज्ञानता को हरने वाली इन टीकाओं ने पूज्य आचार्य कुन्दकुन्द देव की साहित्य परम्परा की बहुत बड़ी पूर्ति की है अत: आपको कुन्दकुन्द देव के भ्राता कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

आपका ज्ञान उस सागर की तरह है जिसके गर्भ में रत्नों की कोई थाट नहीं होती ठीक वैसे ही आपमें आध्यात्मिक, व्यवहारिकता, न्यायशीलता और आगमिक एवं अनेकों भाषाओं का गहरा ज्ञान है जो इस युग में अत्यंत दुर्लभ है।

हे श्रमणाधिराज! आगम एवं अध्यात्म के रहस्यों में सराबोर रहने वाले आप कैवल्यज्ञान लक्ष्मी के साथ मोक्ष लक्ष्मी का शीघ्र ही वरण करें। हम सभी शिष्य एवं भक्तगण भी आपकी बहिरंग लक्ष्मी स्वरूप समवशरण में गणधर के रूप में विराजमान हो अपना आत्म कल्याण करें।

पूज्य गुरुदेव के ५५ वें जन्म दिवस पर प्रभु वीर से यही प्रार्थना कि हमारे पूज्य गुरुदेव सदैव स्वस्थ रहते हुए इसी प्रकार भव्यजीवों को कल्याण के पथ पर लगाते रहें।

श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माता जी

दिल्ली अहिंसा स्थली से प्रारंभ हुई अहिंसा व्यसन मुक्ति शाकाहार, बेटी बचाओ, स्वच्छता अभियान की विशाल पदयात्रा

देश, राष्ट्र विश्व के परम हितैषी, जन मानस के कल्याण की भावना से ओत-प्रोत, परम पूज्य राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज ने भारत की राजधानी दिल्ली की अहिंसा स्थली से अहिंसा, व्यसनमुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ एवं स्वच्छता अभियान की विशाल पदयात्रा का शुभारंभ किया है जो जन मानस की श्रद्धा का केन्द्र, सिद्धात्माओं के चरण रज से पवित्र, शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर जी तक अनवरत गतिमान रहेगी जिससे रास्ते में मिलने वाले ग्राम शहर एवं प्रांतों में रहने वाले जैन-जैनेत्तर भाई आसानता से लाभान्वित हो सकें।

इसके पूर्व पूज्य गुरुदेव द्वारा लगभग २५ वर्षों से चातुर्मास काल में यह अभियान चलाया जा रहा था। जिससे मध्य प्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, विहार, झारखण्ड, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडू, पश्चिम बंगाल, गुजरात, दिल्ली, हरियाणा आदि प्रांतों के २५ लाख से अधिक जैन-जैनेतर बन्धु संकल्पित हो चुके है। साथ ही राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, कलेक्टर, एस.पी. शिक्षामंत्री, विधायक, पार्षद, पुलिस कर्मी आदि शासन प्रशासन वर्ग ने भी इससे प्रभावित हो सक्रीय योगदान दिया एवं दे रहे है।

पूज्य गणाचार्य भगवन् सदैव कहते हैं भगवान महावीर स्वामी, पुरुषोत्तम रामचंद्र जी श्रीकृष्ण जी सभी ने अहिंसा का उपदेश दिया है। दीवान अरमचंद जी ने उसी अहिंसा का पालन करते हुए शेर को जलेबी खिलाई थी। राष्ट्रपिता,

महात्मागांधी जी ने अहिंसा की लड़ाई से हिन्दुस्तान को आजाद कराया था वहीं हिन्दुस्तान आज मांस निर्यात का स्थान बना हुआ है। जिसमें घी-दूध की नदियाँ बहती थी वही हिदुस्तान प्राणी हत्या से खून की नदियाँ बहा रहा है। जहाँ प्रात: मंदिरों से घण्टा नाद की आवाज आती थी उसी देश में कत्लखानों में मारे जाने वाले लाखों पशुओं की चीत्कार सुनाई पड़ती है। सोचिये... यह मात्र देश की नहीं अपितु स्वयं हमारी क्षति है। पशुधन को समाप्त करना यानी देश को गरीबी की रेखा से भी नीचे गिराना है। अहिंसा को परम धर्म मानने वाले मोदी और योगी के शासन में भी यदि कत्लखाने बंद न हो सके तो हिंसा का ताण्डव कौन हटा पायेगा। अत: देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री इस ओर भी ध्यान दें क्योंकि मांस के अभाव से ही व्यक्ति शाकाहार को अपनायेगा और तभी सात्विक विचार उत्पन्न होगे, जिससे व्यसन मुक्ति स्वत: ही हो सकेगी। दूसरी बात सात्विक विचार वाला व्यक्ति बेटी बचाओ और स्वच्छता का निश्चित रूप से पालन करेगा।

मांसाहार व्यक्ति के अंदर एवं बाहर में सर्वत्र गंदगी फैलाता है अत: देश को वास्तविक स्वच्छ बनाने के लिए अहिंसाधर्म का पालन होना नितांत आवश्यक है। विराग गुरु का कहना है शाकाहारी रहना है-स्वच्छ भारत

श्रमणी आर्यिका विबोधश्री माता जी

होनहार शिष्य पर गुरुवर का वात्सल्य

संपूर्ण विश्व में तपस्वी सम्राट के नाम से विख्यात एक महान श्रमण जिन्हें अपने शरीर की सुध नहीं मात्र आत्म की चिंता थी। आत्म को बलिष्ठ बनाने में उन्होंने अपने शरीर को दुर्बल कर दिया था। वे थे परम पूज्य तपस्वी सम्राट, तपो मार्तण्ड आचार्य श्री १०८ सन्मति सागर जी महाराज जिनकी तेजभरी दृष्टि पड़ने मात्र से ही व्यकित कांप उठता था। उनसे बात तो दूर चरण छूने के लिए भी व्यक्ति को साहस जुटाना पड़ता था। श्रावकों की तो बात दूर महाराज, माताजी भी डरते हुए उनके पास जा पाते थे। ऐसे महान गुरु का वात्सल्य पात्र बनना निश्चित ही किसी महान पुण्य एवं सौभाग्य का प्रतीक है।

कटनी में पढ़ने वाले अरविंद, माँ श्यामा और पिता कपूरचंद के नेत्रों को सुख पहुंचाने वाले सपूत पर जब पूज्य आचार्य सन्मति सागर जी की दृष्टि पड़ी तो स्वत: ही हृदय से वात्सल्य नीर प्रवाहित हो उठा। नन्ही सी उम्र में भोली सूरत के पीछे जगमगाते वयक्तित्व विकास के विशाल आभा मण्डल को पारखी गुरुवर ने परख लिया तथा अविलम्ब होनहार शिष्य की भावनानुसार दीक्षा का मुहूर्त निकलवाया। श्रेष्ठ ज्योतिषी ने कहा- इस बालक के जीवन में यह सर्व श्रेष्ठ मूहूर्त है इस मूहुर्त में दीक्षा होने पर ये देश में विख्यात महान संत बनेंगे।

ज्योतिषी का बात सुनते ही गुरु आशीष का झरना फूट पड़ा दूसरे ही दिन विद्यार्थी अरविंद को क्षुल्लक पूर्णसागर जी बना दिया। १६ वर्ष के संघ में सबसे छोटे किन्तु गुरु आज्ञा, अनुशासन में सर्वश्रेष्ठ क्षुल्लक जी पर गुरुकृपा की दृष्टि भी उतनी ही श्रेष्ठ थी और आज तक है। सन् २००७ उदगाँव के चातुर्मास में ही स्वयं एक शिष्य के गुरु के प्रति कर्तव्य और गुरु का शिष्य के प्रति वात्सल्य देखने के साक्षी बन सके। जब पूज्य आचार्य सन्मति सागर जी अपने प्रिय शिष्य गुरुदेव विरागसागर जी को अपने हाथ से गंधोदक लगाते थे, अपने साथ में आहार को ले जाते थे, स्वयं खड़े रहकर उन्हें आहार चलवाते थे। प्रवचन आदि के समय प्रिय पुत्र की तरह उनके मुख मण्डल को निहारते रहते थे। उन सभी दृश्यों को देख हर व्यक्ति की आँखें खुशी से नम हो जाती थी। इतना ही नहीं चातुर्मास उपरांत जब भी कोई व्यक्ति पूज्य गणाचार्य गुरुदेव के पास से उनके पास जाता था तो उसे देखकर पूज्य तपस्वी सम्राट गुरुदेव बड़े खुश होते थे और प्रसन्नता से उससे बात करते थे।

पूज्य गणाचार्य गुरुदेव हम शिष्यों को समय-समय पर पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य भगवन् के पास दर्शनार्थ भेजते रहते थे। एक बार पूज्य गणाचार्य गुरुवर ने रजत सिक्का तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी के पास भेजा जिस पर एक ओर परम पूज्य आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर महाराज का चित्र और दूसरी ओर पूज्य आचार्य श्री सन्मति सागर जी का चित्र था। जब हम बहनों ने वह सिक्का उन्हें दिखाया तो वे बड़े खुश हुए। संघस्थ सभी माता जी महाराजों को वह सिक्का दिखाया फिर मंद-मंद मुस्कान विखेरते हुए बोले- गणाचार्य श्री को कहना इस पर एक ओर आचार्य आदिसागर जी अंकलीकर और दूसरी ओर विरागसागर का चित्र होना चाहिए।

सन् २०१० में जब दीक्षा के पूर्व गुरुदेव ने हम बहिनें और भैया लोग को आशीर्वाद लेने हेतु पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के पास भेजा तो प्रथम तो आचार्य विरागसागर जी के पास से दीक्षार्थी आये हैं इन शब्दों को सुनकर ही वो बड़े खुश हो गये। हम लोगों ने जब पूज्य गणाचार्य भगवन् की नमोस्तु बोलने के साथ उन्हें पत्र दिया तो उसे पढ़कर बड़े ही प्रमोद भाव में उन्होंने कहा- गणाचार्य ने इसमें लिखा है एक वस्तु लेना और एक वस्तु देना बताओं क्या लोगे और क्या दोगे। हम लोग उनकी बात न समझ पाने के कारण कुछ भी नहीं बोल सके। तब उन्होंने कहा- अरे इसमें लिखा है आहार ले लेना और आशीर्वाद दे देना। उनकी बात सुनकर वहाँ उपस्थित संपूर्ण संघ में हँसी का फब्बारा छूट पड़ा। सभी माता जी महाराज बोले- आज आप लोगों के आने एवं गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की खबर सुनने से बहुत दिनों बाद आचार्य श्री इतने खुश व प्रमोद भाव में दिख रहे हैं अन्यथा स्वास्थ्य अनुकूल न होने से उनके चेहरे पर गम्भीरता ही रहती है। उनके सामने किसी की बोलने की हिम्मत भी नहीं पड़ती।

उस दिन हम सभी दीक्षार्थियों ने उनका पड़गाहन भी किया और आहार भी दिया। दूसरे दिन प्रात: नव निर्मित ४१ फिट की विशाल अनंतवीर्य केवली भगवान की मूर्ति का पंचामृत अभिषेक हो रहा था तभी किन्हीं महाराज ने पूज्य आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज से कहा कि आचार्य विरागसागर जी की दीक्षार्थी बहने आई हैं वे अभिषेक नहीं करती हैं। तब आचार्य श्री ने कहा- विरागसागर जी आज्ञाशील है तो उनकी शिष्याएँ भी वैसी ही आज्ञाशील होगी। शायद इसी परीक्षा की दृष्टि से पूज्य तपस्वी सम्राट भगवन् ने हम लोगो को बुलाया और पूछा- अभिषेक करोगे क्या ? प्रथम तो हम लोग सोच में पड़ गये, फिर कहा- आपकी जैसी आज्ञा हो उन्होंने कहा जाओ करलो। उस समय सभी महाराज और माता जी की दृष्टि हम बहिनों के ऊपर थी, कि इन लोगों ने अभिषेक कैसे कर लिया और पूज्य आचार्य भगवन् सभी के चेहरे को देख मुस्कुरा रहे थे।

वापस आते समय पत्र देते हुए उन्होंने कहा- विरागसागर जी ने पत्र में लिखा था कि उदगाँव का पंचकल्याणक बड़े स्तर पर धूम-धाम से होना चाहिए था। तो उनसे कहना अभी पंचकल्याणक नहीं हुआ मैंने तो मात्र आकार शुद्धि की है, पंचकल्याणक तो उन्हें यहाँ आकर ही वो जैसा चाहते हैं वैसा करायेंगे तभी होगा।

उस समय उनकी बात सुनकर यही प्रतीत हुआ कि उनकी हार्दिक भावना गणाचार्य गुरुवर को पुन: उदगांव बुलाकर उनके सान्निध्य में पंचकल्याणक कराने की है।

यह है एक होनहार शिष्य के प्रति गुरुवर का वात्सल्य जिसे देख उस समय तो मन आनंदित होता ही था। आज भी उन क्षणों का स्मरण कर गौरव होता है कि मुझे एक आर्दश शिष्य और आदर्श गुरु की शरण प्राप्त हुई है जिन पर दोनों गुरुओं का अपूर्व वात्सल्य स्नेह था और आज भी है। आज पूज्य गुरुदेव के क्षुल्लक दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर जिनकी कृपा से मुझे ऐसे महान गुरु प्राप्त हुए उन परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज को बारम्बार नमोस्तु करती हूँ और साथ ही अंतस मन में विराजमान श्रद्धालोक के देवता पूज्य गणाचार्य गुरुदेव के पावन श्री चरणों में नत्मस्तक हो प्रार्थना करती हूँ कि आपके अंदर जैसी निश्च्छल गुरु भक्ति है वैसी ही हमारे अंदर में भी आये।

श्रमणी आर्यिका विसंयोजना श्री माताजी

संकट के साथी

जोर की आंधी चल रही थी। उस दिन जैसे ही आंधी थमी एक पत्ता मिट्टी के ढेले के पास गिरा। कुछ देर बाद तूफानी हवा चलने लगी, और पत्ता संकट में पड़ गया। उसने ढेले से कहा 'अच्छा दोस्त' अलविदा! अब यह आंधी मुझे तुमसे बहुत दूर ले जाएगी। ढेल बोला, में तुम्हें आंधी से बचा लूंगा और ढेला तुरन्त लुढक कर पत्ते के ऊपर आ गया। जब आंधी थमी तो बारीश शुरु हो गयी। 'अच्छा दोस्त' अब मुझे तुमसे जुदा होना पड़ेगा क्योंकि अब में बारिश में गलकर मिट्टी में मिल जाऊँगा। इस पर पत्ते ने कहा न मेरे दोस्त, मेरे रहते ऐसा नहीं होगा, मैं तुम्हे ढंक लेता हूँ फिर पानी की एक बूँद

भी तुम तक नहीं पहुँचेगी। इस बार पत्ते ने ढ़ेले को ढ़क लिया और इस तरह उसे गलने से बचा लिया। हम भी निभना और निभाना सीखे एक दूसरे के कष्ट को दूर करना सीखे यहाँ मानव की मानवता है।

श्रमणी आर्यिका विसुव्रता श्री माता जी

विनयांजली

पूज्य गणाचार्य भगवन् के सान्निध्य में अनेकों विद्वत संगोष्ठी समय-समय पर होती रहती हैं लेकिन यह प्रतिष्ठाचार्य की गोष्ठी मैंने प्रथम बार सुनी है। इस गोष्ठी में रखने को पूज्य गुरुदेव का यही उद्देश्य था कि सभी प्रतिष्ठाचार्य एकमत हो सभी पंचकल्याणकों में एक जैसी क्रियाएँ संपन्न हो ताकि समाज, देश, राज्य में जैन समाज का अच्छा संदेश पहुंचे

श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माता जी

रत्नत्रय से मालामाल है

प्रत्यक्ष विराजमान राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के श्री चरणों मं नमोस्तु, वंदन, अभिनंदन नमन, समस्त मुनिगणों को नमन। जीवन का अनेक उतार-चढ़ावकी भूमिका के अन्तर्गत आज हमें वह समय प्राप्त हुआ है जिसे सब स्वर्णिम अवसर कह रहे हैं। इस अवसर पर आपका आशीर्वाद मुझे प्राप्त हो जायेगा इसकी तो मुझे स्वयं में भी कल्पना नहीं थी इसलिए अनायाश दर्शन मिने से मुझे अपूर्व आनंद आ रहा है।

जब पता चला कि आपका संघ आ रहा है तो आशा जगी कि शायद दर्शन होगे लेकिन फिर खबर मिली कि लालसोट होकर जा रहे है तो मैंने प्रभु से प्रार्थना हे, प्रभु! क्या मेरा इतना भी सौभाग्य नहीं कि गुरुदेव के दर्शन हो जाये भगवान ने मेरी प्रार्थना सुनी और आज इतने बड़े साधु संघ को मंच पर बैठा देख मुझे आंतरिक प्रसन्नता हो रही है। ये गुरुदेव तीर्थ के समान है, पवित्र है, रत्नत्रय से मालामाल है जो मुझे चाहिए वो सब इन्हें प्राप्त है। अब मुझे क्या देकर जायेगे ये मुझे भी नहीं पता। मैं तो गुरु चरणों में यही प्रार्थना करूंगी कि मेरे अनंत भवों का अंत हो जाए। मुझे विश्वास आपकी कृपा से जरूरी मेरा भव भ्रमण समाप्त हो जायेगा ऐसी पवित्र भावना के साथ गुरु चरणों में नमोस्तु-३।

गणिनी आर्यिका विशुद्धमतीश्री माता जी

आप महान है

जो सरल होता है वह तरल होता है और जो तरल होता है वह बहता हुआ होता है वह शुद्ध होता है अर्थात् आचार्य श्री सरल भी है और बहते हुये भी है। नदी की तरह विहार भी करते रहते हैं तथा सरल होकर मुस्कुराते भी रहते हैं। बच्चों सी सरलता, पूर्वाचार्यों सा ज्ञान, प्रभु जैसा ध्यान, संघ के शिष्यों के लिये माता जैसी ममता वाले ओर संयम का पालन करने और करवाने में पाषाण जैसे कठोर, सेवा करने में श्रवण कुमार जैसे अर्थात् वृद्धों को भी शिक्षा के साथ दीक्षा देते हैं और उनकी सेवा करते हुये अच्छी तरह से समाधि भी करवाते हैं। जिस बुढ़ापे में दूसरे तो छोड़ों, अपने बच्चे भी पसंद नहीं करते ऐसे वृद्धों को चरण-शरण दे अपनी छाया में संयम का पालन करवा के उनका जीवन सार्थक करते हैं। ऐसे कल्याण की भावना जिनके अंदर होती है वे महान होते हैं।

युवा साधुओं के साथ वृद्ध साधुओं को स्वाध्याय प्रतिक्रमण कराते हैं। उन्हें सामायिक आदि भी सिखाते हैं और उसका अनुपालन भी करबाते हैं। ऐसा वात्सल्य बहुत कम देखने में आता है इसके अलावा आचार्य श्री में अन्य ऐसे अनेक गुण है, जिनके कारण वे आज मुक्तिपथ पर योग बढ़ रहे हैं। घर में चार बच्चों को संभालना मुस्किल हो जाता है पर आचार्य श्री इतने बड़े संघ को संयम के साथ मुक्ति पथ पर आगे बढ़ रहे है और बढ़ा रहे हैं।

सावर पंचकल्याण में आचार्य श्री का कहना है कि साथ में चलो। निश्चय ही ऐसे भाव वात्सल्य का प्रतीक हैं। अत: ऐसे आचार्य श्री के चरणों में बारम्बार, नमोस्तु।

आ. १०५ स्वस्ति भूषण माता जी

ये तो भगवान हैं

आया शुभ अवसर, हुआ उत्सव का आगाज,
आशीष देने खुद आये गुरु महाराज।
ये गणनायक यतिवर, आये आदिनाथ के दर,
विराग विशुद्धियों का हुआ सम्मेलन सुखकर,
गुरुवर विराग सिन्धु, विशुद्धी के आकर है।
दुर्षित विशुद्ध उपवन, चरणों को पाकर है।। आया...

उत्सव के आगमन को, गुरुवर ने सफल किया,
होगा महाउत्सव ऐसा, आशीष दिया।
गुरुवर नहीं ये तो भगवन है कहता है ये मन,
गुरु की मूरत में ये तीर्थ स्वरूप है।
समता वचन दिव्य ध्वनि अनुरूप है।। आया....

ऋषिगण दर्शन से, ये लोचन धन्य हुये,
गुरु पद रज पाकर, सौभाग्य अनन्य हुये,
चरण पखारे हम सबने, श्रद्धा भक्ति जल से
मुझको मेरे भगवन ज्ञान सिखा दो,
मेरे आत्म देव से बस मिलन करा दो।। आया....

वंदन चरणों में, गुरु के हैं बहु अहसान,
पालेंगे नित हम जो होगा गुरु फरमान।
गुरु जान है गुरु ज्ञान है गुरु ही है भगवान,
विज्ञमति की चाहत सर पै गुरु हाथ हो।
भव में गुरुवरों का आशीष साथ हो।। आया...

श्रमणी आर्यिका विज्ञमतिश्री माता जी
(संघस्थ- ग.आ. विशुद्धमती माताजी)

(आचार्य पदारोहण दिवस पर विनयांजली)

भगवान आदिनाथ स्वामी के समय से आज तक धर्म वैसा ही प्रवाहित हो रहा है। व्यक्ति अलग हो सकते हैं मत भेद हो सकते हैं लेकिन मन भेद नहीं होना चाहिए।

अभी मुझे पूज्य गुरुदेव के दर्शन का लाभ झांसी युगप्रतिक्रमण में मिला था और आज पुन: खोजते, पूछते मैं गुरुवर के दर्शनार्थ आया हूँ। मैं अभी गुरुदेव से चर्चा कर रहा था उनके शब्द मेरे दिल में समा गये हैं उन्होंने कहा- जब देश के अलग-अलग राजनेता एक साथ बैठ सकते हैं तो हम तो एक धर्म के लोग हैं हम एक साथ जरूर बैठेंगे।

कदम ऐसा रखों कि निशान बन जाएँ।
कुछ कार्य ऐसे करो जो इतिहास बन जाएँ।।
जीने वाले बहुत सारे लोग जी लेते हैं।
लेकिन जिओ तो ऐसा जिओ कि मिशाल बन जाएँ।।

ब्र. श्री आत्मनंद जी (तरण तरण समाज के संत)

मैंने पूज्य गणाचार्य गुरुवर के अधिक ग्रंथों का पठन तो नहीं किया लेकिन पूज्य आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी के ग्रंथों पर आचार्य अमृतचंद्र स्वामी ने जो कार्य किया वह वर्तमान के किसी संत ने नहीं किया था। पूर्वाचार्यों के ग्रंथों पर प्रवचन तो बहुत हुए लेकिन टीकाएँ लिखने वाले आचार्य कोई हुए हैं तो वे गणाचार्य गुरुवर ही हैं। मैं उनकी रत्नत्रय वर्धिनी कृति पढ़कर उसमें १५० ग्रंथों के रिफरेंस देकर जो कार्य किया है वह निश्चित ही सराहनीय है।

आज के युग में लोग दिग्भ्रांत होते जा रहे हैं पहले हमारी एक दिगम्बर समाज थी कांलान्तर में श्वेताम्बर, दिगम्बर में बटी उसके बाद तेरह पंथी, बीस पंथी हुए अब वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या संतवाद बना हुआ है। कोइ कहता है हम विद्यासागर कोई विराग सागर तो कोई कहता है हम सन्मति सागर के भक्त हैं मैं निश्चित कहता हूँ यह संतवाद यदि ऐसा ही चलता रहा तो भविष्य में जैनधर्म के लिए घातक सिद्ध होगा। अत: यहाँ उपस्थित सभी युग विद्वानों से मैं कहना चाहता हूँ कि इस विषय में कुछ प्रयत्न करें। सभी संतों से भी मेरा कहना है कि यदि सभी संत एकमत हो तो प्रतिष्ठाचार्य निश्चित ही एकमत हो जायेंगे। अंत में पूज्य गणाचार्य भगवन् के चरणों में नमोस्तु वे हमें मार्ग दर्शन दें।

क्षुल्लक योगभूषण जी महाराज

सारा वातावरण विरागमय हो गया

जमीन एक होती है उस पर रहते के तरीके अलग होते है। जल एक होता है बहने के तरीके अलग-अलग होते है। उसी प्रकार जैनाचार्यों की बात एक होती है उसे कहने के तरीके अलग-अलग होते हैं। संत से संत जब मिलते है तो सारी प्रकृति महक उठती है। आज लग रहा है सारा वातावरण ही विरागमय हो गया है। यूँ तो यह अतिशयक्षेत्र था ही लेकिन आज तीन संघों के समागम में त्रिवेणी तीर्थ के रूप में परिवर्तित हो गया है।

काफी समय से इच्छा थी कब दर्शन का सौभाग्य जागेगा, कब मिलन होगा। जब पता चला कि आपका विहार राजस्थान की ओर हो रहा है तो उत्कण्ठा और बढ़ गई। आज ही मैं विहार कर खास में आपका आगमन सुनकर आया हूँ निश्चित ही आपके दर्शन से मैं धन्य हो गया हूँ।

पूज्य आचार्य श्री ने श्रमण संस्कृति में धर्म की एक नई अलख जगाई है इनके अनेकों योग्य शिष्य देश में धर्म की पताका फहरा रहे हैं। ऐसे ये महा हिमालय यहाँ विराजमान है। पूज्य आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी से समयसार की १५० नम्बर की गाथा में जिनवाणी का सार भरते हुए कहा है-

रत्तो बंधदि कम्मं मुञ्चति जीवो विराग सम्पत्तो।

राग कर्मबंध का कारण है और विराग कर्मों से मुक्त कराने वाला है आज निश्चित ही हम लोग पापकर्मो को मुक्त हो जायेगा।

बन्धुओ! **पंखो में यदि उड़ान है तो आसमान हमसे दूर नहीं,**
पैरो में यदि हिम्मत है, तो मंजिल हमसे दूर नहीं।
इन गुरु के चरणों में बैठकर लग रहा है,
श्रद्धा में यदि जान है, तो भगवान हमसे दूर नहीं।।

प्रकृति का निमय है कि नदियाँ सागर से मिलती है लेकिन यहाँ सागर नदियों से मिलने आया है।

मुस्कान भरे ओठों पर कभी काली नहीं होती।
हरी भरी डाली कभी खाली नहीं होती।।
जो झुक जाता है इनके चरणों में।
उसकी झोली कभी खाली नहीं होती।।

मैं सोच रहा था जो युगप्रतिक्रमण के प्रवर्तक है, बन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य है, २२३ दीक्षा दाता है। इतनी बड़ी-बड़ी टीकाओं के टीकाकार है उनसे कैसे मिलन होगा लेकिन इतनी सहजता से मिलन हुआ। जिसको मैं सोच भी नहीं

सकता था। मैं भगवान चन्द्रप्रभु के चरणों में यही प्रार्थना करता हूँ कि आप सदैव स्वस्थ रहे आपकी साधना निर्विघ्न रहे युगों-युगों तक आपकी कीर्ति पताका फहराती रहे और आपका आशीर्वाद सदैव मुझ पर बरसता रहे।

श्रमणाचार्य सुकुमाल नंदी जी महाराज

परिवार एक है

आप सभी कह रहे हैं तीन संघों का मिलन हुआ। हम तीन जरूर है लेकिन हमारा परिवार एक है। पूज्य आचार्य आदिसागर अंकलीकर के शिष्य आचार्य महावीरकीर्ति जी हुए उनके ही शिष्य आचार्य विमलसागर जी और आचार्य कुन्थुसागर जी हुए। इन्होंने आचार्य विमलसागर जी महाराज से दीक्षा ली और हम लोगों ने आचार्य कुन्थुसागर जी के शिष्य आचार्य पद्मनंदी जी से दीक्षा ली। बस इतना ही हमारा बटवारा है। परिवार तो एक है एक ही घर के इतने साधु यहाँ बैठे है।

गणाचार्य श्री का इतना बड़ा समवशरण है जितनी दीक्षा आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने दी है लगभग उतनी ही दीक्षा आपने दी है। दोनों बराबर ही धर्म प्रभावना कर रहे हैं वे दक्षिण के हैं आप बुन्देलखण्ड के है। आप के अंदर प्रभावक प्रतिभा है हजारों लोग आपसे दीक्षा लेने तैयार है हमने तो अभी तक दो चार को ही दीक्षा दे पाई है।

हमारी इच्छा ५ वर्ष पूर्व जयपुर के यतिसम्मेलन में मिलने की थी किन्तु तब पुण्य नहीं जग सका, आज आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर यहाँ पधारे यह हमारा सौभाग्य है। मैं आपके साथ सावर जरूर चलता लेकिन कार्यक्रम निश्चित होने के कारण नहीं जा सकता आगे फिर आपका सान्निध्य प्राप्त हो ऐसी भावना रखता हूँ।

श्रमणाचार्य श्री इन्द्र नंदी जी महाराज

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज, आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज के अद्वितीय शिष्य है। हे गुरुदेव आप स्वयं इस संसार सागर से पार हो रहे हैं और अन्य जीवों को भी पार कर रहे हैं। आप श्री जैसे संतों के ही पद्धित बनारसी दास जी ने वंदन किया है। मैंने सन १९९५ से लेकर आज तक आपका जितना भी उपदेश सुना है उसमें एकमात्र जिनवाणी से कहा हुआ मोक्षमार्ग का ही उपदेश मिलता है। आपके प्रवचनों में कभी रागद्वेष एवं यहां वहीं की बाते नहीं मिलती। इस भारत भूमि पर आप चतुर्विध संघ के साथ विचरण करते हैं जिससे सभी को साक्षात् समवशरण के दर्शन हो जाते हैं। हे गुरुवर इस पंचमकाल में आप सच्चे सम्यग्दृष्टि व तत्वोपदेश देने से समयग्ज्ञानी है आपके निर्मल चारित्र को देख भव्य प्राणी इस मार्ग पर चलने की इच्छा रखते है। अत: आपही दृढ़ चारित्रवान है। हे गुरुवर आप ने अप्रशस्त राग को छोड़ प्रशस्त राग को धारण किया है। चारों दिशाओं में वीतराग धर्म का डंका बजाया है। अत: आपका विराग नाम सार्थक है। आप दीर्घायु हो और हमारी समाधि आपके चरणों में हो।

१. पतझड़ को मिटाने के लिए बसंत चाहिए।
कुरीतियों मिटाने के लिए सम्यक् संत चाहिए।।
अहिंसा का तिमिर ऐसे ही थोड़े ही मिटेगा।
उसको मिटाने के लिए गणाचार्य विरागसागर जैसा संत चाहिए।।

२. हम वो नहीं जो गम में तेरा साथ छोड़ देगे।
और हम वो नहीं जो तुमसे नाता तोड़ देगे।।
हम तो ऐसे शिष्य है गुरुवर।
तेरी सासे रूकी तो अपनी सांसे तोड़ देंगे।।

गुरुभक्त- पं. जयकुमार जी, ललितपुर

प.पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर जी महाराज का शताब्दी वर्ष महोत्सव एवं परम पू. राष्ट्रसत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज के ५४ वें अवतरण दिवस पर विद्वानों की भावाञ्जलियाँ

जिनका जीवन स्वत: काव्य है उस पर लिखना कैसा काम।
महाकाव्य जिनकी चर्या है, चर्चा जिनकी सुख संभाग।।
बुन्देलखण्ड के आचार्य प्रथम गुरु गणाचार्य बनकर आये।
संत क्रांतिकारी चरणों में शत् शत् बार नमन मेरा।।
सिद्धान्तवारिधि अध्यातम मार्तण्ड न्याय कहलाते हो।
ज्ञान दिवाकर संत शिरोमणि जग में जाने जाते हो।।
तीर्थोद्धारक गणाधिक्य जन-जन में अलक जगाते हो।
रत्नाकर वात्सल्य हृदय जन-जन के प्रति दिखलाते हो।।
साधना आपकी अति निर्मल चारित्र शिरोमणि कहलाये।
सम्राट समाधि कहलाये पिच्यासी समाधि बहु करवाये।
अध्यात्म योगी अध्यात्म पाठ उपदेश है देते जन-जन को।
समता का पाठ पढ़ाते हो, बन समतामूति तुम जन जन को।।
श्रमणों के तुम रत्नाकर हो इसलिए श्रमण रत्नाकर हो।
सिद्धान्तरत्न तुम कहलाते, धवला वाचक के कारण हो।।
उपसर्ग विजेता गुरुवर तुम, संकल्प शक्ति अतिदृढ़तर हो।
जिसने उपसर्ग किया तुम पर करुणा उनके प्रति तुम डर हो।।
सतयुगी संत गुरुवर विराग की जय-जय सब उच्चार रहे।
चन्द्रेश शरण में है गुरुवर कब मेरी ओर निहार रहे।।
महावीर भगवान के लघुनंदन ऋषीराज।
हे विरागसागर श्रमण मंगलमय हो काज।।
महासाधना आपकी, महात्याग की खान।
जन-जन हृदय विराजते हे विराग भगवान-२।।

परम गुरु भक्त पं. निहालचंद जी (चंद्रेश) जैन, ललितपुर

परम पूज्य गुरुदेव गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज अनेक गुणों के धनी है। हम सभी की क्या मजाल जो गुरुवर के गुणों का बखान कर सके। पूज्य गुरुवर ने पूरे देश में, राष्ट्र में और हमारे ललितपुर में जो धर्म की देशना दी है। जो प्रभावना की है वह अनूठी है। आज वास्तव में ये पूरा विशाल संघ इस बात का साक्षी है। इस धर्महास युग में भी यदि हमें धर्म की सच्ची बात बताने वाले कोई हैं तो पूज्य गणाचार्य गुरुवर हैं। उन्हीं से आज धर्मा जीवंत है। पूज्य गुरुवर के सन १९९५ वे के चातुर्मास और उसके बाद ललितपुर के इतिहास को स्वर्णिम अक्षरों में लिखवाने वाली गुरुवर के हाथ से दी गई। दीक्षाओं से अद्वितीय प्रभावना यहाँ हुई है। गुरुवर जैसा वात्सल्य अन्य कहीं देखने नहीं मिला। इनके इतने बड़े संघ में कभी कोई विसंवादजन्य बात भी सुनने में नहीं आती। हम करवद्ध होकर गुरुवर से यही प्रार्थना करते हैं कि हे गुरुवर आप जैसा वात्सल्य हम ललितपुर वासियों में भी आये और आपका आशीर्वाद का वरद हस्थ ऐसे ही वात्सल्य की वर्षा करता हुआ हम सभी के ऊपर बना रहे। इसी भावना के साथ गुरुवर के चरणों में नमोस्तु-३।

अनन्य गुरुभक्त- पंचायत अध्यक्ष अनिल 'अंचल', ललितपुर

मैं आचार्य भगवन विरागसागर जी महाराज से सन १९९२-९३ से जुड़ी हुई हूँ। बीचमें मेरी जीवन नैया कुछ

डगमगाने लगी तभी आचार्य श्री १९९५ में टीकमगढ़ आये। मैं उनके दर्शन करने गई तो आचार्य श्री का वात्सल्य एक माँ की तरह बरसा और बीमारी के उन दिनों में गुरुवर ही मुझे खेबटिया के रूप में नजर आये, जो बात मैं अपने परिवार वालों को भी नहीं बता पा रही थी वह गुरुवर के वात्सल्य के प्रभाव से स्वत: हल हो गई। हे गुरुवर आपका वात्सल्य सदैव इसी प्रकार मुझ पर बना रहे और मैं सदैव अपने गुरुवर की सेवा करती रहूँ और अंत में आप के चरणों में समाधि पूर्वक मरण हो। अंत में गुरुवर के चरणों में कहती हूँ।

तुमने दिया है सब कुछ, तुमको क्या भेंट दूँ मैं।
सूरज के आगे जुगनू की बात क्या करू में
जीवन सजाने वाले वश एक आरजू है
नजरे न फेर लेना दर से कभी हमारे।।

जय बोलिए बाल ब्रह्मचारी, सरल स्वभावी, जिनधर्म प्रभाकर, कुशल वक्ता, वात्सल्यपूर्ण अनुशासक, परम पिता परमेश्वर परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की जय-२

गुरु चरणानुरागिनी- श्रीमती सुनीता जैन, टीकमगढ़

श्यामा देवी के लाड़ले कपूर चंद के लाल।
तिनके आंगन में उगे हीरा जैसे लाल।।

मैं आचार्य श्री से १९९३ से जुड़ा हूँ इनका वात्सल्य इतना महान है कि छोटा-बड़ा और विद्वान सभी इनके चरणों में झुक जाते हैं। आचार्यश्री जिनवाणी के बादशाह ही नहीं शहनशाह हैं। आचार्य श्री आप रत्नों की खान है। आपके अंदर अनेकों गुण हैं। आपने अपने वात्सल्य से पूरे संसार और हमारे ललितपुर को प्रभावित किया है।

गा सकूँ आपके गीत वो शब्द कहाँ से लाऊँ।
सुना सकूँ आपके गीत वो अंजाए कहाँ से लाऊँ।
चांद और तारे की तारीफ तो की जा सकती है।
कर सकूँ आप जैसे गुरु की तारीफ वो अल्फाज कहाँ से लाऊँ।।

परम गुरुभक्त- सुरेश जैन, ललितपुर

विनयाञ्जलि

सूरज तुम्हें नमन करता है। अम्बर शीश झुकाता।
तारे खुद ही करे आरती, चन्द्र गुण है गाता।।
सृष्टि करे वंदना आपकी, गूंज रहा जयकारा।
जन्म जयंती उत्सव पर, शत् शत् नमन हमारा।।

पार्श्वनाथ की मूर्ति पर जो चिन्ह होता है उसेनाग कहते है।
जो क्यारियों में होता है उसे बाग कहते है।
जिसने सीरागिरि को श्रेयांस गिरि बनाया।
उसे आचार्य विरागसागर जी कहते हैं।।

सिंधई सुकमाल चन्द्र जैन

जितना नभ का असीम विस्तार है।
विमल गुरु का उतना बड़ा उपकार है।
विमल सागर गुरुदेव के गुण हैं अपरम्पार।
निमित्तज्ञान से किया जन-जन का उपकार।।

श्रीमान विनोद जैन, ललितपुर

ये हमारा प्रबल पुण्य योग है जो हमें गुरुनाम गुरु आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज की जन्म शताब्दी महोत्सव वर्ष मनाने का अवसर प्राप्त हो रहा है। और इसी श्रृंखला में हमे पूज्य गुरुवर गणाचार्य श्री का ५४वाँ अवतरण दिवस मनाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। हमारे शब्द इतने ताकतवर नहीं कि गुरु नाम गुरु का गुणगान कर सके। हम तो उन्हें भावों से विनयाञ्जलि अर्पित करते हैं। और जो उन्होंने अपनी अनमोलकृति आचार्यश्री के रूप में हमें दी है। इस हेतु हम सदैव उनके ऋणी रहेंगे। अंत में गुरुवर से प्रार्थना करते हैं कि आप अपना वरद हस्त हम पर बनाये रखना इशारा दिया है तो सहारा भी देते रना ताकि हमारा जीवन सार्थक हो सकें।

मनोज वबीना, ललितपुर (संयोजक पंचायत समिति)

सबसे बड़े पण्डित तो आचार्य परमेष्ठी हुआ करते हैं जो समवशरण में बैठकर भव्य जीवों को उपदेश देते हैं। दूसरा पं. सभी निर्ग्रंथ संत होते हैं और अंत में नाम आता हम लोग जैसे पण्डितों का। मैं आज सबसे बड़े पण्डित पूज्य गणाचार्य गुरुवर के सामने बोलने का प्रयत्न कर रहा हूँ। पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज वात्सल्य के धनी थे। गरीब-अमीर सभी के प्रति समान उनका वात्सल्य था। मैं बचपन में उनके दर्शन करने कई बार गया। मैं उनके वात्सल्य गुण से बड़ा ही अभिभूत था। आज वैसे ही गुण हमें पूज्य गुरुवर विरागसागर जी महाराज में देखने को मिल रहे हैं। गुरुवर के ५४वें अवतरण दिवस पर मैं भावना भाता हूँ कि आप शीघ्र ही तीर्थंकर बन समवशरण में विराजमान हो और भी आपके समवशरण की वारह सभा में श्रावकों की अग्रिम पंक्ति में बैठूँ।

संयम सौरव साधना जिनको करे प्रणाम।
त्याग तपस्या तीर्थ का विराग सागर नाम।।

पण्डित संतोष जैन, ललितपुर

जंगल तेरे जाने में मंगल बन जाता है।
तुम जहाँ बैठते हो समवशरण बन जाता है।।
जब बोलते हो मुनिवर वाणी सी खिरती है।
अंतिम तीर्थंकर की हमें देशना मिलती है।।

तुम सागर हो गुरुवर गम्भीर से हो लगते।
तुम हो विराग मुनिवर पर परम शुद्ध लगते।।
तेरी चर्या इतनी महान है, मेरे शब्द बहुत कम है।
गुरुवर के चरणों में मेरा यह जीवन समर्पित है।।

तुम खुशबू हो गुरुवर बस महका करते हो
तुम सागर जैसे से चुप-चाप से रहते हो।
अब क्या लिखू गुरुवर कुछ समझ नहीं आता।
हम जुगूनू जैसे है तुम चांद से लगते हो।

प्रियल जैन, (गल्ला मंडी) देवेन्द्रनगर

प्राचीन कुछ ऐसा समय निकला जब गुरुओं के दर्शन दुर्लभ थे तब पण्डित बनारसी दस कहते थे मुझे एक बार कोई संत के दर्शन करा दे तो मैं उसे सारी संपत्ति देता हूँ। फिर भी उन्हें दर्शन नहीं होते थे। हम सभी बड़े सौभाग्य शाली हैं। जो ऐसे महान सच्चे, निर्ग्रंथ संत हमारे बीच विद्यमान है सचमुच हमारा ललितपुर और हम ललितपुर वासी धन्य हो गये हैं।

श्रीमती मीना जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष ललितपुर

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का ५४ वाँ अवतरण दिवस है। मैं आचार्य श्री के प्रति भावना भाता हूँ कि वे सहस्रों वर्ष तक इस पृथ्वी पर जैन धर्म का प्रचार करते हुए अपने और हम सभी के जीवन को धन्य करें।

प्रो. नेमीचंद जी, खुरई

आज हम सभी पूज्य गुरुवर गणाचार्य श्री का अवतरण दिवस मना रहे हैं। धवला जी में आचार्य वीरसेन स्वामी ने एक बात कहीं है कि आप महाराज के लिए चौका लगाते हैं तो महाराज आये या न आये फिर भी पुण्य पूरा मिलता है। उसी प्रकार हम गुरुवर का अवतरण दिवस मना रहे हैं। जिसमें गुरुवर कितना भी मना करें पर हमें पुण्य पूरा मिलेगा। ऐसे महान निस्पृही गुरुवर के चरणों में बारम्बार नमोस्तु-३।

पंडित जीवन लाल जी, ललितपुर

मिलता रहे गुरु आशीष आपका

सावर चन्द्रगिरि पर १००८ चन्द्रप्रभु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में मंगल सान्निध्य प्रदान करने वाले १०८ राष्ट्र गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के श्री चरणों में एवं समस्त संघ के चरणों में वंदन नमन।

मुझे गुरुदेव विरागसागर जी का आशीर्वाद ५ वर्ष पूर्व जब में विधायक था। तब प्राप्त हुआ उस समय मैंनेआपके साथ पैदल विहार भी किया था। जब भवानी निकेतन जयपुर में आपने युग प्रतिक्रमण ओर यतिसम्मेलन कराया था तब राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी को भी आपके दर्शन कराने का सौभाग्य मुझे मिला था। आपके आशीर्वाद से आज मैं सांसद हूँ। मैं कहना चाहता हूँ आप सभी से हम लोग जो अपने आपको बड़ा आदमी मानने लगते हैं वह व्यर्थ का अहम् है क्योंकि हमारे पास जो भी होता है। वह इन संतों की कृपा से होता है। इन्हीं गुरुदेव की सब महिमा है। मैं आपकी आज्ञा से यहाँ के तिराहे पर अहिंसा सर्कल एवं विश्वमैत्री विराग कीर्तिस्तंभ बनवाने तथा यहाँ के मार्ग को गणाचार्य विरागसागर मार्ग बनाने की घोषणा करता हूँ। मैं गुरुदेव से यही प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसा आशीर्वाद एवं अधिक शक्ति प्रदान कीजिए जिससे मैं और भी अधिक अच्छे कार्य कर सकूँ।

श्री रघुशर्मा सावर, सांसद

संस्कृति से गुरु को नमस्कार

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:
गुरु: साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गरवे नम:।।

आज मैंने गुरु जी के प्रवचन सुने तो मुझे समय का पता ही नहीं चला। अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहर, बेटी बचाओं एवं स्वच्छता सभी विषय व्यक्ति के अपने मन पर निर्भर करते हैं। व्यक्ति यदि मन से निर्णय ले तो निश्चित इनसे छुट सकता है।

मेरा विश्वास है यहाँ उपस्थित हर व्यक्ति यदि महाराज श्री की छवि को मन में बसाकर ये संकल्प ले तो जरूर वह सफल होगा क्योंकि उसके संकल्प के साथ गुरु जी की शक्ति रहेगी। यद्यपि मैं इन विषयां के अनुरूप ही चलती हूँ फिर भी गुरु जी जो नियम मुझे देगे मैं उसका सच्चे मन से प्रसादी समझकर ग्रहण करूँगी। आज मुझे इतने महान संत के दर्शन हुए इसकी मैं जैन समाज के प्रति सदैव ऋणी रहूँगी।

श्रीमती शकुन्तला, विधायक

परम पूज्य श्री गणाचार्य विरागसागर जी महाराज में आपके चरणों में प्रणाम करती हूँ। आपने जो अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओं और स्वच्छता अभियान को चलाने का आदेश दिया है। उसका मैं जी जान से पालन करूँगी एवं आगे बढ़ाऊँगी और आपके इन प्रवचनों को सदैव स्मरण में रखूँगी क्योंकि इतने अच्छे अहिंसा पर प्रवचन सुनकर शायद ही कोई होगी जो व्यसनों का त्याग न कर सके। मैं पुन: आपके चरणों में नमस्कार करती हूँ।

श्रीमती किरण जी यादव (पूर्व विधायक)

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका **क्या द्रव्यार्थिक नय के और भी भेद हैं?**

समाधान **हाँ है, देखें आ. प. सू. ४६)**

द्रव्यार्थिकस्य दश भेदाः।

अर्थ- द्रव्यार्थिक नय के दस भेद हैं।

शंका - **द्रव्यार्थिक नय के दस भेद कौन-कौन से हैं उदाहरण सहित समझाइयें?**

समाधान - (आ.प.सू. ४७) में कहा है कि-

(१) कर्मोपाधि निरपेक्षः शुद्ध द्रव्यार्थिको यथा संसारी जीवो सिद्ध सदृक शुद्धात्मा। अथवा मिथ्यात्वादि गुणस्थाने सिद्धत्वं वदति स्फुटं।

कर्मभि निरपेक्षो यः शुद्ध द्रव्यार्थिको हि स. ।। १।। (न.च.श्रुत पृ. ३)

अर्थ - मिथ्यात्वादि गुणस्थान में अर्थात् अशुद्ध भावों में स्थित जीव को जो सिद्धत्व कहता है वह कर्म निरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

अथवा कर्मोपाधि निरपेक्ष सत्ता ग्राहक शुद्ध निश्चय द्रव्यार्थिक दयापेक्षया हि एभिर्नो कर्मभि द्रव्य कर्मभिश्च निर्मुक्तम्। नि.सा.ता.व. १०७

अर्थ - कर्मोपाधि निरपेक्ष सत्ता ग्राहक शुद्ध निश्चय रूप द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा आत्मा इन द्रव्य व भाव कर्मों से निर्मुक्त है।

(२) उत्पादव्यय गौणत्वेन सत्ता ग्राहकः शुद्ध द्रव्यार्थिको यथा-द्रव्यं नित्यं। (आ.प.सू. ४८)

अर्थ - उत्पाद व्यय गीण सत्ता ग्राहक शुद्ध द्रव्यार्थिक नय से द्रव्य नित्य स्वभावी है।

अथवा- सत्ता ग्राहक शुद्ध द्रव्यार्थिक नय बलेन पूर्वोक्त व्यञ्जन पर्यायेभ्यः सकाशान्मुवतामुक्त समस्तजीवराशयः सर्वथा व्यतिरिक्ता एव। (नि.सा., ता.वृ.गा. १९)

अर्थ - सत्ता ग्राहक शुद्ध द्रव्यार्थिक नय के बल से मुक्त तथा अमुक्त सभी जीव पूर्वोक्त (नरनारकादि) व्यंजन पर्याय से सर्वथा व्यतिरिक्त ही है।

(३) भेदकल्पना निरपेक्ष शुद्धो द्रव्यार्थिको यथा- निजगुण पर्याय स्वभावाद् द्रव्यमभिन्नम्। (आ.प.सृ.४९)

अथवा भेदकल्पना निरपेक्षेणैक स्वभावः (आ.प.सू. १५४)

अर्थ - भेदकल्पना निरपेक्ष शद्ध द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा द्रव्य निज गुण पर्यायों के स्वभाव से अभिन्न है तथा एक स्वभावी है।

अथवा गुण गुणियाइच उक्के अत्थे जो णो करइ खलु भेवं।
सुद्धो सो दव्वत्थो भेय वियप्पेण णिरवेक्खो ।। न.च.वृ. १९२।।

अर्थ - गुण, गुणी और पर्याय पर्यायी रूप ऐसे चार प्रकार के अर्थ में जो भेद नहीं करता है अर्थात् उन्हें एक रूप ही करता है वह भेद विकल्पों से निरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

अथवा

भेद कल्पना निरपेक्षेणे तरेषां धर्माधर्माकाश जीवानां चा खण्डत्वादेक प्रदेशत्वम्।। (आ.प.सू. १६८)

अर्थ - भेद कल्पना निरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिक नय से धर्म, अधर्म, आकाश और जीव इन चारों बहुप्रदेशी द्रव्यों के अखण्डता होने के कारण एक प्रदेशपना है।

(४) कर्मोपाधिसापेक्षोऽशुद्धो द्रव्यार्थिको यथा क्रोधादि कर्मज भाव आत्मा। (आ.प.सू. ५०)

अर्थ - कर्मजनित क्रोध आदि भाव ही आत्मा है ऐसा कहना कर्मोपाधि सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

(५) उत्पाद्रव्यय सापेक्षोऽशुद्ध द्रव्यार्थिको यथैकस्मिन समये द्रव्यमुत्पाद व्यय धौव्यात्मकम्। (आ.प.सू. ५१)

अर्थ - उत्पाद व्यय सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा द्रव्य एक समय में ही उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य रूप इस प्रकार त्रयात्मक है।

(६) भेद कल्पना सापेक्षोऽशुद्ध द्रव्यार्थिको यथात्मनो ज्ञान दर्शन ज्ञानादयो गुणाः। (आ.प.सू. ५२)
भेद कल्पना सापेक्षेण चतुर्णामपि नानाप्रदेश स्वभावत्वम्। (आ.प. १६९)

अर्थ - भेद कल्पना सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा ज्ञान, दर्शन आदि आत्मा के गुण है। (ऐसा गुण गुणी में भेद होता है) तथा धर्म, अधर्म, आकाश और जीव ये चारों द्रव्य अनेक प्रदेश स्वभाव लक्षण वाले हैं।

(७) १. अन्वय सापेक्षो द्रव्यार्थिकों यथा गुण पर्याय स्वभावं द्रव्यम्।
अन्वय द्रव्यार्थिकेवे नैकस्याप्यनेक स्वभावत्वम्। (आ.प.५३, १५५)

अर्थ - अन्वय सापेक्ष द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा गुण पर्याय स्वरूप ही द्रव्य है और इसलिये इस नय की अपेक्षा एक द्रव्य के भी अनेक स्वभावीपना है। (जैसे जीव ज्ञानस्वरूपी है, दर्शन स्वरूपी है इत्यादि।)

२. निःशेष गुण पर्यायान् प्रत्येकं द्रव्यमब्रब्रीत्।
सोऽन्वयो निश्चयो हेम यथा सत्कटका दिषु।। (न.च.श्रु. ७)

अर्थ - जो सम्पूर्ण गुणों व पर्यायों में से प्रत्येक को द्रव्य बतलाता है, वह विद्यमान कड़े बगैरह में अनुबद्ध रहने वाले स्वर्ण की भांति अन्वय द्रव्यार्थिक नय है।

३. पूर्वोक्तोत्पादादि त्रयस्य तथैव स्वसंवेदन ज्ञानादि पर्याय त्रयस्य चानुगता कारेणान्वय रुपेण यदाधार भूतं तदन्वय द्रव्यं भण्यते, तद्विषयो यस्य स भवत्यन्वय द्रव्यार्थिक नयः। (प्र.सा.त.प्र. १०१/१४०/११)

अर्थ - जो पूर्वोक्त उत्पादादि तीन का तथा स्वसंवेदन ज्ञान, दर्शन, चरित्र इन तीन गुणें का (उपलक्षण से सम्पूर्ण गुण व पर्यायों का) आधार है वह अन्वय द्रव्य कहलाता है वह जिसका प्रयोजन है, विषय है, वह अन्वय द्रव्यार्थिक नय है।

(८) स्वद्रव्यादि ग्राहक द्रव्यार्थिको यथा स्वद्रव्यादि चतुष्ट्यापेयोपक्षया द्रव्यमस्ति। (आ.प.सू. ५४)

अर्थ - स्व द्रव्यादि ग्राहक द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल व स्व स्वभाव इस चतुष्टय से ही द्रव्य का अस्तित्व है। इन चारों रूप ही द्रव्य का अस्तित्व स्वभाव है।

(९) परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिको यथा परद्रव्यादि चतुष्ट्यापेक्षया द्रव्यं नास्ति। (आ.प.सू. ५५)

अर्थ- परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल और परभाव इस पर चतुष्टय से द्रव्य का नास्तित्त्व है। अर्थात् पर चतुष्टय की अपेक्षा द्रव्य का नास्तित्त्व स्वभाव है।

(१०) १. परमभावग्राहको द्रव्यार्थिको यथा- ज्ञान स्वरूप आत्मा। (आ.प.सू. ५६)

अर्थ - परमभावग्राहक द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा आत्म ज्ञान स्वभाव में स्थित है।

२. परम भावग्राहकेण भव्याभव्य पारिणामिक स्वभावः।
कर्मनोकर्मणोरचेतन स्वभावः। ... कर्मनोकर्मणो मूर्त स्वभावः। ...
पुद्गलं विहाय इतरेषाममूर्त स्वभावः।.... काल परमाणुनामेक प्रदेश स्वभावः। (आ.प.सू. १५८, १६१, १६३, १६५, १६७)

अर्थ - परम भाव ग्राहक नय से भव्य व अभव्य पारिणामिक स्वभावी है। कर्म व नोकर्म अचेतन स्वभावी हे, कम्र व नोकर्म मूर्त स्वभावी है। पुद्गल के अतिरिक्त शेष द्रव्य अमूर्त स्वभावों हैं, काल व परमाणु एकप्रदेश स्वभावी हैं।

३. सर्वविशुद्ध पारिणामिक परम भाव ग्राहकेण शुद्धोपादान भूतेन शुद्ध द्रव्यार्थिक नयेन कर्तृत्व भोक्तृत्व मोक्षादि कारण परिणाम शून्यो जीव इति सूचितः। (स.सा.ता.वृ. ३२०/४०८/५)

अर्थ - सर्व विशुद्ध पारिणामिक परम भाव ग्राहक शुद्ध उपादान भूत शुद्ध द्रव्यार्थिक नय से जीव कर्ता, भोक्ता, मोक्ष आदि के कारण रूप परिणामों से शून्य है।

४. यस्तु शुद्ध द्रव्य शक्ति रूपः शुद्ध पारिणामिक परमभाव लक्षण परम निश्चय मोक्षः स च पूर्वमेव जीवे तिष्ठतीदानी भविष्यतीत्येवं न। (द्र.सं.टी.गा. ५७/२३६)

अर्थ - जो शुद्ध द्रव्य की शक्ति रूप पारिणामिक परम भाव रूप निश्चय मोक्ष है वह तो जीव में पहले ही विद्यमान है। वह अब प्रगट होगा, ऐसा नहीं है।

अध्यात्मिक शंका-समाधान कृति से साभार

गुरु आज्ञा सर्वोपरि

गुरु आज्ञा अनुल्लंघनीय, अपरिहार्य, अनुपेक्षनीय होती है। जब हमारे अंदर सच्ची श्रद्धा-भक्ति व समर्पण के साथ विवेक होता है, तो कठिन आज्ञा भी बिना तर्क-वितर्क के सहज, प्रसन्नभावों से, सिर के मुकुट की तरह, मस्तक पर धारण की जाती है। गुरु आज्ञा की पूर्ति, प्रदर्शन से रहित, निश्छल भाव से, शब्दशः हो तो शेषाक्षत की तरह मंगल कारिणी/ शोभा प्रदायिनी होता है। गुरु आज्ञा शिष्य का सर्वोपरि धर्म है, जिसमें समय तथा परिस्थिति का बंधन नहीं होता, अपितु हर समय/ हर परिस्थिति में होता है अनिवार्यता। गुरु आज्ञा में चलने वाले शिष्य, जीवन में सर्वोत्तम ऊँचाईयों को प्राप्त कर, समुन्नतशील बनते हैं, अपनी प्रतिभाओं में निखार कर पाते हैं। गुरु आज्ञाशीलता, यह तो परीक्षा के समान है कि उसके भाव, शिष्यत्वपने से कितन भीगे ? ज्ञानशील शिष्य ही मुनिश्री श्रुत सागर की तरह संघ पर आये उपसर्गों को दूर कर सकते हैं। आज्ञाशील शिष्य प्रज्जवलित दीपक की भाँति दूसरों को प्रकाशित करते हैं। गुरु आज्ञा जबर्दस्ती से नहीं, सौभाग्य मानकर पालन करें। नहीं तो फिर प्रसन्नता/उपलब्धियाँ/महानता आदि गुण जो मिलने चाहिये, वे संभव नहीं हो सकेंगे।

समयोचित शिक्षायें से साभार

केला एक गुणकारी फल

संकलन : श्रमणी आ. विवक्षाश्री माता जी

केला फल के रूप में अच्छी तरह से जाना जाता है। केला मांगलिक संस्कारों के लिए भी प्रयोग में लाया जाता है। केला अपने आप में स्वास्थ्यवर्द्धक फल है, क्योंकि इसमें पर्याप्त प्रोटीन, विटामिन्स, कार्बोहाइड्रेटस, खनिज और जल विद्यमान रहते हैं। केला और दूध साथ-साथ खाना अपने आप में पूर्ण भोजन होता है। केला अपने कई औषधिय गुणों के कारण जाना जाता है।

- केले में कैल्शियम की मात्रा होने से यह हड्डियों और दांतों की मजबूती के लिए अच्छा माना जाता है।
- जो लोग बहुत पतले-दुबले होते है, उनहें दो केले २५० ग्राम दूध के साथ नियमित सेवन करना चाहिए। इससे उनका स्वास्थ्य भी ठीक होता और वजन भी बढ़ता है।
- कभी कभी बच्चे खेल खेल में धातु का सिक्का, कांच की गोली निगल जाएँ या कुछ गले में अटक जाए तो उसे तत्काल पका हुआ। केला खिलाएँ। वस्तु मल के साथ बाहर निकल आएगी।
- जिन पुरुषों में शीघ्रपतन की बीमारी होती है उन्हें कम से कम दो या तीन सप्ताह तक एक तोले चासनी के साथ एक केले का सेवन करना चाहिए।
- गैस्ट्रिक होने पर, अल्सर होने पर या मंदाग्नि होने पर नियमित केले का सेवन करने से शरीर को फायदा होता है।
- शरीर के किसी भाग पर सूजन आने से केले के गूदे को आटे में गूंथ कर गर्म करके उस स्थान पर बांधने से सूजन कम होती है।
- रक्त प्रदर और श्वेत प्रदर महिलाओं की आम बीमारी है। ऐसी स्थिति में नियमित पके केले का सेवन करना चाहिए।
- आग से कोई अंग झुलस गया हो या जल गया हो तो पके हुए केले को पीसकर प्रभावित स्थान पर लगाने से लाभ होता है।
- जीभ पर छाले होने की स्थिति में गाय के दूध की जमी दही के साथ पके हुए केले को खाने से छाले ठीक होते हैं।
- दस्त लग जाने पर दही में एक केला मिलाकर खाये लाभ होगा।
- केले में लौह तत्व की प्रचुर मात्रा होती है जो रक्त निर्माण में सहायक होती है। जिन लोगों के शरीर में रक्त की कमी होती है उन्हें केला नियमित रूप से खाना चाहिए।
- वैसे तो केला गुणों से भरपूर है पर कुछ परिस्थितियों में केला लोगों को मना भी किया जाता है। जिन लोगों की शीत प्रवृति होती है। उन्हें केले का सेवन कम से कम करना चाहिए।
- केला सुबह में खाया जाये तो उसकी कीमत तांबे जितनी, दोपहर में खाने पर चांदी जितनी और शाम को खाने पर उसकी कीमत सोने के बराबर है। यह आयुर्वेद की मान्यता है।
- केले की मिठाव उसमें रहे हुए गलुकोज तत्व पर आधारित है। ग्लुकोज कुदरती शर्करा है। यह स्वाद में मिठास के उपरांत स्नायुओ को पोषण और शर्करा प्रदान करता है।
- पके केले सरलता से पचते हैं। एकदम पीले और जिनके ऊपर कत्थाई या बादामी रंग के छोटे से पड़े हो, ऐसे केलो को ही पके केले समझे शर्करा ग्लुकोज की मात्रा अधिक होने के कारण इनका सेवन दुसरे दिन पेट साफ हो जाता है। बच्चों व बड़ी उम्रवालो एवं कब्ज से पीड़ित लोगों को शाम को पके केले खाने से लाभ होता है। उन्हें फिर जुलाब या रेच लेने की जरूरत नहीं पड़ती।
- केले मधुर, ठंडे, मल को रोकने वाले, भारी और स्निग्ध है। ये कफ पित, रक्तविकार या रकतपित, दाह, क्षत, क्षय और वायु को मिटाते हैं।

- ❖ पके केले और घी खाने से पित्तरोग मिटता है।
- ❖ पके केले खाने से तृषारोग मिटता है, प्यास दूर होती है।
- ❖ कच्चे केलों को सुखाकर चूर्ण बनाइये। आधा तोला चूर्ण दूध के साथ प्रतिदिन लेने से प्रमेह में बहुत लाभ होता है।
- ❖ पके केले, ऑवलों का रस और शर्करा एकत्र कर स्त्रियों को पिलाने से प्रदर और सोम (बहुमूत्र) रोग मिटते हैं।
- ❖ केलों के छिलके गले के ऊपर (बाहर की ओर) बांधने से गले की सूजन मिटती है और टॉन्सिल में भी फायदा होता है।
- ❖ केलो में आहार के अन्य घटको में लोह, तांवा, मैगनीज, फॉस्फोरस, कैल्शियन (चूना) सदृश खनिज तत्व है। अन्य फलों की अपेक्षा केलों में तत्वों की मात्रा अधिक है। इसमें अवस्थित लोह ऐसे रासायनिक पदार्थो के साथ संबद्ध हे कि जिनका रक्त के तत्व में शीघ्र रूपांतर होता है। केलो की यही विशेषता है।
- ❖ मासिक के दौरान रक्त स्राव नियंत्रित करने के लिए दूध में पका केला मसलकर खा सकती है।
- ❖ केले में पोटेशियम की मात्रा अधिक और सोडियम की मात्रा बहुत कम होती है, इसलिए यह रक्त संचार और कोलेस्ट्रॉल विभात्तित रखने में सहायक है।
- ❖ सूखी खॉसी में केलो का सेवन करने से लाभ होता है। नींबू के रस के साथ मसलकर खुजली और दाद पर पतला लेप करने से आराम होता है।

कच्चे केले पचने में भारी होता है। इसे खाने से पेट में भार महसूस होता है और पेट में दबाव बढ़ता है। पेट में दर्द करते हैं। पके केले भी खूब चबा-चबाकर खाने चाहिए।

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमश: शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान- १. **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली
फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

विराग सेतु

बारह-विरागो

(जलधरमाला ऽऽऽऽ ॥॥ऽऽऽऽ = 12 वर्ण)

(प.पू. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज)

डॉ. उदयचन्द्र जैन

जिन्होंने अल्प वय में ही मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त किया, घनघोर उपसर्गों में भी समता धारण कर आत्मान्वेषी रहे, ज्ञान की अथाह गहराईयों में डुबकी लगाकर प.पू. आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के प्राचीन ग्रंथ वारसाणु पेक्खा पर संस्कृत 'सर्वोदय टीका' को लिखकर जिनागम के लिए एक दुर्लभ रत्न प्रदान किया है। ऐसे सिद्धांतरत्न प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज के जीवन दर्शन का सुंदर हृदयस्पर्शी चित्रण करने वाले डॉ. उदयचंद्र जैन उदयपुर के विराग चेतना युक्त नवीन प्राकृत महाकाव्य 'विराग-सेतु' की क्रमिक प्रस्तुति-

मादा-भाऊ भगिणि-बुआ-मोसीओ, धीरो-गंभीर-विजय संकप्पूरो।
अक्खीहिं ते जलधर-माला जुत्ता, णेज्जा अस्सू सुधि-विरहा संजाए॥ 1॥

इधर माता, भाई, बहिन, बुआ, मौसी आदि सभी चिन्तित हो जाते हैं। विजय छोटा भाई एवं पितु श्री कपूरचन्द्र अपनी आँखों से मेघों की तरह जलधारा छोड़ने लगते हैं। वे सभी परिजन अश्रु लिए हुए अपनी सुधी ही भूल जाते हैं।

मादा-सिरी अवि अधीर-गिहे हि चिंते
अक्खीण राय कुमरो तुह किं किएज्जा।
मग्गो वरो अवर रोग-गहित्थ-मादुं
किंचिं ण चिंतिअ तुहं पिउ-पेम्म-भावं॥ 2॥

मातु श्री तो गृह में अधीर अपने अखियों के राजकुमार कहती हुई चिन्ता करती है कि तूने यह क्या किया? यह मार्ग/मुनिमार्ग उत्तम है, पर रोग ग्रस्त माता एवं पिता श्री के स्नेह भाव की ओर कुछ भी नहीं सोचा।

गेहे तुहं विणु कहेज्ज कधं च संतिं
भासेज्ज सुज्ज-अरबिंद तुहं पहासे।
जेट्ठो तुमं ण विजयो णिउणो वि णत्थि
मे वड्ढणे वि परिपालणए वि चिंते॥ 3॥

घर के परिजन कहते-तुम्हारे बिना कहाँ शान्ति को देखा जा सकता है? सूर्य के बिना अरबिन्द कब शोभा पा सकता है? आप ज्येष्ठ हैं, विजय नहीं अत: मेरे पालन-पोषण की चिन्ता तो करता?

भो पुत्त! धम्म-परमो इध तित्थ-रुवो
साहू पदो वि परमो गद-संग-सव्वे।
संसार-लील-सयला परिभोगएंति
णिग्गंठ-मग्ग-परमो परिभासएंति।। 4।।

भो पुत्र! धर्म परम है, उत्तम है, तीर्थ रूप है। उसमें साधु पद सभी संग/संयोग से मुक्त कराने वाला परम पद रूप है। हाँ! लोग संसार लीलाओं को भोगते हैं, पर वे भी निर्ग्रन्थ मार्ग परम/उत्तम है, ऐसा कहते हैं।

मेहाबरादु दिवएस-फुरेदि लोए, तत्तो तधेव बहि-अंत-मलादु मुत्तो।
जाएज्ज णिम्मल सुदे जग एक्क-धम्मे, संतोस-दायिणि इमा तह गेह चिंते।। 5।।

लोक में जिस तरह मेघों पर आवरण होने पर भी सूर्य स्फुरित रहता है, उसी तरह आप भी बाह्य और आभ्यन्तर मल से मुक्त निर्मल श्रुत/उत्तम श्रुत में प्रविष्ट जगत् के एकमात्र धर्म को लेकर चलोगे जो सन्तोष दाई होगा, फिर भी गृह की ओर ध्यान देते तो हम लोगों को सुख का अनुभव होता।

तुम्हे वएण ण हु जोव्वण-जोग-भावो, बालो तुमं गिह-गणे हि रमेज्ज भासे।
माउत्त-सेव-पिदु-संग-सुधम्म-जुत्तो, अप्पं भवंतर-भवं च सुहारएज्जा।। 6।।

आप वय से यौवन योग भाव युक्त भी नहीं हो, आप बाल हो, इतने समझदार नहीं हो कि व्रत से जीवन को धन्य कर सको। आप मातृत्व युक्त हो। माता की सेवा और पिता के कार्य को धर्म समझें, इससे भव भवान्तर सुधार सकते हो।

जाणेसि णो जगद-रीदि-सुणीदि-सव्वं
धम्माणुसीलण-कदा मुणसे तुमं च।
गेहे गिहेज्ज पद-खुल्लग-चत्त तुम्हे
रामा रमेज्ज विजयं च पढेज्ज सम्मं।। 7।।

आप जगत् की रीति, सम्यक् नीति आदि को नहीं जानते हो। धर्मानुशीलन कब जान सकोगे। गृह में प्रवेश करो, क्षुल्लक पद छोड़ दो। आप रामा में रमण करो और अपने भाई विजय को अच्छी तरह पढ़ाओ।

जस्सिं च काल-सुउमाल इमो कुमारो
गेहेज्ज खुल्लग-पदं ण हु तत्थ अत्थि।
जाणेज्ज सो वि कडणीइ तदेव गच्छे
संरोहणं च णिय-सहेहि बुढार-गामं।। 8।।

जिस समय यह सुकुमाल कुमार, अरविन्द कुमार क्षुल्लक पद ले रहा था, उस समय वह विजय कटनी में था। ज्ञात होते ही अपने मित्रों के साथ बुढ़ार ग्राम की ओर अरविन्द को रोकने चल पड़ा।

सो आइरिय-सम्मदि-सागर-पाद-अग्गे
किच्चा णमोत्थु पवए तवसिं गुरुं च।
दिक्खा ण सम्म-इणमो विणु आण-अम्हे
गेहे हि वेस-वसणाहि कुणेज्ज सेवं।। 9।।

वह विजय आचार्य सन्मति सागर के चरणों में नमोऽस्तु करता, फिर तपस्वी गुरुराज को कहता- यह दीक्षा उचित नहीं, हम लोगों की आज्ञा बिना ठीक नहीं है। गृह में गृह वेश युक्त रहे और गुरुओं की सेवा करे यही श्रेष्ठ है हमारे लिए।

कोहादु तत्त-विजयो अदि-बाउलो वि
सूरिं पमत्त-वयणादु कहेदि सव्वं।
जालामुहि व्व मुह-जिब्भुगलंत-जाला
तत्तो वि सम्मदि-तवी वि पसंत-मुत्ती।। 10।।

विजय क्रोध से तप्त था, वह अति व्याकुल था, वह सूरी/आचार्य श्री को भी प्रमत्त वचनों में ही वार्तालाप करता है। वह वैसे ही जैसे ज्वालामुखी अपने मुख से ज्वाला/अंगार उगलती है, उसी तरह इसके मुख में स्थित जिह्वा ज्वाला उगलती रहती है, फिर भी तपस्वी आचार्य सन्मति सागर प्रशान्तमूर्ति ही बने रहते हैं।

क्रमश ....

मार्च माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
जन्म दिवस	१.३.१९४८	हटा (दमोह), श्रमण श्री विश्ववीर सागर जी मुनिराज
जन्म दिवस	३.३.१९४६	पिटोरिया (म.प्र.), श्रमण श्री विश्वदक्ष सागर जी मुनिराज
दीक्षा दिवस	३.३.२००९	श्रीगिरनारजी (गुजरात), ऐ. विश्व लोकेशसागर जी, एं. विश्वतीर्थ सागर जी, ऐ. विश्वमित्र सागर जी।
जन्म दिवस	६.३.१९८४	इन्दौर, श्रमण श्री आस्तिक्य सागर जी मुनिराज
जन्म दिवस	६.३.१९८४	इन्दौर, श्रमण श्री प्रणीत सागर जी मुनिराज
जन्म दिवस	७.३.१९५१	जबलपुर, श्रमण श्री अमृत सागर जी मुनिराज
दीक्षा दिवस	७.३.१९९५	श्रीगिरार अति. क्षेत्र, क्षु. श्री विश्वपूज्य सागर जी
जन्म दिवस	७.३.१९७०	बीना (म.प्र.), श्रमण श्री विहर्ष सागर जी मुनिराज
जन्म दिवस	८.३.१९५१	पाली (उ.प्र.), श्रमण श्री विश्वविद सागर जी मुनिराज
पुण्यतिथि	५.३.२०१४	खजुराहो (म.प्र.), श्रमणी आर्यिका विभालश्री माता जी
दीक्षा दिवस	८.३.२००९	श्री गिरनार जी (गुजरात), श्रमण श्री विदाम्बर सागरजी, श्रमण श्री विभास्वर सागर जी, श्रमण श्री विश्वलोकेश सागर जी, श्रमण विश्वतीर्थ सागर जी, श्रमण श्री विश्वमित्र सागर जी, श्रमण श्री विश्वास सागर जी।
दीक्षा दिवस	१०.३.२०११	श्री सम्मेद शिखर जी, श्रमण श्री प्रांजल सागर जी, श्रमण श्री संस्कार सागर जी।
दीक्षा दिवस	१०.३.२०११	बासंवाड़ा (राज), श्रमणी आ. विभालश्री माता जी
जन्म दिवस	१२.३.१९८४	डबरा (म.प्र.), श्रमण श्री अप्रमित सागर जी
पुण्य तिथि	१३.३.२०१७	सागर (म.प्र.), श्रमणी आ. विजय श्री माता जी
जन्म दिवस	१५.३.१९८५	टडा (दमोह), श्रमणी आ. विजित श्री माता जी
दीक्षा दिवस	१६.३.२०१५	श्रेयांसगिरि (म.प्र.), क्षु. विशान्ता श्री माता जी, क्षु. विरोचना श्री माता जी।
जन्म दिवस	१६.३.२०१५	सागर (म.प्र.), श्रमणी आ. विदक्षाश्री माता जी
जन्म दिवस	१७.३.२०१५	गयाजी, श्रमणी आर्यिका विकम्पा श्री माता जी
दीक्षा दिवस	१७.३.२०१५	ऊदगांव (म.प्र.), प.पू. आचार्यश्री महावीर कीर्ति जी महाराज
दीक्षा दिवस	१७.३.२०१५	करगुवां जी (झांसी), क्षु. श्री विश्वज्योति सागर जी
दीक्षा दिवस	१८.३.२०१४	छतरपुर (म.प्र.), क्षु. विहंसश्री माताजी
दीक्षा दिवस एवं पुण्य तिथि	१९.३.२०१४	छतरपुर (म.प्र.) श्रमणी आ. विहंसश्री माताजी
जन्म दिवस	२०.३.२०१४	छपारा (म.प्र.) श्रमणी आ. विनीतश्री माता जी
दीक्षा दिवस एवं पुण्य तिथि	२१.३.२०१४	श्रेयांसगिरि, श्रमणी आ. विशुभ्राश्री माताजी
जन्म दिवस	२२.३.१९६२	वंधाजी, श्रमण श्री प्रवीर सागर जी मुनिराज
जन्म दिवस	२५.३.१९८५	सागर (म.प्र.), श्रमण श्री आचरण सागर जी

जन्म दिवस	२६.३.१९९३	टीकमगढ़ (म.प्र.), श्रमण श्री
दीक्षा दिवस	२६.३.२०११	कोटा (राजस्थान) ऐ. श्री विचिन्त्य सागर जी
जन्म दिवस	२७.३.१९७५	पुरुलिया (पं. बंगाल) श्रमण श्री विश्रेयसागर जी
जन्म दिवस	२७.३.१९८६	झूमरी तलैया (झारखण्ड), श्रमण श्री प्रांजलसागर जी
पुण्य तिथि	२९.३.२०११	भीलवाड़ा (राजस्थान), श्रमण श्री विश्वशान्ति सागर जी
आचार्य पद	३१.३.२००७	औरंगाबाद (महा) प.पू. श्रमणाचार्य विशुद्धसागर जी, श्रमणाचार्य श्री विभव सागर जी, श्रमणाचार्य श्री विभद सागर जी।
जन्म दिवस	३१.३.१९८१	भिण्ड (म.प्र.), श्रमणी आ. विश्वासश्री माताजी।

चैत्र माह के व्रत कल्याणक महोत्सव

२ मार्च २०१८	चैत्र कृष्ण १	सोलहकारण व्रत पूर्ण
५ मार्च २०१८	चैत्र कृष्ण ४	श्री पार्श्वनाथ जी ज्ञान कल्याणक
६ मार्च २०१८	चैत्र कृष्ण ५	श्री चन्द्रप्रभु गर्भ
९ मार्च २०१८	चैत्र कृष्ण ८	अष्टमी व्रत
१० मार्च २०१८	चैत्र कृष्ण ९	श्री आदिनाथ जन्म-तप कल्याणक
१६ मार्च २०१८	चैत्र कृष्ण १४	चतुर्दशी व्रत
१७ मार्च २०१८	चैत्र कृष्ण ३०	श्री अनन्तनाथ जी ज्ञान-मोक्ष कल्याणक अरहनाथ जी मोक्ष कल्याणक
१८ मार्च २०१८	चैत्र शुक्ल १	श्री मल्लिनाथ गर्भ कल्याणक, विक्रम सम्वत २०७५
२० मार्च २०१८	चैत्र शुक्ल ३	श्री कुन्थनाथ जी ज्ञान कल्याणक
२१ मार्च २०१८	चैत्र शुक्ल ४	दशलक्षण व्रत प्रारंभ, श्री अजित नाथ जी मोक्ष कल्याणक
२३ मार्च २०१८	चैत्र शुक्ल ६	रोहिणी व्रत, श्री संभवनाथ जी मोक्ष कल्याणक
२५ मार्च २०१८	चैत्र शुक्ल ८	अष्टमी व्रत
२८ मार्च २०१८	चैत्र शुक्ल ११	श्री सुमतिनाथ जी जन्म, ज्ञान-मोक्ष कल्याणक
२९ मार्च २०१८	चैत्र शुक्ल १३	श्री महावीर स्वामी जन्म कल्याणक (जयन्ती) रत्नत्रय प्रारंभ
३० मार्च २०१८	चैत्र शुक्ल १४	चतुर्दशीव्रत
३० मार्च २०१८	चैत्र शुक्ल १५	रत्नत्रय व्रत पूर्ण श्री पदम प्रभु ज्ञान कल्याणक

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	**11000/-**	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	**5000/-**
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	**6000/-**	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	**2500/-**
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	**3000/-**	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	**1500/-**

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

समाचार

हिसार की धरा पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की अमीट छाप

हिसार हरियाणा की पावन धरा पर इतिहास में प्रथम बार दिगम्बर जैन धर्म बड़े आचार्य एवं इतने बड़े चतुर्विध संघ के पावन सान्निध्य में श्री मज्जिनेन्द्र मल्लिानाथ जिन विंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अभूत पूर्व धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। मुनि श्री विरंजन सागर जी एवं क्षुल्लक श्री विसौम्य सागर जी की प्रेरणा से आयोजित श्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में मुनि श्री विरंजन सागर जी एवं क्षुल्लक श्री विसौम्य सागर जी ने अपने परम आरध्य गुरुदेव प.पू. गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ४० पिच्छी के विशाल संघ को बुलाकर उनकी सान्निध्य में यह महामहोत्सव कराकर एक इतिहास रच दिया। हिसार का यह पंच कल्याणक गुरुवर के आने से महा पंचकल्याणक हो गया है। पूज्य गुरुदेव के चमत्कारी चरण जहाँ भी जाते हैं वहाँ समाज में एकता व संगठन के सूत्र प्रारंभ हो जाते है। पू. गुरुदेव दुनियां के संतों में वह निराले ही संत है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारम्भ दिनांक ९ नवम्बर को प्रात: महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र. श्री जयनिशांतजी टीकमगढ़ द्वारा विधि पूर्वक देवाज्ञा गुरु आज्ञा प्रतिष्ठाचार्य निमंत्रण घट यात्रा के साथ श्री जी की शोभायात्रा से हुआ। शोभायात्रा का भव्य जुलूस पुराना गर्वमेन्ट कॉलेज मैदान बना मिथिला नगरी में पहुँचा जहाँ श्री जयप्रसाद जी जैन एडवो. की अध्यक्षता में श्री एस.के.जैन श्रीमती सविता जैन द्वारा ध्वजा रोहण किया गया। पाण्डाल एवं मंच का उद्घाटन श्री पुष्पेन्द्र सेठी श्रीमती प्रीति सेठी द्वारा किया गया। वेदी शुद्धि सकलीकरण इन्द्र प्रतिष्ठा मण्डप प्रतिष्ठा के पश्चात् नन्दी विधान योग मण्डल विधान सम्पन्न हुआ। प्रतिष्ठा महोत्सव का मुख्य कलश श्री मती एवं श्री भूषण कुमार जैन द्वारा स्थापित किया गया। सांय ४.३० बजे प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ४१ पिच्छि के विशाल चतुर्विध संघ का हिसार के इतिहास में प्रथमबार आगमन हुआ। जैन समाज व शहर की धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं ने सभी संतों का पुष्प वृष्टि कर भव्य स्वागत किया। पी.एल.ए मार्केट के मैदान में मुनिश्री विरंजन सागर जी का अपने उपकारी गुरु श्री विराग सागर जी से ऐतिहासिक एवं यादगार मिलन हुआ। जिसे देख हजारों श्रद्धालुगण भाव विभोर हो गये। मुनिश्री विरंजन सागर जी, पूज्य गुरुदेव की चरण वंदना कर तीन प्रदक्षिणा दे आचार्य भक्ति की, पूज्य गुरुदेव ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए अपने गले से लगाया। पंचकल्याण प्रतिष्ठा स्थल मिथिला पूरी में प.पू. गणाचार्य श्री ने सभी को अपना अमृतमयी प्रवन एवं मंगल आशीष दिया। रात्रि में इन्द्र दरवार कुबेर द्वारा रत्नवृष्टि आता के सोलह स्वप्न आदि गर्भ कल्याणक की पूर्वाध क्रियायें सम्पन्न हुई। भारत विकास परिषद, वनवासी कल्याण आश्रम व विरुपतिधाम आदि संस्थाओं ने श्री फल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

दिनांक १० नवम्बर को प्रात: मंत्राराधना नित्य पूजा गर्भ कल्याणक की पूजा प.पू. गणाचार्य श्री का पादप्रक्षालन एवं पूजन के पश्चात् पू. गणाचार्य श्री ने अपने मंगल प्रवचन में भगवान मल्लिानाथ के गर्भावतार से अनेक शिक्षा देते हुए। माँ शब्द को सुन्दर विवेचन किया तथा महा पाप ओर अन्याय से बचने के लिये भ्रूण हत्या न करने, न कराने और नकरने वालों की अनुमोदना करने का दोनों हाथ उठवाकर संकल्प कराया। साथ ही नित्य भगवान के दर्शन अभिषेक पूजन का भी संकल्प कराया। महोत्सव में कालीदास धाम के महंत श्री कृष्णानन्द जी परमहंस पधारे। जिन्होंने पू. गणाचार्य श्री को सष्टांग नमस्कार कर श्री फल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। आयोजन समिति द्वारा उनका सम्मान किया गया। श्री मनोज शर्मा दिल्ली द्वारा देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धान पर नाटक का मंचन किया गया। प्रतिष्ठा महोत्सव में भगवान मल्लिनाथ के माता-पिता महारानी प्रजावती एवं महाराजा कुम्भ बनने का सौभाग्य श्री मती उर्मिला जैन श्री धर्मपाल जैन को प्राप्त हुआ। महायज्ञनायक श्री शशि कान्त जैन श्रीमती कमलेश जैन यज्ञनायक श्री पवन जैन श्रीमती शीला जैन सौधर्म इन्द्र श्री विनोद

जैन, श्रीमती प्रेमलता जैन, कुबेर इन्द्र, श्री सतीश जैन मधुजैन बने। श्रीमती शीला देवी द्वारा दीक्षा हेतु श्रीफल भेंट किया गया।

११ नवम्बर को तीर्थंकर बालक मल्लिकुमार का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। नगर में बधाईयां भव्य शोभायात्रा पाण्डुक शिला पर सौधर्म इन्द्र आदि देवों द्वारा १००८ कलशों से अभिषेक किया गया। नगर में मिष्ठान वितरण हुआ। श्री मनोज शर्मा द्वारा वेशभूषण कुलभूषण के वैराग्य का मंचन किया गया। श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्रीमाती एवं मुनिश्री विरंजनसागर जी द्वारा पू. गुरुदेव के प्रति अपनी विनयांजली अर्पित की गई। इस अवसर पर पू. गणाचार्य श्री ने अपने मंगल प्रवचन में सन्तान के जन्म देने के साथ अच्छे संस्कार देने व अपने माता-पिता के लिये अपशब्द नहीं कहने का संकल्प कराया। दीक्षार्थी श्रीमती श्रीलादेवी (श्री विरंजन सागर जी महाराज की गृहस्थावस्था की माँ) की विनोली निकाली गई।

दि. १२ नवम्बर को तप कल्याणक में युवराज मल्लिकुमार को शाही की साज सज्जा आदि देख वैराग्य हुआ। प.पू. गणाचार्य श्री ने अपने मंगलमयी प्रवचनों में अच्छे संस्कारों के लिये लौकिक शिक्षा के साथ नैतिक व्यवहारिक शिक्षा प्राप्त करने का उपदेश देते हुए। जीवन में मांस, अण्डा, शराब आदि अनुपसेव्य पदार्थों का सेवन नहीं करने का संकल्प कराया। सांय काल में दीक्षार्थी श्रीमती शीलादेवी की गोदभराई सम्पन्न हुई। दिल्ली के विभिन्न नगरों से आये अनेकों श्रद्धालुओं ने प.पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

दि. १३ नवम्बर को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा युवराज मल्लिनाथ को दीक्षा के संस्कारों के साथ ही श्रीमती शीला देवी को क्षुल्लिका दीक्षा देकर क्षुल्लिका विशील श्री माताजी के नामकरण संस्कार किये। दीक्षा के इस अवसर पर पूर्व मंत्री श्रीमती सावित्री जिन्दल एवं मेयर श्रीमती शकुन्तला राजलीवाला ने प.पू. गणाचार्य श्री के चरणों में श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। मासिक पत्रिका विरागवाणी का विमोचन किया गया।

दि. १४ नवम्बर को प्रात: काल की बेला में महामुनि श्री मल्लिनाथ श्री की आहार चर्या सम्पन्न हुई। पू. गणाचार्य श्री द्वारा अपने प्रवचनों में आहार दान की महिमा व फलों की व्याख्यान दिया। तत्पश्चात् प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा विधि नायक श्री मल्लिनाथ जी के जिन बिम्ब सहित सभी जिन विषयों पर केवल ज्ञान के संस्कार किये गये। एवं सूरी मंत्र द्वारा जिन प्रतिमाओं को प्रतिष्ठित किया। भगवान के केवल ज्ञान होने पर कुबेर द्वारा बनाये भव्य समवशरण में केवली मल्लिनाथ भगवान के प्रमुख गणधर के रूप में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने चतुर्विध संघ के साथ विराजमान होकर भगवान की दिव्य देशना का सार भव्य जीवों के कल्याणर्थ अपनी अमृतमयी वाणी से व्याख्यान किया। साथ ही किसी को न मारने के विचार नहीं लायेगे व ना ही आत्म हत्या करेंगे। मांस, अण्डा, शराब का सेवन नहीं करेंगे का संकल्प उपस्थित जन सैलाव से दोनों हाथ उठाकर करवाया। इस अवसर पर जी.टी.वी. के एम.डी. सांसद श्री सुभाष चन्द जी द्वारा प.पू. गणाचार्य श्री का पादप्रक्षालन कर श्रीफल भेंट किया गया। व्यापार मण्डल के प्रधान श्री बजरंग दास जी एवं हिसार के सासंद श्री दुष्यन्त जी चौटाला पूर्व मंत्री श्री हरी सिंह जी सैनी, श्री देव नारंग जी, श्री अनूप जी विधायक, श्री राजेन्द्र जी जिलाध्यक्ष, श्री विश्नोई जी एडवो. आदि ने भी श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। आयोजन समिति ने सभी का सम्मान किया।

नसिया मंदिर जी की भी तीन मूर्तिया की प्रतिष्ठा की गई। दिनांक १५ नवम्बर को भगवान मल्लिनाथ ने श्रेणी आरोहण कर एवं योग निरोध कर सम्मेद शिखर के संबल कूट से निर्वाण प्राप्त किया। तत्पश्चात् पंचकल्याणक समिति ने सभी कार्य कर्ताओं, संस्थाओं का सम्मान किया गया। प्रतिष्ठित सभी जिनविम्बों की शोभा यात्रा छोटे जिन मंदिर पहुंची जहाँ प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में सभी जिन बिम्बों को नवीन वैदिका जी में विराजमान किया गया तथा शिखर पर कलशारोहण किया गया। हिसार में प्रथम बार असीम धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न

हुए ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में मुनि श्री विरंजन सागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्री विसौम्य सागर जी जैन एवं जैनेतर समाज एक सूत्र में बांधने के इस महान कार्य के लिये प.पू. गणाचार्य श्री ने उन्हें खूब खूब आशीर्वाद दिया।

प.पू. गुरुदेव के सान्निध्य में हुआ यह पंचकल्याणक हिसार की धरा पर अपनी अमिट छाप छोड गया है। इसकी स्मृति स्वरूप नागौरी गेंट पर विराग वाटिका एवं विराग वाचनालय की स्थापना की गई।

विपिन जैन, हिसार

केन्या में जैन दर्शन पर सेमीनार सम्पन्न

केन्या में दिनांक १३,१४,१५ दिसम्बर २०१७ को प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज की सुशिष्या क्षुल्लिका विस्मिताश्री माताजी एवं ज्वाला मालिनी मंदिर कर्नाटक के भट्टारक श्री लक्ष्मी सेन जी के सान्निध्य में श्री भारत वर्षीय दिगम्बर जैन महा सभा द्वारा किसिभू यूनिवर्सिटी केन्या में जैन दर्शन एवं अफ्रीकी दर्शन पर त्रिदिवसीय सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार में भारत तथा इथोपिया तथा केन्या के भी अति प्रतिष्ठित विद्वानों व किसिभू यूनिवर्सिटी की डीन एवं वाइस चांसलर ने भाग लिया। जैन दर्शन एवं अफ्रीकन कल्चर पर आयोजित इस सेमीनार में पू. क्षुल्लिका विस्मिता श्री माताजी ने कर्मवाद पर व्यापक अभिव्यक्ति दी। जीवन में कर्म को ही महत्व पूर्ण बताते हुए उन्होंने बताया कि जैन दर्शन में जो कर्म सिद्धान्त का वर्णन है वह अन्यत्र कहीं नहीं है। विविध तार्किक उदाहरणों से जैन कर्म सिद्धान्त को बहुत ही सरलता एवं आधुनिक तरीकों से समझाया। सात तत्व आठ कर्म लेश्या पुरुषार्थ पुनर्जन कर्मबन्ध प्रक्रिया आदि अनेक पहलुओं से अद्भूत तरीके से दुनियाँ के सामने जैन दर्शन के सिद्धान्त को रखा। सेमीनार की अध्यक्षता श्री निर्मल कुमार जी सेठी अध्यक्ष भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की गई।

श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने नेतृत्व में केन्या गये भारतीय विद्वानों ने केन्या के नेरोबी शहर से कुछ दूरी पर एनजोरा तथा पेरेडा गुफाए का अवलोकन कर भारत के पुरातत्व वक्ताओं की टीम उनमें जैनदर्शन से मिलते जुलते लक्षण प्राप्त किये। जिससे सिद्ध होता है कि विगत हजारों वर्ष पूर्व यहां जैन दर्शन था। अहिंसा शाकाहार व उपवास को अफ्रीकी दर्शन में विशेष स्थान प्राप्त है। केन्या यूनीवर्सिटी वाइस चांसलर एवं डीन ने अपने अभिभाषण में केन्या में जैन दर्शन के अस्तित्व होने के स्पष्ट संकेत देते हुए। महासभा के इस मिशन में भरपूर सहयोग करने को कहा।

ज्ञातव्य है कि गतवर्ष भी प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज को आज्ञा से क्षुल्लिका विस्मिता श्री माता जी श्री लंका में सेमीनार में भाग लेने गयी थी। जहाँ उनके द्वारा जैनधर्म की अभूतपूर्व प्रभावना की गई।

पियूष जैन, कविनगर

त्रिलोक तीर्थधाम में प.पू. गणाचार्य श्री

दि. २४ दिसम्बर २०१७ को त्रिलोक तीर्थधाम, बड़ागांव जिला- वागपत (उ.प्र.) की पावन धरा पर देश के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के संघाधिपति पू.प. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ८० पिच्छि के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। ऐलाचार्य श्री त्रिलोकभूषण जी, मुनि श्री वारिषेण जी, मुनि श्री तत्वभूषण जी, गणिनी आर्यिका मुक्ति भूषण माता जी, आर्यिका अनुभूतिभूषण माता जी, आर्यिका चन्द्रमति माताजी, आर्यिका दृष्टिभूषण माताजी, आर्यिका भाग्यमति माताजी, क्षुल्लक श्री रचित सागर जी आदि एवं त्रिलोक तीर्थ धाम कमेटी के अध्यक्ष श्री गजराज जी गंगवाल सहित पदाधिकारियों तथा काफी संख्या में उपस्थित श्रावकों ने भव्य अगवानी की। प.पू. गणाचार्य श्री ससंघ ने क्षेत्र के सभी मंदिरों की वंदना की। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के स्वाध्याय एवं तत्व चर्चा में सभी त्यागीवृद्ध उपस्थित होते थे। दि. २७ दिसम्बर २०१७ को प.पू. गणाचार्य ससंघ का मंगल विहार बडौत के लिये होगा जहाँ धर्मप्रभावना के अनेक आयोजनों के साथ नववर्ष २०१८ पर भी विशेष आयोजन यिका जायेगा।

तीर्थ क्षेत्र विरागशरणं का हुआ शिलान्यास–२४ दिसम्बर २०१७ को खेकडा में क्षुल्लक श्री विदेहसागर जी की प्रेरणा से प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज एवं मुनि श्री विहर्ष सागर जी मुनिराज ससंघ ८० पिच्छी के पावन सान्निध्य में तीर्थ क्षेत्र विराग शरणं हेतु त्रिलोक तीर्थ धर्म धाम के अध्यक्ष श्री गजराज जी गंगवाल द्वारा शिलान्यास किया गया। श्री श्रेयांस जी खेकडा ने पूर्व में हुई गल्तियों की क्षमा याचना के साथ प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के चरणों में श्रीफल अर्पित कर आगामी अष्टान्हिका पर्व में होने वाले सिद्धचक्र विधान में सान्निध्यता हेतु निवेदन किया। तथा खेकडा में निर्माण होने जा रहे तीर्थक्षेत्र विराग शरणं को बहुत बड़ा तीर्थ बनाने की घोषणा की।

सागर जैन, लक्ष्मी नगर शाहदरा, दिल्ली

सावर (राज.) में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भव्यता से हुई सम्पन्न

२१ फरवरी २०१८ चन्द्रगिरि सावर (राजस्थान) में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ (५७ पिच्छी) के सत्यप्रेरणा एवं पावन सान्निध्य में तथा गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माता जी के निर्देशन में १६ फरवरी से २१ फरवरी २०१८ तक ऐतिहासिक विशाल २१फुट श्री चन्द्रप्रभु जिनबिम्ब का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

भव्य अगवानी– दिनांक १५ फरवरी को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ की भव्य अगवानी गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ ने पू. गुरुदेव का पादप्रक्षालन कर तीन प्रदक्षिणा व आचार्य वंदना की। अगवानी में दरवार की भूपेन्द्र सिंह जी, प्रधान श्री अनिल जी जैन, चेयरमेन न.पा. केकड़ी, श्री रंगलाल जी सरपंच सावर, पंचायत भी उपस्थित रहे। गर्भ कल्याणक के अवसर पर प.पू. गणाचार्य श्री ने अपने अमृतमयी प्रवचन में गर्भावस्था के संस्कारों से भावी संतान को संस्कार देने तथा भ्रूण हत्या न करने न कराने का हाथ उठाकर संकल्प कराया।

जन्म कल्याण पर १८फरवरी को तीर्थंकर बालक आदिकुमार की भव्य शोभा यात्रा में २१ हाथी, २ ऊंट, ४ घोड़े एवं अनेक वैण्ड व दिव्य घोष के साथ चन्द्रगिरि पर स्थित पांडुक शिला पर अभिषेक किया गया। पूरे नगर में मिष्ठान वितरण किया गया। महोत्सव में सांसद श्री रघुशर्मा ने प.पू. गुरुदेव के प्रति अपनी विनयांजली अर्पित करते हुए सावर में अहिंसा सर्किल व कीर्ति स्तम्भ बनाने हेतु सांसद निधि से १० लाख राशि की घोषणा की। तप कल्याणक के अवसर पर सावर मेरुकला की पूर्व रियासत के राज परिवार के श्री भूपेन्द्र सिहं जी, श्री योगेन्द्र सिंह जी, श्री चन्द्र सिंह जी, उपस्थित हुए। पू. गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया। पू. गणाचार्य श्री ने अपने अमृतमयी प्रवचनों में १. किसी जीव को जानकर नहीं मारना, २. मांस अण्डा शराब का सेवन नहीं करेगे, ३. भ्रूण हत्या नहीं करेगे न करायेगे। ४. बेटी बचाओ, पढ़ाओ और संस्कार बनाओ।५. स्वच्छता के लिये दोनों हाथ उठाकर संकल्प कराया। दिनांक २० फरवरी प.पू. गुरुदेव का क्षुल्लक दीक्षा दिवस मनाया गया। भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति होने समवशरण गणधर परमेष्ठी के रूप में बैठकर पू. गुरुदेव ने भगवान देशना का सार भव्य जीवों के कल्याण सुनाई। दि. २१ फरवरी को भगवान के मोक्ष कल्याणक को सभी प्रतिष्ठित जिनबिंबों को चन्द्रगिरि पर विराजमान किया गया। चन्द्र गिरि पर वृक्षारोपण कर विराग बाटिका बनाने का निर्णय लिया गया। पंच कल्याणक प्रतिष्ठा में श्रीमती प्रेमदेवी, श्री माणक चन्द्र जी गोयल को माता पिता, श्री पारस चन्द्र जी, श्रीमती गटकी देवी जैन को सौधर्म इन्द्र इन्द्राणी, श्री मनोज कुमार जी, श्रीमती प्रियदर्शनी मित्तल को धनपति कुबेर, श्री संदीप श्रीमती सपना गनेरिया को यज्ञ नायक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री कमलकुमार जी कमलांकर भोपाल प्रतिष्ठाचार्य श्री अजित जी शास्त्री रायपुर, श्री राजेश जी राज भोपाल, श्री माणक चंद जी गोयल, सह प्रतिष्ठाचार्य रहे। संगीतकार श्री राजीव कुमार एण्ड पार्टी भोपाल रहे।

शिखर चन्द्र जैन, सावर

विराग वर्ग पहेली 27

उदाहरण – र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे–विराग

ब	ना	र	स	अ	अ	णिं	दा
म	न	मे	है	हि	पा	र	स
ना	थ	व	च	च्क्ष	नो	मे	पा
र	ने	च	क	त्र	जी	र	क्ष
श्व	गि	स	ना	र	थ	म	रि
ले	जी	ना	ख	व	हु	न	न्त
व	मे	शि	नै	आ	अ	ब	अ
च	तो	है	बि	जौ	लि	या	पा

विराग वर्ग पहेली 26 के उत्तर

(1) तिरेपन
(2) कापोत
(3) ऊन
(4) पीठ
(5) काला
(6) तिगुना
(7) साधारण
(8) विपरीत
(9) कीलक
(10) कुल

नोट– (1) इसमें आपको १० पारसनाथ भगवान के ही क्षेत्र के नाम ढूढ़ने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ ☐ डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....